

अध्याय – 4

मेहरून्सिया परवेज़ : कथा साहित्य में निम्नवर्गीय नारी जीवन

निम्नवर्ग के अंतर्गत किसी भी धर्म, जाति, क्षेत्र, भाषा और स्थान की वे स्त्रियाँ शामिल हैं जिन्हें जीवन की प्राथमिक सुविधाएँ प्राप्त नहीं होती हैं। छोटे-छोटे किसान, मजदूर, कामगार, दलित, पिछड़े एवं झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाले लोग जिन्हें रोटी कपड़ा और आवास तीनों एक साथ नहीं मिल पाता। रोटी है तो कपड़ा नहीं, कपड़ा है तो मकान नहीं। ऐसी स्थिति में स्त्रियों को अपना और अपने परिवार का पालन-पोषण करने के लिए घर के बाहर जाकर काम करना पड़ता है। घर-घर जाकर झाड़ू पोछा तथा फैक्ट्रियों में जाकर मजदूरी करनी पड़ती है। काम पर देरी पर पहुँचने पर डांट-फटकार सुननी पड़ती है। ऐसी स्त्रियाँ जो उच्च या उच्च मध्यवर्ग के घरों में काम करने जाती हैं। उन्हें बीमार पड़ने का भी कोई अधिकार नहीं होता। ये स्त्रियाँ तब तक काम करती हैं, जब तक बीमारी इन को पूरी तरह जकड़ नाले। इन्हें स्वास्थ्य लाभ की कोई सुविधा नहीं होती। आर्थिक विपन्नता के कारण न तो ये खुद ही स्वस्थ रहती हैं और ना ही स्वस्थ बच्चों को जन्म दे पाती हैं। इनके बच्चों का जन्म अधिकतर अनपढ़ दाइयों द्वारा ही करवा दिया जाता है। जिसके कारण कभी-कभी तो ये प्रसव के दौरान होने वाली भयानक बीमारियों से भी पीड़ित हो जाती हैं, और अकाल मृत्यु का शिकार भी हो जाती हैं। कभी ये हिम्मत कर अस्पताल भी जाती है तो ऐसे सरकारी अस्पताल में जाती हैं, जो अस्वच्छ, बदबूदार होता है और वाजिब स्वास्थ्य सेवाएँ नहीं मिल पाती। इस कारण से भी समय से पहले मृत्यु को गले लगा लेती है। पौष्टिक आहार ना मिलने से स्त्रियाँ अनीमिया रोग से पीड़ित हो जाती हैं। मातृ मृत्यु भी इस वर्ग की स्त्रियों में अधिक देखने को मिलती हैं। आर्थिक विवशता वश कभी-कभी इन्हें देह व्यापार तक करना पड़ जाता है। दुर्भाग्य वश ये महिलायें मालिकों की कुदृष्टि का शिकार भी बन जाती हैं।

निम्नवर्ग की स्त्रियों में पर्दा प्रथा जैसे रीति-रिवाज इनमें देखने को नहीं मिलते हैं। ये मध्यवर्गीय स्त्रियों से अधिक स्वच्छंद जीवन जीती हैं। स्वभाव से सीधी-सरल तथा प्रकृति से जुड़ी रहती हैं। आदिवासी निम्नवर्गीय स्त्रियों का संबंध प्रकृत से अधिक घनिष्ठ होता है। ये वनवासी निम्नवर्गीय स्त्रियाँ बहुत परिश्रमी होती हैं, किंतु जब से औद्योगिकरण का इनके जीवन कुप्रवेश हुआ है। तब से इन्हें तथा इनके परिवारों को विस्थापन की समस्या से जूझना पड़ रहा है। विस्थापन के भयंकर परिणामों के कारण कभी-कभी वेश्यावृत्ति के जाल में भी फँस जाती हैं, और अपना जीवन बरबाद कर लेती हैं।

इस वर्ग की स्त्रियाँ अधिकतर अशिक्षित होती हैं। यदि इनमें से कोई लड़की पढ़-लिख भी जाती है तो उनका ज्ञान केवल प्राथमिक जरूरतों के बारे में सोचते-विचारते ही समाप्त हो जाता है। काम धंधे के लिए सुबह जल्दी घर से निकल जाती हैं और देर रात तक घर में वापस आती हैं। फलस्वरूप इनके बच्चे माँ के प्यार से वंचित रह जाते हैं। उनके बच्चे भी स्कूलों में प्रवेश नहीं ले पाते हैं और जिनका प्रवेश हो भी जाता है वह भी अक्सर स्कूल में अनुपस्थित ही रहते हैं, कई बच्चे बीच में पढ़ाई छोड़ देते हैं, उम्र बढ़ने के साथ-साथ उनके कुव्यसनों को अपना लेते हैं। अशिक्षा इस वर्ग की गंभीर समस्या बनकर उभरती है और अनेक प्रकार के नशे के सेवन करने लगते हैं। इन स्त्रियों के पति ज्यादातर शराबी, जुवाड़ी और गलत संगत में पड़ जाते हैं जो शराब के नशे में धुत होकर इनके साथ मारपीट, गाली गलौज भी करते हैं और इनसे इनकी कमाई भी हथिया लेते हैं।

इस वर्ग की महिलाएँ छोटे-छोटे काम जैसे कटाई, बुनाई, सिलाई, छपाई, कुटाई और सफाई आदि से जुड़ी होती हैं। जिन्हें सरकारी आँकड़ों में कामगारों के कोटी में सम्मिलित नहीं किया जाता। इनके काम के दरमियान अगर इनके ऊपर कोई अत्याचार भी होता है, तो इनकी सुनवाई के लिए न कोई यूनियन है न ही कोई संगठन है। जो इनके विरोध को सरकार के समक्ष पहुँचा सके। इसी कारण इनके कार्य तिरस्कृत माने जाते हैं। इन्हें लोक लाज का कोई डर-भय

नहीं होता। लड़की और लड़के का फर्क देखने को नहीं मिलता। इनमें कन्या भ्रूण हत्या की समस्या भी नहीं होती। विवाह अपनी ही जाति में होना भी अनिवार्य नहीं होता। ये स्त्रियाँ किसी कारण वश पति द्वारा छोड़ दी जाती हैं तो पुनर्विवाह में कोई कठिनाई भी नहीं होती। विधवा विवाह भी सरल सहजता पूर्वक हो जाता है लेकिन इस वर्ग में बाल-विवाह की समस्या गंभीर है जिसके कारण जनसंख्या वृद्धि में इस वर्ग का बहुत बड़ा योगदान रहा है। इस वर्ग की अधिकांश स्त्रियाँ कामकाजी होती हैं, निम्नवर्ग की महिलाओं को घर के बाहर दोहरी कठिनाइयों से जूझना पड़ता है। इस प्रतिकूल परिस्थितियों में हमें निराश होने की आवश्यकता नहीं। कुछ-कुछ जागरूकता अब इनमें भी देखने को मिलती है। शिक्षा के प्रचार-प्रसार के कारण अब निम्न वर्ग के लोग भी पढ़ाई के महत्व को समझ कर पढ़ाई में रुचि लेने लगे हैं। स्त्रियों में भी चेतना के सूर फूटने लगे हैं। इस प्रकार कुछ जागरूक महिलाएँ पुरुष तथा सरकार मिलकर इस वर्ग की स्त्रियों के उत्थान के लिए प्रयास करें तो उनके जीवन में भी सकारात्मक सुधार हो सकता है।

मेहरुन्निसा परवेज़ के कथा साहित्य में निम्न वर्गीय जीवन की विगतगत चर्चा हम विस्तार से आगे करेंगे।

उसका घर

'उसका घर' उपन्यास में लेखिका ने निम्नवर्गीय नारी जीवन के संघर्ष को प्रस्तुत किया है। सोफिया और एलमा की माँ आदि निम्नवर्ग से संबंधित पात्र हैं। एलमा की माँ एक निम्नवर्गीय गरीब परिवार से थी एलमा को माँ की याद आते ही आन्टी की बताई हर बात याद आने लगती है। आन्टी कहती थी "उसे जब दमा उठता था तो वह अकबकाई-सी मछली की तरह तड़पती थी, उसकी बड़ी-बड़ी आंखें फट-सी जाती थीं। वह बहुत गरीब घर की लड़की थी, उसने बचपन बहुत ही कठिन वातावरण में बिताया था। उसकी माँ नहीं थी, उसकी दादी ने उसे पाला था। उसकी दादी उससे गोदडियाँ सिलवाया करती और झटके का कटा गोश्त बेचने तीन मील भेजती थी, जहाँ कुछ अंग्रेज रहते थे जो रोज गोश्त खरीदते थे। उस समय गोश्त की कोई अलग दुकान

इस इलाके में नहीं थी। उसकी दादी कुछ जानवरो को मारकर बेचती थी,"¹ घर खर्च चलाने के लिए खाली समय में दोनों घर-घर जाकर गोदडियां सिला करती थीं। दादी ने घर में मुर्गियां भी पाल रखी थी, दादी के कहने पर वह घर-घर जाकर अंडे पहुंचाने का काम करती थी, मजाल है कि कभी एकअंडे भी चटका तो दादी उसे बेत से प्रताड़ित करती थीं, और भेड़ोवाले कोठे में बंद कर देती। एक दिन वह हमारे घर अंडे पहुंचाने आई थी उसकी खूबसूरती देख भाई उसे पसंद करने लगे। वह रोज अंडे देने आती लेकिन अंडे देकर डर के भाग जाती, यहां तक कि कभी-कभी वह पैसे भी नहीं लेती और घर जाकर दादी से मार खानी पड़ती थी। भाई उससे रोज बात करने की कोशिश करता पर वह वहाँ रुकती ही नहीं, जब भाई ने बात ब्याह की उठाई तो सब अचंभित रह गए। यहाँ तक कि उसकी दादी भी भौंचक्की रह गई कि "जो लड़की जरा-सा मांस पहुंचाने मिलों का बीहड़ रास्ता तय करती है, क्या वह इतने बड़े घर की मालकिन बनेगी!"²

दादी की घबराहट वर्ग भेद के दो वर्गों की विषमता के कारण है जो लोग कभी उस घर में अंडे देने आने में भी डरते थे उस घर से रिश्ता आये तो यह आश्चर्य की ही बात होगी। दादी को लगता है कि उसने बाहर वालों से उसकी शिकायत की, इसलिए वह लोग रिश्ता मांग रहे हैं। इसलिए उसे खूब मारती है और ब्याह के लिए मना कर देती है।

अब वह उसे छुपाकर रखने लगती है क्योंकि उसकी बुढ़ापे का एकमात्र सहारा थी। जब वह बाजार जाती तो उसे भेड़ों वाले घर में ईंटों के पीछे छुपाकर जाती। भाई उसकी जासूसी करता रहता और घर पर आकर हस-हसकर सब बताता था। भाई ने गोश्त पहुंचाने के लिए एक घोड़ा दादी को दिया तब वह ब्याह के लिए मान जाती है। "वह इतने बड़े घर की एकलौती बहू थी पर सहमी-सहमी रहती। कोई घर पर आता तो घबराई सी किन्ही कमरों में मंडराती रहती। कोई जरा-सा कड़ा शब्द बोल देता तो घंटों कमरों में दुबकी पड़ी रहती। नौकरों से भी वह डरती थी और नौकर पीठ-पीछे उसकी हंसी उड़ाया करते थे।"³

यहाँ लेखिका ने दो वर्गों की विषमता को प्रस्तुत किया है उसे किसी प्रकार की तकलीफ ना होते हुए भी वह घर में डरी-डरी रहती थी। निम्नवर्ग पर उच्च व मध्यवर्ग का इतना प्रभाव होता है, कि वह उच्च या मध्यवर्ग के परिवार की सदस्य बन कर भी अपने वर्गीय चेतना से मुक्त नहीं हो पाती। यहाँ तक कि वह उस घर के नौकर से भी डरी सहमी रहती है।

इस उपन्यास के अंतर्गत लेखिका ने निम्नवर्गीय आदिवासी स्त्रियों के दैनिक जीवन के संघर्ष की जगह जगह झांकियाँ प्रस्तुत की है। "आदिवासी औरतें टोकनों में तरह-तरह के चावल लेकर जगदलपुर की सड़कों पर बेचती घूमती हैं। यह लोग अभी भी लोहे की पतली चद्दर से बनी पाइल, सोली में चावल आदि बेचती हैं। पुलिसवालों ने बाज़ार में कड़ियों की पायली और सोली जब्त कर ली थी और किलों में चावल बेचने की सख्ती करते थे पर ये अनपढ़ लोग किलो का हिसाब क्या जानें ? एक पायली दो सेर की और एक सोली आधा सेर की होती है।"⁴ यहां के लोगों का अधिकतर धंधा चावल और चऊड़ा बेचने का ही था इसी से इनकी रोजी-रोटी चलती थी। ये लोग कावड़ और टोकनो में चावल, चिऊड़ा और सब्जियां बेचते नज़र आते हैं।

'ऐलमा' की मुलाकात सोफिया से होती है सोफिया एक गरीब घर की लड़की है। सोफिया का पति विकलांग है। ऐलमा - "उसे देखते ही वह सहम गई और उसे आश्चर्य हुआ, सोफिया इतने धिनौने पति को सहन कैसे करती है ?"⁵ दोनों पहली मुलाकात में अच्छी सहेलियां बन जाती हैं और सोफिया से मिलकर ऐलमा को अंदाजा हो गया था कि "सोफिया कहीं से टूटी है और कहीं से जुड़ी हैं, पर वह पता नहीं लगा पायी कि वह कहां से टूटी है और कहां से जुड़ी है।"⁶

ऐलमा, सोफिया से उसके विगत जीवन के बारे में पूछती है, और वह बताती हैं कि वह एक रंजन नामक अच्छे परिवार के लड़के को पसंद करती थी। मैं घर-घर बच्चे खिलाने जाती थी और मां कपड़े सिला करती थी। मैं रंजन के घर सिले हुए कपड़े देने जाती थी। एक दिन हम दोनों पकड़े गये, लेकिन "जिस दिन हम पकड़े गए उस दिन हमें पता ही नहीं चला कि हमारी चोरी पकड़ी गई हैं, पर जब अचानक दूसरे दिन रंजन को शिमला मामा के पास भेज दिया गया तब मेरा

माथा ठनका । पर कर कुछ सकते नहीं थे ! रंजन शिमला चला गया और मैंने यौवन की पहली हार को बहुत ही टूटे मन से स्वीकार कर लिया ।"⁷ मैं जहां बच्चे खिलाने जाती थी वहां से भी मुझे निकाल दिया गया था बस माँ की सिलाई से ही घर का खर्चा चलता था । "मैंने बचपन में गरीबी के बहुत से नंगे रूप देखे थे । मैंने कभी इश्वर के रूप को नहीं जाना था । घर में तो बस सुबह से शाम तक रोटी के लिए खींचातानी होती थी । शायद यह हर एक गरीब घर की विवशता है ।"⁸ ऐलमा उससे फिर पूछती है कि तुमने जॉन जैसे व्यक्ति से शादी कैसे की ? सोफिया कहती है कि जॉन मेरे पड़ोस में रहता था उसके लंगड़े पैर और थोथे शरीर के कारण उसे कोई पसंद नहीं करता था । उसकी सौतेली माँ उससे बेहद घृणा करती थी, और हमेशा प्रताड़ित भी करती थी । वह घर के बाहर टूटी खटिया पर बैठा रहता था, जब मैं वहां से गुजरती तो मुझे निगल जाने वाली निगाहों से देखता था । उसी समय उसकी शादी भी हुई थी, लेकिन इसके चेहरे को लड़की ने छुपाया गया था पर लड़की ने पहली रात को ही उसका चेहरा देखते ही मुंह पर थप्पड़ जड़ दिया और भूख हड़ताल करके अपने भाई को बुलाकर घर छोड़कर चली गई ।

सोफिया यहां निम्नवर्ग से जुड़ी हुई है । इसमें नारी आर्थिक विपन्नता से जूझने के लिए, अपने आपकी भी बली चढ़ा देते हुए नजर आती हैं । सोफिया गरीब परिवार की होने की वजह से वह गरीबी से अधिक ग्रस्त है, इसलिए उसे गरीबी से बाहर निकलने के लिए अपने तन तक का सौदा करना पड़ता है । यहां वह असहाय और लाचार है उसे यह कार्य विवशता के कारण करना पड़ता है ।

उन दिनों हमारी आर्थिक परिस्थिति और खराब हो चुकी थी, माँ बहुत कम घरों के ही कपड़े सिल पाती थी क्योंकि उन्हें अच्छे डिजाइनदार कपड़े सिलने नहीं आते थे । कई बार तो हम भूखे ही सो जाया करते थे । इसलिए मैं पुरुषों के पास से जो पैसे कमा कर लाती थी, उससे से ही घर चलता था । इस बात का पता माँ को नहीं था, उन्हें लगता था कि जॉन ने उसे दिए हैं, और कहती है "एलमा, औरत प्यार के लिए भटकती है पर उसे प्यार नहीं मिलता । औरत हमेशा मर्द से

घर का सुख मांगती है पर मर्द हमेशा उसे बाजारू सुख देता है ! मैंने कितने मर्द बदले हैं, पर क्या उन्होंने मुझे प्यार दिया ? नहीं, सब शरीर के सुख को चाहते हैं । प्यार की जो परिभाषा पहले आंकी गई थी आज वह बेकार और मजाक- सी लगती है । आज प्यार की परिभाषा एकदम बदली हुई है । अलग-अलग दिखने वाले पुरुष, दूर से जितने आकर्षक लगते हैं, स्मार्ट नज़र आते हैं, अन्दर से वही एक से रहते हैं । औरत को वे खा जाने वाली निगाह से देखते हैं।" एलमा पूछती है जॉन को मालूम है की तुम्हारा कई पुरुषों से संबंध रहा है । हाँ, जॉन को मेरे हर रहस्यों के बारे में पता था । बल्कि जॉन तो खुश है, कि उसे मुझ जैसी सुंदर लड़की मिल गई है । वैसे उस जैसे अजीब दिखने वाले को कौन लड़की पसंद करती । जॉन एक बार मेरी माँ से मिला और दोनों की अच्छी जान पहचान हो गयी और उसका आना-जाना मेरे घर बढ़ गया, वह जब भी मेरे घर आता तो पाव, डबलरोटी और बिस्कुट लेकर आता था । मुझे जॉन से हमेशा सहानभूति रही है और माँ के कहने पर मैंने उससे शादी कर ली और उससे शादी करके मैं खुश हूँ ।

इस उपन्यास में लेखिका ने निम्नवर्गीय स्त्रियों के संघर्ष, लाचारी, विवशता और मानसिक दशा का बखूबी चित्रण किया है । जब पेट की भूख सताती है, तो व्यक्ति कुछ भी करने को तैयार हो जाता है । यहाँ तक की अपनी इज्जत तक की परवाह नहीं करता, इसका जीवंत चित्रण सोफिया के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है ।

कोरजा

'कोरजा' उपन्यास में लेखिका ने निम्नवर्गीय लोगों का चित्रण किया है, और गरीब घर की स्त्रियों को कई प्रकार के शोषण का शिकार बनना पड़ता है । निम्नवर्ग से संबंधित पात्र रैयती, दारुद बी, ननकु कोस्टा की बीबी, मानिक घड़वा की पत्नी, आदिवासी औरतें तथा बच्चे निम्नवर्ग से संबंधित पात्र है ।

भूख तथा गरीबी का प्रभाव घर में स्त्री और बच्चों पर सबसे अधिक पड़ता है, उनका मानसिक द्वंद उन्हें अनैतिक काम के लिए प्रेरित करता है, जिसके विषय में डॉ.शशी जेकब लिखती हैं - "कोरजा उपन्यास की लेखिका मेहरून्निसा परवेज को गरीबी का एहसास है। उसका कहना है कि उन्होंने गरीब बच्चों की भूख इन सभी को निकट से देखा है। जगदलपुर के छोटे कस्बे में एक मुस्लिम परिवार की परिस्थितियों से परिचित होकर उन्होंने उपयुक्त उपन्यास लिखा। लेखिका को पूर्ण आत्मा विश्वास है कि पैसे का मूल्य मनुष्य के आदर्शों से कहीं कई गुना अधिक है। वे जानती हैं कि पेट की भूख के आगे मनुष्य किस तरह निराश्रित हो जाता है।"¹⁰

अर्थ की बढ़ती महत्वता के कारण यह जीवन का महत्वपूर्ण अंश बनता जा रहा है। आज व्यक्ति में अर्थ-बोध का संचार तेजी से हो रहा है, जिसके कारण निम्नमध्य तथा निम्नवर्ग के लोग अपनी आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए निरंतर संघर्ष कर रहे हैं। घर की आर्थिक विपन्नता को देखकर बचपन से ही इस संघर्ष में जुट जाते। इस उपन्यास के कुन्नु और रफीक बचपन में ही घर की परेशानियों को जानकर पैसे कमाने के उपाय ढूँढने लगते हैं। वह सुबह-सुबह अंधेरे में उठकर सड़को से गोबर उठाते हैं और साल भर जमा करते हैं उसके बाद खाद बनाने पर उसे बेचते हैं। इन बच्चों की मेहनत, लगन और उत्साह देखकर उनकी नानी हैरान हो जाती है - "इतनी छोटी-सी उम्र से कमाने का एहसास ? या अल्लाह, क्या वक्त आ गया है, खेल-कूद की उम्र में पैसे पैदा करने की सोच इन बच्चों पर आ पड़ी थी। क्या अब और आगे जमाने में माँ के पेट से बच्चा निकलते ही अपने पेट के लिए कमाने निकल पड़ेगा ? जैसा जानवर के, मुर्गी के बच्चे करते हैं। अंडे में से निकले नहीं और चोंच मारने लगते हैं। क्या अब इंसान और जानवर में कोई फर्क नहीं रहेगा ?"¹¹ पहले तो कम से कम त्योहारों के दिनों में नए कपड़े, खाने के लिए अच्छा खाना मिल जाता था। लेकिन अब निम्नवर्ग लोगों के नसीब में ये सब नहीं है। त्यौहार कब आकर चला जाता है। इन्हें पता तक नहीं लग पाता। नानी कहती है - त्यौहार भी आते हैं अब कोई नहीं जानता था। न त्यौहारों पर पहने को नए कपड़े थे, न खाने के लिए अच्छी चीजें। हाँ त्यौहार

वाला दिन जरूर ऐसा लगता था कि इस घर के बाहर कहीं हलचल है, शोर है, गर्मी है, जिसकी आँच यहाँ तक पहुँच रही है, जिसकी आवाज यहाँ तक आ रही है या और छुट्टियों वाला ही कोई दिन जिसमें बस फुर्सत-ही फुर्सत है।"¹²

आजकल त्यौहार उच्चमध्य एवं संपन्न वर्ग तक सीमित होकर रह गया है, क्योंकि आज के समय में लोगों का त्यौहार मनाने के नये-नये ढंग से बहुत साज सज्जा से मनाते हैं जिसके लिए पैसा पानी की तरह बहाया जाता है जो निम्नवर्ग के लिए खर्च कर पाना संभव नहीं होता है।

उपन्यास में लेखिका ने महंगाई संबंधी विचार दारुद बी के माध्यम से प्रस्तुत किया है "चार आने से कम में तो कोई चीज नहीं मिलती है। महंगाई के मारे तो नाक में दम आ गया है। पेट को खाए हैं तन को ढाँके जितना कमाते हैं दो टाइम की पेट की आग में ही चला जाता है।"¹³ दारुद बी गरीब स्त्री है जो कमर से झुकी हुई है। और गंदी पोटली में चावल लिए घर-घर जाकर बेचती हैं। झुकी कमर होने के कारण सब उनका मजाक उड़ाते हैं वह गुस्से में फनफना जाती हैं - "अरे हम आज मोहताज हो गए तो आज हम लोग इतनी बड़ी-बड़ी ढोली देते हैं। आज हम सड़क पर निकल आये तो फकीरनी कहलाते हैं और घर में बैठने वाली रईसजादियाँ ? अरे मैं जगदलपुर के एक-एक घर की पोल जानती हूँ। सबके घर मिट्टी के चूल्हे हैं हमने अपनी इज्जत नहीं बेची, पेट के लिए हाथ जरूर फैला लिये।"¹⁴

ननकू की पत्नी जो गरीब घर की लड़की थी। ननकू के मां-बाप बचपन में ही गुजर जाते हैं। उसके चालक चाचा उसे 10 वर्ष की आयु से ही शराब की लत लगा देते हैं। वह दिन-रात शराब की लत में रहने लगता है। वह दिन-रात शराब के नशे में घर के बाहर पड़ा रहता है, लेकिन जब ब्याह हुआ तब उसे पहली बार कमाने का अहसास होता है किन्तु वह जाएं तो कहां जाएं जो व्यक्ति दारू के भट्टे के अलावा कहीं कभी गया नहीं, वह कैसे कहीं काम करने जाता। लेकिन उसकी पत्नी एक गरीब परिवार से थी, जो बचपन से अपनी माँ के साथ बाजार में बैठी थी, इसी से उसे पति की हालात समझने में उसे वक्त नहीं लगा और हाथ की मेहंदी भी नहीं छुटी थी वह

बाजार-बाजार जाकर नमक बेचती है। वह बस्तर हाट, कोटपाड़ हाट, और भी छोटे-छोटे हाट के साथ ही, जगदलपुर का बाजार भी करती हैं।

निम्नवर्गीय स्त्रियाँ पुरुषों से कंधे से कंधा मिलाकर साथ में मेहनत मजदूरी करती दिखाई देती है, क्योंकि निम्नवर्ग की परिवारिक स्थिति में आर्थिक तंगी होने के कारण, पापी पेट के लिए तथा परिवार, बच्चों के लिए निम्नवर्ग की स्त्रियाँ संघर्ष कर अपने परिवार का पालन-पोषण करती हैं। उपन्यास के विषय में डॉ. नीहारे गीते चर्चा करती हैं - "कोरजा, गरीबी, दुःख-दर्द, स्वार्थयंत्रणाओं से घिरे घायल व टूटटी जीजीविषा से भरे व्यक्तियों की छटपटाहट है जो जिन्दगी में रोटी की लड़ाई लड़ रहे हैं।"¹⁵

लेखिका ने इस उपन्यास में कई जगहों पर निम्नवर्गीय आदिवासी स्त्रियों की मेहनत-मजदूरी तथा उनके द्वंद्व को प्रस्तुत किया है। यहां बस्तर के आदिवासी औरतें दिन भर मेहनत मजदूरी करती हैं और अपने बच्चों को अफीम के नशे में घर पर अकेला छोड़ जाती हैं दादी बताती है कि - "मजदूर औरतें खरीद कर ले जाती हैं बच्चों को घुड़्री में थोड़ी-सी अफीम घिसकर खिला देती हैं, बच्चा सारा दिन अफीम के नशे में सोता रहता था और खुद मजदूरी करने चली जाती हैं।"¹⁶ इन बेचारों के पास कोई दूसरा रास्ता भी नहीं होता ये - "छोटे गरीब लोग जो बीस-बीस रुपयों के लिए घरों का काम करते हैं या सारा दिन धूप में तपकर रोजी कामते हैं।"¹⁷ कई औरतें दिन में सर पर झाड़ूओ का गट्टा रखें चिल्लाती घूम-घूम का झाड़ू बेचती हैं। यह लोग बस आज के बारे में सोचते हैं उन्हें कल की परवाह नहीं बस पेट भर खाना, और तन ढकने को कपड़ा मिल जाए उसी में खुश हो जाते हैं। इनकी निर्धनता और अभावग्रस्त के विषय में चर्चा करते हुए अमित, कम्मो से कहता है "देखों न, ये नंगे आदिवासी दो गज कपड़ा और थोड़ी सी कनकी की पेज में तसल्ली पा जाते हैं और हम लोग हैं, हमें बस अभाव ही लगता है।"¹⁸

मानिक घड़वा की पत्नी अशिक्षित निम्नवर्गीय स्त्री है। जिसका पति काँसे की मूर्तियां बनाता है, जिसके लिए उसे राष्ट्रपति पुरस्कार मिला है उसका इंटरव्यू लेने कुछ पत्रकार उसके घर

गये। इमली के पेड़ के नीचे उसका फूस का झोपड़ा था। वह घर पर नहीं था, उसकी पत्नी गोद में बच्चा लिए सामने आई, और उन लोगों ने पूछा "मानिक को राष्ट्रपति पुरस्कार मिला है, जानती हैं ? 'वो क्या होता है ?' उसने पूछा था मैं जानता था इसका अर्थ वह नहीं जानती पर इसका अर्थ जानने वालों ने उस कला की नकल करके ढेरों रुपया कमाया है और इस कला में जान फूँकने वाला कुंठित है, अभावग्रस्त है। क्योंकि वह पढ़ा-लिखा नहीं है, वह नहीं जानता कि उसकी बनाई मूर्तियों का बाहर क्या मूल्य है।" — "तुम्हें पता है कम्मो, जो मूर्ति यहाँ बाजार में पाँच रुपय में मिल जाती है वह बाहर पचास और साठ में बेची जाती है।"¹⁹ एक दिन मानिक घड़वा पत्रकारों से मिला उसको कुछ भी जवाब देना नहीं आता था। वह तो मूर्तियाँ सिर्फ और सिर्फ अपना और अपने परिवार का पेट भर खाना मिल सके, और घर चलाने के लिए कुछ खर्च मिल जाये उसके अतिरिक्त उसकी कोई और अपेक्षाये नहीं थी। रामशरण जोशी लिखते हैं - "आदिवासी बेजुबान है। उन्हें गिनती नहीं आती। वे हम लोगों के कहे पर भरोसा करते हैं। वे व्यापारियों को अपना समझते हैं, ठेकेदारों पर विश्वास करते हैं पर ये ही उनके साथ ठगी ही करते हैं। बनिया सूदखोरी करता है। वन अधिकारी और ठेकेदार मिलकर उसकी वन सम्पदा को लूटते हैं। यह जल, जंगल और जमीन आदिवासियों के हैं लेकिन हमारी औपचारिक व्यवस्था ने उन्हें कंगाल बना कर छोड़ दिया है। ये लोग लूटते हैं, पीटते हैं लेकिन चुपचाप रहते हैं बेजुबान बनकर।"²⁰

आदिवासियों के पास जो हुनर है, उसकी जो कला है, उसका लाभ बाजार में अपना प्रभाव रखनेवाले बड़े व्यापारी ही उठाते हैं क्योंकि आदिवासियों की पहुँच उन बड़े बाजारों तक नहीं हो पायी है जहाँ उनकी कला का वाजिब मूल्य मिलता है। ऐसी स्थिति में उनका आर्थिक शोषण के साथ-साथ उनकी कला का भी शोषण होता है। उनका पूरा का पूरा लाभ बिचौलिये या बड़े व्यापारी उठाते हैं, इसका मुख्य कारण आदिवासियों में शिक्षा व जागृति का अभाव है।

आदिवासी क्षेत्रों में सरकारी व्यक्ति कार्यभार ग्रहण करके आते हैं और वहाँ की लड़कियों को बहला-फुसलाकर अपने प्रेम का वास्ता देकर खेल बना लेते हैं। लेखिका इस विषय पर चर्चा

करते हुए लिखती हैं - "यह कलेक्टर का ऑर्डर था। इसलिए नौकरी के डर से सबने इस आर्डर को मान लिया और जिनका इन आदिवासी लड़कियों से संबंध था उन्होंने चुपचाप शादी कर ली चाहे वह कुँवारे हों चाहे शादी-शुदा चाहे छः बच्चों के बाप हो चाहे निपूते। जब उनका यहाँ से ट्रांसफर हुआ तो क्या वे इन लड़कियों को साथ ले गए ? नहीं, और वह आधी शहर की आधी गाँव की होकर ही रह गई।"²¹ अमित पत्रकार है वह कम्मो को इन निम्नवर्गीय आदिवासी लड़कियों के विषय में बताता है कि मैंने पिछले दिनों दंतेवाडा की कुछ लड़कियों से इंटरव्यू लिया था। उसमें से एक लड़की का नाम रैयती था वह निम्नवर्गीय परिवार से थी उसने मुझे रो-रोकर बताया - "अब मुझे धरती पर सोना अच्छा नहीं लगता, मंडिया, कनकी की पेज अच्छी नहीं लगती। मैं उस बाबू के घर पलंग पर सोती थी, कुर्सी पर बैठती थी, तेल-घी का बखारा खाती थी। ये लौटी लड़कियाँ क्या अपने घरों में, अपने समाज में फिट हो पाएँगी ? कभी नहीं, इनके मुँह पर मुर्दा खून लग गया था। अब ये जीवन भर दुखी रहेंगी।"²² अमित का एक बार फिर दंतेवाड़ा जाना हुआ वहाँ उसने एक बार फिर रैयती से मुलाकात की रैयती ने अपने ही समाज में जान पहचान के लड़के से ब्याह कर लिया था। मैंने उससे पूछा, "तू खुश है ? उसने उदास होकर सिर झुका लिया, नहीं बाबू, उस बाबू के पास पैसा था, वह फुल पैंट पहनता था, टीप-टॉप से रहता था और प्यार करने का उसका अपना अलग ढंग था। सलीका था ! सब याद आता है, मन उदास रहता है।"²³ समाज में पैसों को ही महत्वता दी जाती है तभी तो निम्नवर्गीय लोगों की समाज में कोई प्रतिष्ठा नहीं मिलती। क्योंकि उनके पास आर्थिक अभाव है, निम्नवर्ग के लोगों की प्रतिष्ठा संपन्न वर्ग के लोग पैसों से खरीद रहे हैं। इस उपन्यास में अमित, कम्मो के इस प्रश्न का उत्तर देते हुए कहता है "आदिवासी लड़कियाँ शहरी बाबुओं की ओर आकर्षित हो रही हैं इस पर आदिवासियों ने कुछ नहीं किया ?" "किया क्यों नहीं, पंचायत बुलाई। लौटी हुई लड़कियों को वापस घरों में रखने से इन्कार किया। युवा पुरुषों में आक्रोश बढ़ा, घर की औरतें शहरी बाबुओं

की ओर आकर्षित हो रही थी। जंगली फूलों पर शहरी भँवरे मँडरा रहे थे। पैसे से उनकी घर की इज्जत खरीदी जा रही थी। आक्रोश होना तो नेचुरल ही है।"²⁴

निम्नवर्ग के घरों की कुंवारी लड़कियों को बहला-फुसलाकर संपन्न वर्ग के लोग पैसों व वैभव की लालच देकर अपनी ओर आकर्षित कर रहे हैं। उनकी इज्जत मान-सम्मान पैसों से खरीद रहे हैं। अनजान, अशिक्षित, मासूम लड़कियाँ उनके प्यार के छलावे में पड़कर अपना सब कुछ निछावर कर देती हैं। आदिवासी समाज के हाशिए पर होने का सबसे प्रमुख कारण है शिक्षा का अभाव। शिक्षित व्यक्ति देश-दुनिया, अच्छे-बुरे की पहचान करने लगता है। कुछ आदिवासी शिक्षित भी हो गये, आज वे विकास कर रहे हैं, किंतु अफसोस की बात है कि उनकी गिनती बहुत कम है। आदिवासी समाज के भोलेपन, ना समझी का, शिक्षित समाज उसका भरपूर शोषण करता है।

अकेला पलाश

'अकेला पलाश' उपन्यास के अंतर्गत मेहरुन्निसा परवेज ने निम्नवर्गीय लोगों के निर्धनता का चित्रण किया है। गरीबी में जीवन यापन करने वाले लोगों को बहुत ही कठिनाइयों से गुजरना पड़ता है। और संपन्न तथा उच्च वर्ग के लोग भी इनकी गरीबी का मजाक उड़ाते हैं। निम्नवर्ग की सबसे बड़ी समस्या आर्थिक विपन्नता है। भारत के नगरों तथा गाँवों दोनों ही जगहों पर निम्न वर्ग की आर्थिक विपन्नता का भयानक रूप देखने को मिल जाता है। निम्न वर्ग को खाना कपड़ा तथा अन्य प्राथमिक जरूरतों के लिए उन्हें दिन-रात मजदूरी करनी पड़ती है, उसके बावजूद उनकी सभी जरूरतें पूरी नहीं हो पाती। ग्रामीण इलाकों में और भी मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। अत्याधिक छोटे-छोटे और छिटके खेत का होना, उद्योग-धंधों का ना होना, बढ़ती जनसंख्या, बढ़ते कर्ज आदि के कारण इन लोगों को आर्थिक विपन्नता का सामना करना पड़ता है। इन लोगों की जिंदगी पशु-पक्षियों से भी बदतर होती है। पूरा जीवन इन्हें जीवन यापन की जरूरतों के अभावों में ही अपना जीवन व्यतीत करना पड़ता है। गरीबी के कारण ये कुपोषण का शिकार हो

जाते हैं, जिसके कारण कई बीमारियों का सामना करना पड़ता है। इस विषय पर विद्यासिन्हा लिखते हैं - "अमानवीय परिस्थितियाँ इन्सान के अस्तित्व को भी प्रश्न चिन्हित करती है। ये अमानवीय परिस्थितियाँ गरीबी से पैदा हुई हैं। भूख और अतृप्ति का कारण गरीबी है।"²⁵ ग्रामीण गरीब वर्ग दिन रात मेहनत मजदूरी करता है, पसीना बहाता है, उसके बावजूद उसे मनचाहे रुपये नहीं मिलते। उसकी इस दशा का एक कारण जमींदारी, साहूकार तथा महाजन आदि के शोषण के कारण उनकी गरीबी बढ़ती जा रही है। डॉ. उत्तम पटेल का कहना है कि - "भारतीय कृषक जीवन दरिद्रता, शोषण और निरक्षरता आदि का शिकार हो गया। इस कारण वह दिन-ब-दिन गरीब होता जा रहा है। इसका कारण है आर्थिक असमानता, जो अनेक वर्गों के बीच फैली हुई है।"²⁶

गरीबी मनुष्य को इतने बुरे स्तर पर ला देती है कि कभी-कभी हालात जानवरों से भी बदतर हो जाती है और एक-एक चीज के लिए तरसना पड़ता है। ना पहनने के लिए कपड़े मिलते हैं, और ना खाने के लिए पेट भर खाना, ये लोग अपना पेट भरने के लिए चावल का कोंडा, जिसे गाय-भैंसों को खिलाया जाता है उसकी रोटी बनाकर खाते हैं। तहमीना ने उस दिन खुद अपनी आंखों से देखा था "गाँव की कुछ औरतें चावल का कोंडा, जिसे गाय-भैंसों को खिलाया जाता है, उसे बारीक छानकर और मोटी-मोटी हाथ से रोटी बना रहीं थी। उसे देखकर आश्चर्य लगा था कि कोंडे की रोटी कैसे खाई जा सकती है ? क्या इन्सान अब गाय-भैंसों की श्रेणी में आ गया है ? सच है पेट की आग बुझाने के लिए क्या-क्या नहीं करना पड़ता। कम से कम इन परियोजनाओं के द्वारा इन भूखे-नंगे बच्चों के मुँह में थोड़ा पोस्टिक आहार तो मिल जाता है। पर वह भी कितना ! सारा कुछ तो बीच के लोग खा जाते हैं। इनसे ज्यादा भूखे तो भरे पेट वाले लोग हैं।"²⁷ तहमीना उन गंदे बच्चों को देखकर सोचती है- "इन्हें सुधारने, में इन्सान बनने में कितना समय लग जाएगा। तब भी शायद ये इन्सान नहीं बन पायेंगे; क्योंकि गरीबी, भूख, अभाव इनकी नस-नस में समा गया है और उसे मिटाना नामुमकिन-सा है।"²⁸

बढ़ती हुई महंगाई और बढ़ती जनसंख्या के कारण इन गरीबों की संख्या लगातार गतिपूर्वक बढ़ती जा रही है। अज्ञानता तथा अशिक्षा के कारण इनकी तरक्की में रुकावट आती है। इनकी हालात में सुधार लाने के लिए, जो सरकार द्वारा योजनाएँ बनाई जाती हैं, उन योजनाओं का लाभ इन्हें पूर्ण रूप से मिल नहीं पता, पेट भर खाना इन गरीबों को उपलब्ध कराया जा सके इसलिये सरकार द्वारा योजनाएँ बनाई जाती है। लेकिन वह भ्रष्ट व्यवस्था के कारण इन गरीब लोगों तक पहुँच नहीं पाता, इन गरीबों को भूख से तड़पना ही इनकी नसीब में होता है।

यहां लेखिका ने विपुल तथा उसकी माँ के माध्यम से के अभावग्रस्त जीवन को प्रस्तुत किया है - "दो दिन से घर में चीनी नहीं है। माँ बकती हुई इस कमरे से उस कमरे घूमती है और हार कर अपने भगवान के आगे सर टेक देती है। पर देखो दीदी वह भी कितना बेचारा है माँ का भगवान, वह टुकुर-टुकुर माँ को निहारता है पर चीनी नहीं देता।"²⁹ निम्नवर्ग में जो पढ़े-लिखे लड़के लड़कियाँ होते हैं वह कोई भी काम करने से हिचकते नहीं। क्योंकि अपना घर चलाने के लिए इनके पास और कोई साधन नहीं है। इस उपन्यास का विपुल इसी तरह का पात्र है वह तहमीना से कहता है। "फिर इसमें शर्म की क्या बात है, घर की हालत ही ऐसी है कि एक-एक पैसा हमारे लिए कीमती है, उसे बचाना जरूरी है। फिर दीदी मैं समझता हूँ, कि काम चाहे कोई भी हो, उसे करने में हमें शर्म नहीं आनी चाहिए।"³⁰ ये लोग पढ़े-लिखे होने के बावजूद किसी भी तरह का श्रम करने से हिचकते नहीं हैं। विपुल के शिक्षित होने के बावजूद उसे नौकरी नहीं मिली। इसलिए वह अपने परिवार को पालने के लिए मेहनत मजदूरी करता है। उसके हाथ पूरी तरह सख्त लहलुहान हैं, उसके हाथों की चमड़ी भी निकल रही है।

कुछ अनपढ़ मजदूर लोग ऐसे होते हैं जिन्हें अपने आज से मतलब होता है उन्हें अपने भविष्य की परवाह नहीं होती। इसका जीवंत चित्रण लेखिका ने अपने उपन्यास में किया है - "मजदूरी भी इसी सीजन में डबल-ट्रीबल हो जाती है। इतने पर भी इन्हें मजदूर नहीं मिल पाते, क्योंकि सब महुआ बिनने जाते हैं। इन दिनों लोगों का भोजन भी महुआ होता है। महुआ को यह

लोग उबालकर खाते हैं या फिर भूज कर खाते हैं, थोड़ा ही खा लेने पर पेट भर जाता है। फिर ऊपर से महुआ का शराब बनाकर पीते हैं। गरज यह है कि महुआ से इनकी हर तरह से उदरपूर्ति हो जाती है। इसलिए इन्हें काम करने की, रोजी कमाने की बिल्कुल चिंता नहीं रहती।"³¹

पैसे कमाना, या भविष्य के लिए पैसे जोड़ना, ऐसा विचार इन मजदूर लोगों में निहित नहीं है। उनकी तो बस आज की जरूरतें पूर्ण हो जाये यही इनके लिए बड़ी बात हो जाती है।

समरांगण

उपन्यास में निम्नवर्गीय स्त्री के शोषण, करुणा तथा निर्धनता को प्रस्तुत किया गया है। कटोरीबाई, बूँदाजान, राधा जुली और तोतामलजी की पत्नी आदि निम्नवर्ग से संबंधित नारी पात्र हैं। बूँदाजान यह एक निम्नवर्गीय परिवार से थी, जिसका परिवार दिल्ली में कालीन बेचने आता था। वह पाँच साल की थी जब एक मेले में अपने परिवार से बिछड़ जाती है। तब कानपुर के एक व्यक्ति ने उसे नौटंकी करने वाली तमंचाखाना के हाथों बेच देता है। तमंचाखाना, बूँदाजान का पालन-पोषण करते हैं, साथ ही अपना हुनर, नित्य और गायन सबकी शिक्षा देते और एक दिन वह बड़ी मशहूर नौटंकी करने वाली बन जाती है।

नौटंकी वाले अपना भरण-पोषण कैसे करते हैं, उसका जीवंत चित्रण लेखिका ने अपने इस उपन्यास में किया है। "रोज़ जमींदारों की ड्योढ़ी में होने वाले नौटंकी की अपनी अलग ठसक होती थी। धीरे-धीरे गदर ने नौटंकी की चमक को समाप्त कर दिया था। पहले नौटंकी का व्यवसाय नट लोग ही करते थे। रस्सी पर चलना, ढोलक बजाना अभिनय करना इनके काम थे। पहले ब्याह शादी में भी नट लोग नौटंकी लगाते थे, बारात में जाते थे। नट तो ब्याह में ढोलक और तुरही बजाता बारात में आगे-आगे भी चलता था। ढोलक और तुरही की आवाज़ से ही लोग समझ जाते थे की बारात आ गई है। बारात का उद्घोषक हुआ करता था। ढोल पीटकर बारात के आगमन की सूचना देता था। गाँव से आराम से अनाज, इनाम और रुपया मिल जाता था। रबी

और खरीफ़ की फ़सलों में भरपूर अनाज मिल जाता था, बाक़ी दिन यह अपनी कला के प्रदर्शन से कमाते थे।"³² पहले नौटंकी में महिला का प्रवेश नहीं था। महिला का किरदार भी पुरुष ही निभाते थे। किंतु व्यवसाय मनोरंजन का साधन बन गया है। मेलों में नौटंकियाँ लगने लगी। अब दूर-दूर तक महिलाएँ मशहूर होने लगीं। नौटंकी की शान ही महिलाएँ होने लगी, और नौटंकी की प्रमुख रूप से मालकिन भी महिला ही हो गई। नौटंकी वालों ने अपने जीविकोपार्जन का एक अलग तरीका अपना लिया था।

निम्नवर्गीय लोग गरीबी के कारण पैसों की लालच में अपनी बेटी तक को बेच देते हैं। तोतामल जी की पत्नी एक गरीब परिवार की लड़की थी, लटायरा, बंगाली सिंह से बताता है - "सेठानी बहुत सुंदर है, इनकी पुत्री के बराबर है, गरीब घर की है, पैसा लेकर माता-पिता ने ब्याह दिया है। अभी भी रोज़ वसूल कर ले जाते हैं। सेठजी अपनी पत्नी की सुन्दरता पर मोहित रहते हैं। संबन्ध दोनों के पति-पत्नी के नहीं हैं।"³³ यहाँ लेखिका ने आर्थिक तंगी का चित्रण किया है, किस प्रकार माता-पिता अपनी बेटी का ब्याह, एक अमीर बूढ़े आदमी के साथ कर देते हैं। बदले में उस आदमी से मोटी रकम वसूलते हैं। इस प्रकार पैसे के लोभ लालच में पड़कर माता-पिता अपनी बेटी की जिंदगी को दांव पर लगा देते हैं।

'राधा' एक गरीब छोटी जाति की लड़की है, जो गोपीलाल के घर के पास के मोहल्ले में अपने पिता और भाई के साथ रहती है। पण्डित बेनीप्रसाद शर्मा के बेटे मदन से गर्भवती हो जाती है, तब वह आत्महत्या करने के लिए नर्मदा नदी में कूद जाती है, लेकिन कुछ मछुआरे उसे बचा लेते हैं, लोंग उसे ताना मारते हैं-

"हाय क्यों गई नर्मदा में डूबने?"

"डूबने गई थी तो जिंदा क्यों लौट आई?"

"मुँह काला करे बैठी होगी?"

"बाप की ठठरी को क्या कांधा देने लौट आई ? ऐसे ही काला दिन न देखना पड़े इसलिए तो बाप-महतारी बेटी के जन्म को रोते हैं ?"³⁴ राधा का भाई गुस्से में आकर मदन को मारने की धमकी देता है वहां एकत्रित सभी लोग मदन और उसके पिता को घेर लेते हैं, तभी गोपीलाल समझौता कराते हैं और पण्डित बेनीप्रसाद को समझाते हैं कि "यह लोग उतने उत्तेजित थे मदन का खून कर सकते थे । हिम्मत से काम लो । घर में ब्याह कर डाल देने में क्या बुराई है ? फिर ऐसा चक्कर कलाओं कि लड़का दूसरे ब्याह पर राजी हो जाए । दूसरा ब्याह कर दो । समाज में घर-घर कई विवाह हो रहे हैं । लड़के की कौन एक गाँठ पढ़ती है । चाहे कितनी बार भाँवर फिरा दो । बात बाहर जाए रोज़ थाना कचहरी जाओगे तो अलग थूका फज़ीहत होगी।".... गलती तो तुम्हारे बेटे ने की है । साँप से खेलना चाहिए पर ऐसे, नहीं कि वह पलट कर डस ले । अब भलाई इसी में है, साँप पकड़ो, दांत तोड़ो, ज़हर निकालो और पिटारी में दबाकर बैठा दो ।"³⁵

निम्नवर्गीय लोगों के ऊपर उच्च या उच्च मध्यवर्ग का जो अपराध होता है वह निम्नवर्ग तक आते-आते कैसे पाप बोध में बदल जाता है, और उस अपराध का सजा याचक निम्नवर्ग होता है । ये हमेशा से चल रहा है, अभी भी हो रहा है और इसका अंत कहां है यह कोई नहीं जानता ।

जूली, जो चंद्रकला की ईसाई आया है । वह मोहन से गर्भवती हो जाती है, वह जब मोहन से बताती है, तो वह बच्चे को आश्रम में देने या मार देने को कहता है । जिसके लिए वह राजी नहीं होती, वह राजी नहीं होती । वह सिर्फ बच्चे के जन्म तक मदद करने को कहती है, बच्चे के जन्म होते ही वह अपने रिश्तेदार के यहां चली जाएगी और फिर दोबारा कभी लौट कर नहीं आयेगी । लेकिन मोहन उसकी कोई मदद नहीं करता, जब बात का पता ताईजी को पड़ता है तो वह अपने घर की इज्जत, मान और मर्यादा को बचाये रखने के लिए बंगाली सिंह की मदद से जूली को छुपा तक छिपा कर रखने को कहती है, उसके बदले में बंगाली को सोने के कंगन देती

हैं। बंगाली सिंह कहते हैं "बड़ी विचित्र समस्या है। उत्पात की शिकार बेचारी मासूम औरतें ही हमेशा क्यों होती हैं?"³⁶

मेहरुनिशा परवेज ने राधा और जूली के माध्यम से निम्नवर्गीय की तमाम स्त्रियों पर होने वाले शोषण अत्याचार को दर्शाया है। निम्नवर्गीय लोग संपन्न वर्ग से सिर्फ आर्थिक रूप से ही शोषित नहीं होता, बल्कि मानसिक, शारीरिक रूप से भी शोषण यातनाओं का शिकार होता है और इसमें सबसे अधिक महिलाओं को शिकार बनाया जाता है, जिसमें उनका शारीरिक शोषण भी होता है और उस यातना के चलते अपने व अपने लोगों से तिरस्कृत व अपमानित होती हैं।

स्थायी निवास रहित एक संचरण शील जाती जो कुछ समय के लिए जहाँ कहीं खेमे, सिरकी आदि डालकर दिन बिताती है, जिसके रहने का कोई स्थान न हो और इसलिए जो अपनी गृहस्थी कि सब चीजें अपने कंधे पर लादकर जगह-जगह घूमते फिरते हैं। पिंडारियों के जीवन की चर्चा मेहरुनिशा परवेज ने कटोरीबाई और बंगाली सिंह के माध्यम से प्रस्तुत किया है। दिल्ली में दंगों के कारण गोपीलाल वहां से भागते हैं, रास्ते में उनकी नजर पिंडारियों पर पड़ती है - "सामने लोग खच्चरों पर अपना सामान लाद रहे थे। गोपीलाल के समझते देर नहीं लगी कि पिंडारियों का क्राफ़िला है जो दिल्ली से कुच करने वाला था। पिंडारियों के साथ उनका पूरा परिवार साथ था। बैलगाड़ियाँ, खच्चर, गधे और बकरियाँ सब साथ थे। स्त्री और पुरुषों ने रंगीन कपड़े पहन रखे थे। कुछ ने तो अच्छे कपड़े पहने थे और कुछ फटे-पुराने कपड़ों में थे।"³⁷ कटोरीबाई सुहासनी से कहती है - "हम लोग भी पिछले तीन माह से दिल्ली में डेरा डाले थे। वैसे तो मैंने तो खूब दिल्ली देखी है, पर इस बार कहीं नहीं जा पाए। दिल्ली का मौसम ही बिगड़ा मिला। धंधा भी कुछ खास नहीं हो पाया। लड़ाई में तो ग़रीब आदमी मारा जाता है न?"³⁸ बंगाली सिंह जी अपनी जाति के विषय में गोपीलाल को बताते हैं, बंगाली सिंह ये गोपीलाल से कहते हैं हमारे यहाँ शतरंज नहीं खेला जाता, महाभारत में हमारी जाती ने पांडवों की बहुत मदद की थी उनके दुःख, तकलीफ को देखकर हमारे पूर्वजों ने निर्णय लिया था, हम कभी शतरंज नहीं खेलेंगे और आगे

बताते हैं - "प्राचीन काल में सामंतीयुग के अभिशाप के कारण यह जातियाँ लावारिस जीवन जीने पर मजबूर हुई। राजाओं के हरम में दासी प्रथा थी। राजपूत घराने में जो दासियाँ पहुँचाई जाती थीं, उनसे उत्पन्न अवैध संतानों को जब समाज में स्थान प्राप्त नहीं होता था तथा वह हेय दृष्टि से देखे जाते थे, तब इन्हें पेट पालने के लिए खानाबदोशी का जीवन जीना पड़ता था। राजाओं के समय के यातायात का सारा कार्य इन्हीं के जिम्मे रहता था। सेना के साथ चलते थे। माल ढोने तथा सैनिकों का राशन पहुँचाने का कार्य इन्हीं के द्वारा होता था। घोड़ों को राशन पहुँचाने का कार्य भी करते थे। सेना का सारा सामान तंबू आदि लेकर चलना वहाँ पहुँचकर सारी व्यवस्था करना इन्हीं के जिम्मे रहता था। समाज में उचित आदर सम्मान नहीं मिला इस कारण भी भगौड़ा स्वभाव बन गया है। प्राचीन काल में तो सम्मान सेना के साथ बने रहने के कारण मिला हुआ था। युद्ध के पड़ाव के साथ रहते थे। सैनिकों को दिल बहलाने, लूटपाट में बराबरी के सहयोगी रहते थे।"³⁹

शहर में आमतौर पर सड़क के किनारे टेंट में खुले में अस्थायी तौर पर कुछ लोंग दिख जाएंगे कई बार तो ये लोग दो से तीन दिन या फिर हफ्तों एक ही जगह गुजार देते हैं, इनके साथ बैलगाड़ी या फिर कोई और जानवर भी दिख ही जाएगा। ये लोग ऐसे ही अपना जीवन गुजार देते हैं। स्त्रियाँ तो इन जगहों पर पूरा दिन रहती हैं जबकि पुरुष मेहनत-मजदूरी कर कुछ पैसे इकट्ठा कर फिर अगले पड़ाव की ओर बढ़ जाते हैं।

पासंग

उपन्यास में मेहरून्निसा परवेज जी ने निम्नवर्गीय लोगों के दयनीय जीवन को प्रस्तुत किया है। न उन्हें पेट भर खाना नसीब होता है न तन ढकने को भरपूर वस्त्र, न सर ढकने को ठीक से छत मिलती है, भूखे, नंगे किसी टूटी फूटी झोपड़ी में रहने को विवश रहते हैं और अपना जीवन व्यतीत करते हैं। किसानी, मजदूरी तथा शारीरिक श्रम कर निम्नवर्ग के लोंग अपना जीवन व्यापन करते हैं। उपन्यास में निम्नवर्गीय नारी पात्र है सुगराबी तथा सुगराबी की दादी नानी-नानी, हमीदा

दादी, आदिवासी औरतें, घसीटे की माँ, बिस्मिल्लाबाई आदि निम्नवर्गीय पात्र हैं यहां निम्नवर्ग के पात्र भी अपना एक अलग महत्व दिखाते हुए उपन्यास में प्रस्तुत हुए हैं।

उपन्यास में लेखिका ने आदिवासी स्त्रियों के शोषण, परिश्रम तथा मजबूरी को दर्शाया है यह "आदिवासी औरतें सर पर टोकना रखे गाँव से दोना और जसवंत के फूल देने आती थीं। पूजा के लिए घर-घर फूल पहुँचाती थीं। शाम को यही औरतें जूही-चमेली की लड़ियाँ लेकर घर-घर पहुँचाने आती थी। हाथ से नाप-नाप कर बेचती हैं।"⁴⁰ बस्तर के आदिवासियों की विपत्तिग्रस्त स्थिति को चित्रित किया है। ये आदिवासी एक-एक चीज को मोहताज तथा मन के सहज होते हैं। पहले तो गरीबी इन्हें विरासत में मिली है, उसपर पढ़े-लिखे उच्च तथा मध्यमवर्ग के ठेकेदार लोग इनका और इनकी अज्ञानता का फायदा उठाते हैं। कनी की दादी को इन आदिवासियों की निर्धनता को देखकर दया आती है वह कनी को बताती है कि - "बेचारों को लंगोट के लिए तक तो कपड़ा नहीं मिलता रे,.... औरत आदमी सब जानवर की तरह नंगे रहते थे बाद में सागौन और सरगी के पत्ते बाँधने लगे थे। पैसा बेचारों ने देखा तक नहीं था।.... ऐसे मजबूर और सीधे थे।"⁴¹

निम्नवर्ग के लोगों को हमेशा संपन्नवर्ग के रहमों-कर्म पर ही जीना पड़ता है। उन्हें बड़े घरों में काम, मेहनत-मजदूरी कर अपना और अपने परिवार का पेट पालना पड़ता है। इस उपन्यास में कालू महार की माँ टुकना, छुई, बोड़ा-छाती, पुटू, बासता और कोंदा जंगलों में मिलने वाली चीजें बेचकर तथा बड़े घरों की दीवार की पुताई करके अपना घर चलाती हैं, कालू महार की माँ कनी की दादी से कहती है – "बड़ी अम्माँ, रह दीवार में कैसे दाग हैं, दीवार बड़ी गन्दी दिख रही है, एक दिन आकर पोत दूँ क्या ? एक-दो टुकना छुई मिट्टी लाकर पटक देती हूँ, पीछे का पोत दूँगी। इस बार तो तुमने मुझसे पीछे का हिस्सा भी नहीं पुतवाया, क्या बड़ी अम्माँ मजदूरी देने में डर गई ? एक रुपया तो लेती थी।"⁴² दिन-रात मजदूरी करने के बावजूद इन्हें पेट भर खाना भी नहीं मिल पाता। इनके पास ना तो अपने खेत होते हैं, नाही कोई अपना व्यापार होता है। संपन्नवर्ग और मध्यवर्ग की सेवा-मजदूरी कर ये लोग अपना जीवन बिताते हैं। जब जमींदारी प्रथा प्रचलित

थी तब ये लोग उनके खेतों में मजदूरी कर अपना पेट पालते थे। जमींदारी नष्ट होने के बाद ये बेरोजगार हो गये। खेती के अभाव में तथा कोई और काम ना जानने के कारण इन्हें अपना और अपने परिवार का पेट पालने के लिए साल भर भाग-दौड़ करनी पड़ती है, कालू की माँ, कनी की दादी को बताती है - "समय देखकर ही व्यापार करना पड़ता है न बड़ी अम्माँ, अब तो अपने पेट की खातिर खुद ही हटर-हटर करना पड़ता है। तुम लोगों का समय खराब हुआ तो हम लोग भी तो बेकार हुए ना ? ज़मीनदारी गई तो सारे नौकर हकाल दिये। पहले साल भर का धान-रुपया मिल जाता था, गुजर-बसर हो जाती थी, अब तो सब खुद करना पड़ता है। तुमने भी खेती बटाई पर उठा दी। अब मौसम देख कर दो पैसा कमाने दौड़ना पड़ता है। अब देखों गर्मी में तेंदू और चारपाक के लिए दौड़ रहे हैं, गर्मी खत्म होते ही बादल गरजते ही बोड़ा के लिए जाना होगा। बोड़ा खोद-खोद कर लाना होगा और एक आना दोनी बेचना होगा, पाँच-दस रुपया उससे दिन भर में कमा लेती हूँ। जब तक बोड़ा रहेगा पूरे पाँच-दस कोड़ी रुपया मिल जाता है। आज कल तो चारपाक बेचने बच्चों के स्कूल के पास बैठती हूँ। बच्चे मजे से एक पैसा तो दो पैसा दोनी खरीद कर खा लेते हैं।"⁴³

अशिक्षा जमींदारी प्रथा का पतन, आर्थिक विपन्नता, किसी भी नये काम-व्यापार के ज्ञान के अभाव के कारण इन्हें अपनी प्राथमिक आवश्यकताओं के लिए भी बहुत संघर्ष करना पड़ता है।

निम्नवर्गीय ग्रामीण लोंग भूत-प्रेत तथा अंधविश्वास पर अधिक विश्वास रखते हैं। इसका मूल कारण शिक्षा का अभाव, अज्ञानता तथा निर्धनता है। ग्रामीण समाज के लोंग मानसिक तौर पर संकुचित प्रवृत्ति के होते हैं। देवी-देवताओं तथा अंधविश्वासों पर अधिक आस्था रखते हैं। ये लोग भूत-प्रेत, जिन्नात से बहुत डरते हैं। इनका मानना है कि मरने के बाद व्यक्ति भूत बनकर सबको सताते है। इस उपन्यास के अंतर्गत भूत-प्रेत अंधविश्वास तथा उसे उतारने के लिए जो भी कर्मठ किया जाता है उसका वर्णन किया गया है। सुगराबी को मिरगी का दौरा पड़ता है जब उसे

मिरगी का दौरा पड़ता है तो वह अपनी सुरीली आवाज में जोर-जोर से गाना शुरू कर देती थी। घण्टो गाने का दौर चलता था, जन्म से लेकर विदाई तक के गीत गाती और फिर बेहोश होकर गिर जाती है और घंटों बेहोश पड़ी रहती है। उसे जूता सँघाकर होश में लाया जाता फिर कई दिनों तक बीमार रहती थी। सुगराबी की दादी, कनी की दादी के साथ ब्याह में उनके साथ आई थी, उनकी प्रिय नौकरानी बनकर तथा वह उनके साथ ही रहती थी। सुगराबी की माँ को सात संतानें हुईं सुगराबी उनकी सातवीं संतान थी उसके पहले के एक भी संतान जीवित नहीं रहे बड़ी मन्नतों के बाद ही सुगराबी जीवित रह पाई। लेकिन उसके जन्म के पश्चात उसकी माँ की मृत्यु हो जाती है। उसको कनी की दादी ने ही पाल-पोश कर बड़ा किया था। वह घर का पूरा काम-काज, देख-रेख तथा कनी का ख्याल रखती थी। सुगराबी अपने सारे काम अच्छे से करती थी और उसे बचपन से ही नाचने-गाने का बहुत शौक था और मिरगी की बीमारी थी, किंतु इस बात को लोग भूत-प्रेत से जोड़कर बताने लगे। आस-पास के लोग कहते हैं, सुगराबी को मिरगी का दौरा नहीं आता बल्कि उसके ऊपर लालपरी का साया है, लालपरी सुगराबी की नानी का नाम था। लोग बताते हैं कि सुगराबी की नानी "नाचने-गाने वाली नटनी थी। सुगराबी की माँ तो सारी जिन्दगी सुघड़ गृहिणी रही थी। सुगराबी की नानी सारी जिन्दगी नटनी रही और नटनी ही मरी, उसने अपनी बेटी को बेच दिया था। सब लोग कहते थे सुगराबी को मिरगी का दौरा नहीं आता बल्कि उसकी नानी की आत्मा आती थी।"⁴⁴ कनी की दादी ने सुगराबी को मिरगी की बीमारी के इलाज के लिए कितने टोने-टोटके, पीर-फकीर और दरगाहों का सहारा लिया था। इन दरगाहों में सीधे-सीधे लोगों को फसाया जाता है। ऐसे ही साधारण लोगों से छल करके ही मोटी-मोटी रकम ऐंठते हैं और मौलाना इन को ठीक करने तथा भूत-भगाने का आडंबर करते हैं। इनको शारीरिक तौर पर भी क्षति पहुंचाई जाती है - "सुगराबी को जिस दरगाह पर ले जाते थे, काफी पहुँची दरगाह थी। वहाँ टेढ़े से टेढ़े भूत-पलीत तक उतार दिए जाते थे। भूत, शैतान, जिन्नात वालों को वहाँ जंजीरों से बांधकर रखा जाता था। भूत, प्रेत जिन्नात काफी ऊधम मचाते रहते थे। कोई पेड़ पर चढ़ा दिखता, कोई

गाना गाता रहता था। वहाँ पर ढेर सारी यातनाएँ देकर काबू में किया जाता था। कैसा भी शैतान, जिन्नात हो उसे उतारकर बोतल में कैद किया जाता फिर उस बोतल को दरगाह के पिछवाड़े हिस्से में दफना दिया जाता था। दरगाह के पीछे का हिस्सा अच्छा खासा भूत-प्रेत, शैतान, जिन्नातों का कब्रिस्तान बन गया था। उधर दिन में भी कोई जाने से डरता था, जाने कब किस पर सवार हो जाए?"⁴⁵

भोले-भाले लोग तंत्र-मंत्र, टोना-टोटका आदि अंधविश्वासों में पड़कर अपना सर्वस्व निछावर कर देते हैं। ये लोग पुनर्जन्म पर खूब विश्वास करते हैं। इनकी मान्यता है कि इनका कोई प्रिय व्यक्ति की मृत्यु होती है तो किसी ना किसी अवतार में हमारे समक्ष आती है। इनके इसी अज्ञानता का फायदा साधु-संत, पीर-फकीर- भी उठाते हैं। इन सभी कुप्रथाओं, अंधविश्वासों की चर्चा में मेहरुनिशा परवेज ने अपने कथा साहित्य में किया है, तथा उन सभी कुप्रथाओं, अंधविश्वासों का वह विरोध अपने कथा साहित्य में भी करती हैं।

हमीदा दादी गौसूदादा की पत्नी है। जो छोटी-सी पंसारी की दुकान चलाती हैं तथा तीन ऊले का चूल्हा बनाने के कारण पूरे इलाके में मशहूर है, लोग मुंह मांगी रकम देकर चूल्हा खरीद कर ले जाते थे। उसी से घर का गुजारा होता है। गौसूदादा हमीदा दादी को सोहनी कुम्हारन कहते थे। उनका गेहुँआ रंग सोने की आभा लिए था। हमीदा दादी के माता-पिता बचपन में ही चल बसे थे, बस एक भाई था, दोनों भाई-बहन को एक पास में रहने वाले कुम्हार ने सहारा दिया था। उसी के यहां रहकर हमीदा दादी ने चूल्हा और बेल-बूटे बनाना सिखा था। गाँव के ब्याह में घर-घर जाकर सगुन का चूल्हा बनाने जाती थी, किंतु अपने ही एक लौते बेटे के ब्याह में सगुन का चूल्हा नहीं बना पाई। बेटा हैदराबाद में अपनी मर्जी की लड़की से निकाह करके वही बस गया, बाद में पत्नी के साथ पाकिस्तान चला गया। बेटा एक दो बार गौसूदादा, हमीदा दादी के पास मिलने भी आया, दोनों को अपने साथ ले जाना भी चाह रहा था। लेकिन दोनों उनके साथ जाने से मना कर देते हैं। लेकिन हमीदा दादी अपने बेटे की आने की आस लगाये रहती है, और हमेशा आँसू

बहाती रहती है, गौसूदादा के डांटने पर वह शांत हो जाती है और कहती है - " दूर गाँव गया बेटा तो आएगा, जिन्दा की कैसे आस छोड़े मरे की आस छोड़ी जाती है ?"⁴⁶

यहां हमीदा दादी के माध्यम से लेखिका ने निम्नवर्गीय नारी के ममत्व और घर चलाने के लिए किये गये परिश्रम को चित्रित किया है। वह अपना घर-परिवार चलाने के लिए घर-घर जाकर चूल्हा बनाती है, हमीदा के जीवन में खुशियों की एक झलक तक दिखाई नहीं देती। केवल उदासी-ही उदासी परिलक्षित होती है। जिसका एक ही बेटा हो वह भी पास ना हो उस माँ पर क्या बितती है और इस दुःख के साथ जीवन जीने की विवशता एक माँ के अलावा उस दुःख को और कोई समझ नहीं सकता।

घसीटे की माँ और विस्मिल्ला बाई दोनों ही निम्नवर्गीय नारी हैं, जो अपनी जीजीविशा चलाने के लिए अनेकों यत्न करती हैं, घसीटे की माँ मछली बेचकर अपनी रोजी चलाती है। किंतु अपनी बहू के अत्याचारों से पीड़ित रहती हैं, साथ ही कमर के दर्द से भी परेशान रहती हैं। वहीं विस्मिल्लाबाई शादी ब्याह में ढोलक बजाने तथा गीत-गाने का काम करती है।

इस उपन्यास में निम्नवर्गीय नारी जीवन की मूलभूत जरूरतें जैसे भोजन, कपड़ा और रहने के लिए घर तीनों ही एक साथ उपलब्ध नहीं होता है। निम्नवर्ग की स्त्रियों को अपनी प्राथमिक जरूरतों की पूर्ति के लिए घर से बाहर निकलकर काम करना पड़ता है। उन्हें यह सब अपने जीविकोपार्जन के लिए करना पड़ता है, भारत जैसे गरीब देश में इसवर्ग की स्थिति का अंदाजा कोई भी लगा सकता है। निम्नवर्ग की नारियां परिश्रमी, संघर्षशील होती हैं, और पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर अपनी जीविका अपने आप चलाती हैं। परिवार का पेट पालने के लिए दूसरों के खेतों में रात-दिन काम करती हैं, उसके बावजूद अपना और अपने परिवार का भरपूर पेट भरने में असफल रहती हैं। भूख की समस्या से त्रस्त और शारीरिक शोषण से अपमानित होकर मजदूरी कर जीवन व्यतीत करती है। मेहरुनिशा परवेज ने इस उपन्यास में निम्नवर्गीय नारी पात्रों के माध्यम से उनके परिश्रम, संघर्ष को दृढ़ता से प्रस्तुत किया है।

त्यौहार

कहानी में मेहरुनिशा परवेज ने निम्नवर्ग की आर्थिक तंगी को बेहद संवेदनशीलता से प्रस्तुत किया है। यहाँ शानो के पिता की मृत्यु के बाद शानो और उसकी अम्मा बड़े ही दुःखद दिन गुजारते हैं। लेकिन जब ईद आती है, तो उन्हें खुशी के बजाए दुःख अधिक होता है, क्योंकि ईद मनाने के लिए उनके पास पैसे नहीं हैं। शानो की माँ का कहना है कि "ये त्यौहार हमें दूसरों के सामने नंगा करने चले आते हैं।"⁴⁷ शानो ईद पर माँ से नए कपड़े की जिद करती है, लेकिन आर्थिक मजबूरी के कारण वह अपनी पुरानी बनारसी साड़ी से शानो के लिये कपड़े सिलवाना चाहती है। किंतु जकात लेना उन्हें रास नहीं, वह किसी के सामने हाथ नहीं फैलाना चाहती है। उसी दिन डाकिया पार्सल लेकर आता है, जिसमें फूलों वाला साटन का कपड़ा होता है। जिसे मुंगेर से जिया भाई शानो के लिए भेजते हैं। रमजान के महीने में उच्च व मध्यवर्ग के मुसलमान अपनी सालाना कमाई मेसे जकात निकालते हैं, जिसे जरूरत मंद और फकीरों को दिया जाता है। जीया भाई भी हर साल जकात निकालते हैं, तो उसी में से साटन का कपड़ा शानो के लिए भिजवा देते हैं।

अण्डे बेचने वाली खाला पूरे मोहल्ले के हर घर की खबर रखती है। जकात के कपड़े बटोरती है और रोजे-नमाज से दूर रहती है। यहाँ खाला के माध्यम से लेखिका ने गरीब लोगों की मानसिकता का चित्रण किया है – "भई बिना झूठ बोले हमारा रोजगार नहीं चलता, दिन में पच्चीसों झूठ बोलने पड़ते हैं। ऐसे में क्या रोजा रखे, हम गरीबों का तो हर दिन रोजा है।"⁴⁸

अण्डेवाली खाला, अम्मा के यहां आती है, और जकात में मिले वही फूलों वाला साटन का कपड़ा निकाल कर दिखाती है, वह कपड़ा देखकर अम्मा मायूस हो जाती है, क्योंकि उन्हें पता नहीं था कि जिया भाई जकात वाले कपड़े ही उसकी बेटी को भेजते हैं। उन्हें अहसास होता है, कि अब वह भी जकात लेने वालों में शामिल हो गयी है, और दुःख से उसकी आँखें टीम-टीमा जाती है। त्यौहार तो उत्सव मनाने का अवसर होता है, किंतु गरीबी में अपना जीवन व्यतीत करने

वालों के लिए किसी शोक से कम नहीं होता। इस कहानी पर चर्चा करते हुए कीर्ति केसरी लिखती है कि – "ईद मनाने के लिए अम्मा के पास इतने पैसे भी नहीं हैं कि अपनी इकलौती बेटी शानो के लिए कपड़े बनवादे और मिठाई ला दो ग्रामीण समाज जहाँ दयालु, भावुक और मिल जुलकर रहने वाला है उससे कई ज्यादा स्वार्थी, लोभी और क्रूर भी है।"⁴⁹

मेहरुनिशा परवेज जी ने इस कहानी में निम्नवर्गीय मुस्लिम परिवार का बड़ा ही सजीव चित्रण प्रस्तुत किया है। एक तरफ अम्मा अपनी इज्जत बनाये रखने के लिए जकात नहीं लेना चाहती, और दूसरी ओं उसके पास इतनी भी आमदनी नहीं होती कि बिना जकात लिए त्योहार मना सकें। त्योहारों के समय निम्नवर्गीय लोगों की स्थिति कितनी अधिक बद से बदतर हो जाती है, कि अपने बच्चों की छोटी सी छोटी जिद भी पूरी करने में असमर्थ होते हैं, साथ ही इस कहानी में एक स्त्री की पीड़ा और मजबूरी को बखूबी चित्रित किया गया है।

सीढ़ियों का ठेका

कहानी में लेखिका ने भीख मांगने वाली महिलाओं की जिंदगी में होने वाले दुःख तकलीफ को अपनी कहानी का विषय बनाया है। करीमन अपने नाती करीम के साथ रहती है, आर्थिक मजबूरियों के कारण भीख-मांगकर अपना गुजारा करती है। करीम, को नानी करीमन का भीख मांगना पसंद नहीं है, किंतु बहू एक दिन खाना देती है और दूसरे दिन दरवाजा दिखा देती है। इसी कारण हर जुम्मे के दिन करीमन भीख मांगने मस्जिद जाती है, और जो भीख मांगकर लाती है उसे भी बहू के हाथ पर रखना पड़ता है। वहीं कुबडी फातिमा जिसका पति पुलिस में हवलदार था जब तक वह जीवित था, फातिमा फुल कर बोरा हो गई थी, अब जैसे खाली बोरी सा शरीर लटक गया है। एक बेटी भी फूटी किस्मत लिखाकर आई है। जो शादी के एक साल के भीतर ही विधवा हो गयी। अब माँ-बेटी भीख मांगकर अपना गुजारा करती हैं।

करीमन अपना सुख-दुःख कुबड़ी फातिमा के साथ ही साँझा करती थी। अपने पति के प्यार को वह जीवन भर तरसती रही। उसने तो पति के स्नेह को सिवाय डाँट-फटकार, लात-घूँसो के जाना ही नहीं। मरते दम तक उसने करीमन से नफरत ही की। शादी की पहली रात को ही करीमन को धमकाते हुए कहता है – "देख, बीवी कुत्तिया की जात होती हैं ; खाई और घर की रखवाली करती पड़ी रही, ज्यादा चूँ चपड की तो पूरी बत्तीसी झाड़ दूंगा।"⁵⁰

करीमन और फातिमा दोनों बड़ी मस्जिद की सीढ़ियों पर बैठकर भीख मांगती हैं। दोनों में भीख मांगने की प्रतिस्पर्धा है। मस्जिद वाले मौलाना भी किसी को मस्जिद की सीढ़ियों पर खैरात मांगने बैठने नहीं देते थे, बस करीमन को ही सीढ़ियों पर बैठने की इजाजत थी। इसी कारण कुबड़ी फातिमा, करीमन से बहुत चिड़ती थी। जुम्मे के दिन सबसे पहले करीमन खैरात मांगने अपनी जगह पर आकर बैठ जाती। यहां कुछ दिनों से करीमन अक्सर बीमार रहने लगी थी, उसका खाना-पीना भी छूट गया था, उसके बावजूद करीमन सोचती है, कल जुम्मा है खैरात मांगने जरूर जाऊँगी, किंतु जुम्मे के दिन उसकी मृत्यु हो जाती है। मृत्यु की खबर से सब इकट्ठे होने लगे। कफन-दफन के खर्च की चिंता ने सबका रोना भुला दिया। करीम के बेटे जुम्मन ने अपने दादी की पोटली खोली तो, उसमें ढेर सारे चिल्लर निकले, जिसे गिन्ने पर सात रुपये आठ आने थे। आज करीमन की जगह मस्जिद की सीढ़ियों पर कुबड़ी फातिमा बैठी थी, किंतु नमाज के बाद सारे नमाजी उसके जनाजे के साथ कब्रिस्तान चले गये। कुबड़ी फातिमा को लगा जैसे करीमन आज फिर अगूँठा दिखा गई। कुबड़ी फातिमा आज फिर खाली हाथ सीढ़ियों से उठी और सीढ़ियां उतरते-उतरते गुस्से से बड़बड़ाई - "मरी बुढ़िया, तूने एक भी जुम्मा नहीं छोड़ा!"⁵¹ इस कहानी के विषय में कीर्ति केसर लिखती हैं - "मेहरून्निसा परवेज की कहानी 'सीढ़ियों का ठेका' में विधवा, बेसहारा स्त्रियों की आर्थिक परतंत्रता और परिवार में उनकी दुर्दशा का मार्मिक चित्रण मिलता है। करीमन बूढ़ी विधवा है। घर की छत का एक कोना उसे इसलिए मिला हुआ है कि वह मस्जिद की सीढ़ियों पर बैठकर गर्मी की चिलचिलाती धूप में पाँच पैसे पा जाती है।"⁵²

इस कहानी के अंतर्गत मेहरुनिशा परवेज जी ने मुस्लिम निम्नवर्ग की स्त्रियों का चित्रण किया है, जो और कोई साधन-सहयोग ना होने के कारण भीख मांगकर गुजर-बसर करती हैं। करीमन, कुबडी फातिमा जैसी लाचार, बेसहारा औरतें खैरात के दम पर ही अपना गुजारा करती हैं।

शनाख्त

यह निम्नवर्ग की आर्थिक विवशता और लाचार माँ- बेटी की कहानी है, जो अपने ही शराबी पति और पिता के बुरे आचरण और क्रूरता का शिकार होती हैं। बती की माँ अंडे बेचकर किसी तरह अपना गुजारा करती है। बती को "बचपन से ही दुख-अपमान सहने की उसकी आदत पड़ गयी थी, गरीबी के कई नंगे रूप देखे थे। अपनी आँखों के सामने वासना का नंगा नाच देखा था, जब शराब में धुत के सामने उसका बाप उसकी माँ को नंगा करता, तो वह भय से आँखें बंद कर लेती थी। पैसों के लिए खुद माँ को बिकते देखा था। इसी दुख और अपमान की धूप में पलकर उसका शरीर जवान हुआ था।"⁵³ व्यक्ति चाहे जो हो जब निर्धनता घर में दस्तक देती है, तो उदारता कहीं दूर-दूर तक दिखाई नहीं देती, और इसलिए कदाचित "बती ने ईश्वर के रूप को नहीं जाना था, घर में कहीं कोई ईश्वर के रूप को नहीं पूछता था, शायद यह सब गरीब घरों की विवशता है कि ईश्वर को वह नहीं जानते।"⁵⁴ आर्थिक तंगी के कारण अपनी प्राथमिक जरूरतों को पूर्ण करने में इतना उलझकर रह जाते हैं, कि उनको ईश्वर को याद करने का ना तो समय मिल पाता है ना ही सुविधा।

बती के पिता कच्ची शराब का धंधा करते थे। कई बार जेल भी हो आया करते थे, किंतु जेल से छूटने के पश्चात फिर शराब का धंधा शुरू कर देते थे। बती के पिता बती जब पेट में थी, तभी उसकी माँ को किसी दूसरी औरत के लिए छोड़ कर कहीं चले जाते हैं, पर कभी-कभी वह शराब के नशे में धुत उसकी माँ के पास आते हैं और कुछ रुपए दे जाते हैं किंतु जो रुपए देते उसे वसूल भी करते हैं माँ चंद रुपयों के लिए पति द्वारा किए गए सभी अन्याय को सहन करती। एक

दिन पति अपनी गलत दृष्टि बेटी बत्ती पर डालता है, तो माँ चीखते हुए कहती है - "नीच, पापी, कुत्ते, उठ,"⁵⁵ माँ ने गुस्से से उसे बाहर फेंक दिया और उस दिन के बाद फिर कभी घर में आने नहीं दिया। लेखिका इस घटना के बारे में कहते हैं "यही गरीबी थी शायद, जब भूखे पेट से होकर शराब आंखों में उतरती थी, तो पत्नी और बेटी में अंतर नहीं दिखता था।"⁵⁶

उस दिन के बाद से माँ ने पति का जिक्र तक घर में नहीं करती हैं। यहाँ तक कि एक्सीडेंट में मर जाता है और पुलिस उसे शनाख्त करने बुलाती है। वह लाश को पहचानते हुए भी उसे पहचानने से इन्कार कर देती है। अचानक एक दिन साफ-सफाई करते समय एक गुड्डा मिलता है, और उस गुड्डे ने ठीक उसी तरह के कपड़े पहन रखे थे जैसे भूरे रंग का फटा कोट बत्ती के पिता पहना करते थे, माँ उस गुड्डे को लेकर फूट-फूटकर रो पड़ती है और कहती है बत्ती मैंने लाश को पहचान लिया। देख यहाँ पड़ी है उसकी लाश। इस कहानी के बारे में डॉ. कीर्ति केसरी लिखती हैं — "इतना घृणित, इतना हेय, इतना निंदनीय पति भयानक मौत को पाकर भी नारी की करुणा का पात्र बन गया। नारी हृदय कि इस करुणा, क्षमा, उदारता, त्याग और सहनशीलता के कारण ही शायद गाँधीजी स्त्री को महान मानते थे और उसे अहिंसा दर्शन का सच्चा अनुयायी कहते थे।"⁵⁷

इस कहानी में मेहरून्सिसा परवेज जीने गरीबी के कारण उत्पन्न होते शोषण के घिनौने सच को दिखाने का प्रयास किया है।

नया घर

'नया घर' कहानी में लेखिका ने एक गरीब स्त्री की अपना नया घर बनाने की चाह, भ्रष्ट सरकार के कामकाज, साथ ही माँ-बेटी के रागात्मक रिश्ते को दर्शाया है। नया घर कहानी की नायिका 'हलीमन' पति के घर से अपने बेटे के पास रहने यी थी। उसका पति शराबी और अय्याशी था। बेटे के पास आने के पश्चात वह पति की मृत्यु पर ही उसके यहाँ नागपुर जाती है। हलीमन के माध्यम से मेहरून्सिसा जी ने बड़े ही सुन्दर ढंग से भारतीय नारी के चरित्र का वर्णन

किया है – "नागपुरवाला औरत और शराब के पीछे सारा घर तबाह कर गया था। उसकी आँख में पराई औरत चढ़ी हो, उसकी आँख में घरवाली फाँस की तरह चुभती है। बेटे का हाथ पकड़कर जो उसकी सीढ़ियाँ उतरकर आई तो फिर मौत पर ही गई, मौत पर जाना भी नहीं चाहती थी, पर मन नहीं माना, जिसके नाम की चूड़ियाँ पहनती थी, तोड़ने के पहले उसे देख लेना चाहती थी।"⁵⁸ हलीमन बहू के दुर्व्यवहार के कारण बेटे के पास से जगदलपुर आ जाती है। यहाँ उन्हें बड़े बाड़े के मालिक की लड़की सलमा के पास रोज सोने जाती थी। हलीमन अपना घर बनवाने के लिए सरकारी जमीन अलर्ट करवाना चाहती है। अपनी पड़ोसन सिलयागुड़ीन से कहती है, एक दिन अपना घर जरूर बना कर रहूँगी। जिसके लिए वह रोज-रोज सरकारी ऑफिस नवलखा बिल्डिंग जाती है, और वहाँ के चपरासी को चार आने चाय पीने को देती है। हलीमन जानती है बिना किसी मिन्नत-सिफारिश के उसे जमीन नहीं मिलने वाली तभी वहाँ के चपरासी से कहती है – "कब की बैठी हूँ, आज बाजार भी नहीं गई मेरी दरख्वास्त का क्या हुआ ? मुझे जमीन मिल जाएगी तो मैं अपना पेट काटकर पाँच रुपया दूँगी। दो चार मुर्गिया भी पाल लूँगी, कभी-कभी अंडे भी लाकर खिलाया करूँगी। बेटा, अपने सिर पर साया हो तो फिर किसीका क्या डर ?"⁵⁹

यहाँ लेखिका ने सरकारी संस्था का धिनौना सच सामने लाने का प्रयास किया है। जो सरकारी जगह गरीबों को झोपड़ा बनाने के लिए दिया जाता है। उनका अपना अधिकार होता है, वह भी उन्हें कितनी ही कठिनाइयों का सामना करने के बाद मिलता है। आखिरकार कई मुश्किलों के बाद उसे अपना झोपड़ा बनाने के लिए जमीन मिल जाती है।

सिलयागुड़ीन की बेटी सुखिया पाँच साल की है। सूखे की बीमारी के कारण दो साल की लगती है। चल तक नहीं पाती, बस बैठकर की सकती है, खिसकते-खिसकते वह सड़कपर निकल जाती है। इसलिए सिलयागुड़ीन सुखिया को टूटी खाट के पाये से बांधकर काम पर चली जाती है। एक मजबूर माँ, पेट की रोटी के लिए अपनी बेटी को कुत्ते की तरह खाट पर बांधकर काम पर चली जाती है। सुखिया पूरे दिन रिगिंगाती, सूखी रोटी चबाते पड़ी रहती है। सरकारी

अस्पताल में मुफ्त का दूध पाउडर बटता है सिलियागुडीन रोज सुबह जाकर ले आती, और उसको गरम कर बेटी को पिलाती है। सुखिया की एक आँख पूरे शरीर से अधिक निपुण लगती थी। उसकी आँखों में इतना दर्द था कि हलीमा कभी उसकी आँखों की तरफ देखने की हिम्मत नहीं जुटा पाती थी। जैसे पूरी दुनिया का दर्द उन आँखों में समेटे हुए हैं। सुखिया को बेतरतीब स्थिति को देखकर हलीमन कहती है – "अरी आज तेरी सुखिया तो टट्टी करके हाथ-पैर को लीपकर बैठी थी।"⁶⁰ तभी सिलियागुडीन हताश होकर कहती है – "का करुं काकी, मुआ मर गया, इस करम जली को मेरे माथे दे गया, न मरती है न जीती है। मैं गरीबनी कहाँ से घी-दूध जुटाऊँ ? सरकारी अस्पताल का डाकघर बोले हैं, घी-दूध पिलाओ। अरे घी-दूध हमारे पुरखे नहीं खाए तो हम कहाँ से खायें ? का बताऊँ काकी, इसका सूखा रोग जाता ही नहीं।"⁶¹ सिलियागुडीन गरीबी के कारण ही अपनी बेटी सुखिया का पालन-पोषण, इलाज ठीक से नहीं करवा पाती। आखिरकार एक दिन उसकी मृत्यु हो जाती है। उसकी मृत्यु पर बिलख-बिलख कर रोती है, और अपनी गंदी साड़ी के आँचल से पूछते हुए कहती है – "काकी, भूखी गई है री, पहले खाने को दिन-भर माँगती थी पर कल सारा दिन कुछ नहीं खाई। काकी, जब यह पैदा हुई थी न, तब इसका बाप बोलता था, खूब पढ़ाऊँगा, गाँव के स्कूल की मास्टरनी बनाऊँगा, खुद तो मरा ही, अब बेटी को भी बुला लिया।"⁶²

यहां माँ-बेटी के रागात्मक रिश्ते को स्पष्ट देखा जा सकता है, जो गरीबी, लाचारी, बेबसी के कारण कहीं गुम होकर रह गया था, वोभी सिर्फ गरीबी के कारण ही बेटी की देख-भाल ठीक से नहीं कर पाती। वही उसकी मृत्यु पर माँ के भीतर की ममता फूट-फूटकर बिलख उठती है।

हलीमन, सिलियागुडीन से कहती है इसके लिए कफन की व्यवस्था और कब्र खोदने वाले को बुलवाना होगा ना। तभी सिलियागुडीन कहती है पुराने कपड़े में लपेटकर, खुद ही गड्ढा खोदकर मैं उसे दफना दूंगी हाथ में फूटी कौड़ी भी नहीं है। हलीमन से सिलियागुडीन का दुःख देखा नहीं जाता, वह कहती है मेरे होते हुए ऐसा नहीं होगा। सुखिया का अंतिम संस्कार नए कपड़े और

नए कफ़न में ही होगा। वह अपने घर के कागज बंदर नचाने वाले के हाथ सौंपकर उसके बदले में बीस रुपये लेकर वह सुखिया का अंतिम संस्कार करती है।

यहाँ हलीमन का चरित्र बड़ा ही प्रभावशाली बन पड़ा है, जो सचमुच मानवता की जीती जागती मिसाल है। उसके सुनहरे सपनों से बढ़कर उसे दूसरों का दुःख अधिक कीमती लगता है। सिलयागुड़ीन की मदद कर उसी तरह संतुष्टि मिलती है, जैसे उसने अपना नया घर बना लिया हो।

आतंक भरा सुख

लेखिका ने अभाव ग्रस्तता के कारण संघर्ष करते निम्नवर्ग का चित्रण किया है। इस कहानी का नायक बारह-तेरह साल का लड़का है जिसकी मां घर की आर्थिक तंगी के कारण उससे बाहर कमाने जाने के लिए बार-बार बोलती है। कम उम्र के कारण उसे कोई काम पर नहीं रखता। परिवार के लोग दाने-दाने को मोहताज होते हैं। घर में दो छोटे बच्चे हैं जो भूख से तड़पते हैं। भूख तो उसे भी जोर से लगी है, इतने में छोटी बहन बिट्टो आकर बताती हैं कि मोहल्ले में भैंसवाला मारवाड़ी मर गया है, और सभी भैंसवाला मारवाड़ी के यहां जाते हैं और देखते हैं भैंसवाला मारवाड़ी को एक कुर्सी पर बैठा कर उसकी फोटो खींचते हैं। वह दृश्य उसे एकदम भयानक लगता है। वहां से भाग निकलता है, उसका दिल जोर-जोर से धड़कने लगता है वह अपने आप को कोषता है। भैंसवाला मारवाड़ी की फोटो खींचते हुए नहीं देखना चाहिए था। तभी रात में मां चावल बनाकर खिलाती है। वह थोड़ा बहुत खाकर उठ जाता है। रात-भर उसके मन में अजीब ख्याल आते हैं।

सुबह लोग उसकी अर्थी ले जाते हैं। लोग अर्थी के साथ-साथ चलते हैं। तभी दयाशंकर थैली में हाथ डालकर मुट्ठी भर-भर के सिक्का और लाई अर्थी के ऊपर फेंकता है, एक सिक्का उसके पास आकर गिरता है, वह तुरन्त सिक्के को उठा लेता है, और धीरे से सबसे चुपकर मेहतारों की भीड़ में शामिल हो जाता है। यहाँ मेहरुन्निशा परवेज ने गरीब लोगों की मानसिकता का

चित्रण प्रस्तुत किया है – "वह भी आगे-आगे दौड़ने लगा और आसानी से जो भी सिक्का मिलता उसे उठाकर झट से जेब में रखता जा रहा था। उसे मारवाड़ी की लाश से जरा भी डर नहीं लग रहा था, जरा भी यह एहसास नहीं हो रहा था कि वह अर्थी के साथ चल रहा है। कल जो भय उसे सता रहा था, आज उस भय का कहीं अता-पता नहीं था। वह खुश-खुश होकर मोहरों के साथ पैसे उठाता जा रहा था। वह यह भी भूल गया था कि वह किस जात का है और यह काम उसका नहीं है।"⁶³

उसने पैसे गिने डेढ़ रुपए थे। वह सोचता है, इतने पैसे तो उसे दिन भर मेहनत मजदूरी करने के बाद भी नहीं मिलते हैं। जो रात भर लाश का आतंक उसके मन से चल रहा था वह अब खत्म हो गया है। इस कहानी पर चर्चा करते हुए डॉ. विनय लिखते हैं "जातिगत विषमता केवल जातीय संघर्ष की दृष्टि से ही व्यक्ति को नहीं तोड़ती बल्कि जाति का एहसास भी उसके सामने अवरोधक बनकर आ जाता है। 'जात के राउत है, वरना मैं ही कहीं बरतन मांजने पर लग जाती।' यह कथन विवशता को जिस मानसिकता के कारण गहराता है, उससे लड़ना भी व्यापक सामाजिक संघर्ष का ही एक मोर्चा है।.... क्या अजीब स्थिति बना दी है वर्ण संस्कार ने कि घर में खाने के लिए सप्ताह का राशन नहीं और आदमी जातीय है बुलंदियों के भुलावे में सोचता है।"⁶⁴

इस कहानी में लेखिका ने एक निम्नवर्गीय लड़के की मानसिकता का सजीव चित्रण किया है। कि पैसे के सामने व्यक्ति की कोई कीमत नहीं होती। यहां तक की जातिगत अहंकार भी इसके सामने कोई मायने नहीं रखते। जो रात भर लाश के भाय से भयभीत था, वही पैसे बटोरने में इतना मग्न हो जाता है कि भाई को भुला देता है। व्यक्ति की मानसिक स्थिति भी अर्थ पर निर्भर रहती है।

पितृशोक

'पितृशोक' कहानी में लेखिका ने निम्नवर्गीय परिवार में गैर जिम्मेदार पिता के कारण घर की स्थिति कितनी दयनीय बन जाती है। उसका सजीव चित्रण प्रस्तुत किया है। पत्नी सब सहते हुए भी अपना धर्म का पालन करती है, जब से वह बीमार होता है पत्नी सरकारी अस्पताल में जनरल वार्ड में दाखिल कर देती है, लेकिन उसके पास खिलाने के लिए फल और दवाई के पैसे भी नहीं होते। कोई उसकी सहायता तक नहीं करता। जब पति ठीक था, तब भी उसे कोई सुख नहीं था, "दुनिया भर की गंदी औरतों की गलियाँ नापने वाला। हर नौकरी में गबन करके निकला, फिर जेल गया वह। शराब पीकर खाली बोतल-सा इधर-उधर लुढ़कता पड़ा रहता। माँ नंगे पैर उसे खोजती। एक-एक रांड का दरवाजा खटखटाती घूमती। कहीं मिल जाता तो सारे रास्ते चिल्ला-चिल्लाकर गालियाँ बकती लाती और धक्का देकर कमरे में बंद कर देती।"⁶⁵

माँ चार-चार आने की सुपारी, शक्कर आदि ठेले से खरीदती, आधा पाव तेल, कभी भी इससे ज्यादा तेल घर में नहीं आता, जब घर में कोई समान घटता तो आस-पड़ोस से मांगना पड़ता। यही गरीबी थी, जिससे मां संघर्ष कर जीवन बिता रही थी। बेटियाँ भी इसी गंदगी में पली-बढ़ी और कुँवारी मां बन-बनकर किसी खाँसते, दम के रोगियों के पल्ले बांध दी गयी। एक बार विदा हुई तो जिंदा है या मर गयी किसी ने खबर तक नहीं ली।

पिता की गैर जिम्मेदारी के कारण घर की यह हालत होती है। यदि पिता ने अपना कर्तव्य ठीक से निभाया होता तो बेटियाँ किसी की हवस की शिकार नहीं हुई होती। आर्थिक मजबूरी का सामना करते हुए पत्नी को गली के लोगों से धिक्कार, तिरस्कार सहन नहीं करना पड़ता। परिवार में सभी समस्याओं का कारण पिता ही है। जिसके अपने पिता या पति होने का धर्म कभी ठीक से नहीं निभाया, उसे घर की परिस्थिति बद से बदतर बन जाती है।

टोना

टोना' कहानी के अंतर्गत लेखिका ने आदिवासी लोगों के अंधविश्वास तथा दांपत्य जीवन में उत्पन्न संदेश से संबंधित है। नायिका 'खोड़ी' अपनी माँ को काकी कहती है। खोड़ी काकी की लौती संतान है। काकी कच्ची शराब बेचने का धंधा करती है। वह टोना करने और उतारने के लिए प्रसिद्ध है। काकी अपनी बेटी खोड़ी के विवाह के लिए हमेशा परेशान रहती हैं। जिस गाँव में खोड़ी रहती है। वहाँ की लड़की से शादी करने के लिए लड़के वाले खुद दहेज देकर लड़की से विवाह करते हैं। पटेल जो तीतर गाँव का था। दो शादी के बाद भी बच्चे नहीं थे। बच्चे के लिए ही वह तीसरा विवाह करना चाहता है। काकी खोड़ी से कहती है "तीतर गाँव का पटेल आया है तेरे लिए बात करने, पूरे सौ रुपये और एक बकरा देने को तैयार है, समझी?"⁶⁶ तीतर गाँव का पटेल खोड़ी से दुगनी उम्र का है उसके बावजूद काकी खोड़ी का विवाह उसके साथ तय कर देती है, पटेल खोड़ी से तीसरा विवाह कर अपने घर ले जाता है। जहाँ पहले से ही उसकी दो ब्याहता मौजूद होती है। पहली पत्नी जिसकी सकल डरावनी सी लगती है। मझली जो देखने में सुंदर है। किंतु खोड़ी से कम, इसलिए उसे खोड़ी से ईर्ष्या होने लगती है।

खोड़ी को काकी की बात याद आई कि जिन स्त्रियों के सिर में बाल नहीं हो तो वे बहुत 'पंगनीन' अर्थात् टोना करने वाली होती है "बड़ी के सिर में बाल नहीं है उसका राज़ जब खुला तो वह कांप-सी गई, बड़ी पंगनीन (टोन्ही) थी। वह रात को घर से चली जाती और पौ फटने के पहले आदमी का खून पीकर लौटती थी। काकी कहती थी, पंगनीन छत पर से डोरी डालकर सोए आदमी का नाभि से खींचकर खून पीती है, जब आदमी का खून नहीं मिलता तब जानवरों का खून पीती है। पटेल बता रहा था कि पूरे गाँव में तीन-चार पंगनीन है, यह लोग अपना काम निपटाकर खुले मैदान में मस्त होकर खेलती खेलती हैं। इसके मुंह से लार टपकती रहती है। सुनकर रोंगटे खड़े हो गए।"⁶⁷

इस कहानी में लेखिका ने बड़ी के माध्यम से जादू-टोना का बहुत ही अद्भुत दृश्य को प्रस्तुत किया है। आदिवासी अत्यंत भोले स्वभाव के होते हैं। ज्ञान और शिक्षा के अभाव के कारण जादू-टोना, भूत-प्रेत, में अधिक विश्वास रखते हैं और आदिवासियों के पिछड़ेपन का एक कारण अंधविश्वास भी है।

खम्हार गाँव की बाली पूजा की हलचल सब जगह थी। खोड़ी के भीतर भी वहां जाने की लालसा जागती है और उसे बड़े सालो बाद बाली पूजा देखने का मौका मिलता है। पटेल खोड़ी के साथ मझली को भी बाली पूजा देखने भेजता है। खोड़ी पूरे बाजार में घूमती रहती है। वहां खोड़ी को देखकर

एक शहरी बाबू उसका पीछाकर फोटो खींचने लगता है। मझली यह देख जान मूझकर छुप जाती है वह शहरी बाबू की शिकायत वहाँ के पुजारी से करती है। पुजारी उससे बताता है कि वह सरकारी बाबू है और वह मेले की फोटो लेने आया है। वह मझली को ढूँढती है और ना मिलने पर वह अपनी काकी के साथ रात गुजरती है। सुबह मझली ढूँढने का नाटक कर उसके पास आती है। जब पता चलता है कि खोड़ी माँ बनने वाली है। तब पति खुशी से झूम उठता है और सिनेमा देखने शहर जाता है। सिनेमा से पहले नायिका के साथ शहरी बाबू का चित्र देख विचलित हो जाता है। शहर से वह गुस्से में वापस आता है और खोड़ी से कहता है – "आज जगदलपुर से आ रहा हूँ, वहाँ महल के सामने सरकारी सनीमा दिखा रहे थे, मैं भी देखने गया था, साथ के लोग भी गए थे। उसमें तेरी फोटो भी थी, हंसते हुए, पान खाते हुए, ठिठोली करते हुए, बोल तू खम्हार गांव वाली देखने गई थी कि सरकारी सनीमा काम करने गई थी ? उसी बाबू के साथ रात-भर तू रही भी न, मझली सब बता रही थी, अब उस बाबू का बच्चा मेरे सिर मढ़ना चाहती है ?? बोल, हरामजादी बोल...???"**68**

टोना, कहानी में लेखिका ने निःसंतान पटेल तीन सादियाँ करता है जिस के कारण पत्नियों में सौत की जलन जिस सीमा तक पहुँच जाती है। इसका चित्रण यहां देखने को मिलता है। हर पत्नी अपने पति पर पूर्ण अधिकार चाहती है। जब एक स्त्री का अधिकार छिनने के लिए दूसरी स्त्री उसके जीवन में प्रतिद्वन्द्व के रूप में आ जाती है तो उसकी सारी न्यायोचित भावनाएँ भस्म हो जाती है। तब वह सौतन की पीढ़ा से पीड़ित रहती है। उसकी जलन इतनी बढ़ जाती है कि उसे उचित-अनुचित कुछ दिखाई नहीं देता। मंझली ईर्ष्या से उसपर लांछन लगाती है। वह तो माँ नहीं बन सकती। जब खोड़ी माँ बनने वाली है तो शहर के सरकारी बाबू के साथ अवेध संबंध जोड़कर पति को बता देती है। जिससे पति के मन में शंका उत्पन्न हो जाती है। एक पत्नी अपने पति को दूसरी स्त्री के साथ बाँटना नहीं चाहती। यहां मंझली भी दूसरी पत्नी के रूप में आयी थी। फिर भी वह पति को और तीसरी नारी के साथ बाँटना नहीं चाहती है। बच्चे की लालसा में वह खोड़ी से शादी कर लेता है। तब से ही मंझली सुलगती रहती है। जब मौका मिला मंझली गरम लोहा देख प्रहार कर देती है। जिससे उसका पति खोड़ी जिससे उसका पति खोड़ी को छोड़कर हमेशा के लिए सिर्फ उसका हो जाये।

मंझली द्वारा खोड़ी पर लगाया गया झूठा इल्जाम को पति सही मानकर उसपर सन्देह करता है खोड़ी सोचती है। पति के मन पर लगे इस टोने को उतारने का साहस अब उसमें नहीं है। इस कहानी के विषय में मनोहर नलावड़े कहते हैं – "बस्तर संभाग के आदिवासी लोगों के परिवेश में लिखी गई यह कहानी स्त्री के चरित्र पर पड़े शक को गहराती है। स्त्री के शरीर की शुचिता आज भी उसके लिए बेहद जरूरी और समाज के आदरपूर्वक स्थान पाने की पहली शर्त मानी जाती है। यदि इस पर लांछन लगता है तो स्त्री लांछित है। खोड़ी के पति के आँखों में जो शक टोना उभरा उसे निकालना खोड़ी के लिए असंभव था। यहां खोड़ी अपने आपको नियती के हाथों सौंप देती है।"⁶⁹

दूसरी अर्थी

इस कहानी में लेखिका ने एक निम्नवर्गीय परिवार की आर्थिक विपन्नता, लाचारी और बेबसी को अंकित किया है। इस परिवार के प्रमुख 'खोलिवाला' की मृत्यु अचानक हो जाती है। खोलिवाला कि पत्नी बच्चे सभी बेसहारा हो जाते हैं। घर में जो कुछ भी रहता है। सब खोलिवाला के अंतिम संस्कार में खत्म हो जाता है। अब घर में एक दाना भी राशन नहीं बचता घर के ऊपर वह रहता है। इतनी दयनीय स्थिति को देखकर दुःखी हो जाता है। उसने पूछा क्या बात है – "बाबूजी, आटा वगैरह हो तो दो, सब भूखे हैं।"⁷⁰ कमला एकदम भावुक हो उठती है। उसने एक रुपया का सिक्का और आटा निकालकर दे दिया। दूसरे दिन खोलिवाला का मालिक खोली खाली करवाने की धमकी देता है। कमला के सामने शादी वाले घर से दिया हुआ भात ले आती है। करीब दस बजे वह आदमी का दरवाजा खटखटाती है। वहीं वाक्य दोहराती है कुछ आटा वगैरह हो तो दो सब भूखे हैं। वह आदमी ने साफ-साफ कह दिया आटा खतम हो गया कमला।

दूसरे दिन सुबह खोलिवाला की जोर-जोर से रोने की आवाज सुनाई देती है। उसने देखा खोलिवाली अपने पति की मृत्यु पर जैसे रोई थी, आज उसी तरह से रो रही हैं। कमला सारा सामान समेट रही थी। उसे अपने झूठ बोलने का बहुत कष्ट होता है। वह सोचता है कमला को सारा आटा दे आऊ पर उसकी हिम्मत नहीं होती। उसने चौककर देखा खोलिवाला और उसके बच्चे रोते हुए उसी गली से जा रहे हैं। जहाँ से अर्थी ले जाया गया था।

मेहरुन्निसा परवेज जी ने इस कहानी के माध्यम से मजदूर, लाचार, बेसहारा और निम्नवर्गीय लोगों के संघर्ष का चित्रण किया है। यदि परिवार के अन्य लोगों की परिस्थिति कितनी दयनीय हो जाती है और साथ ही समाज की सच्चाई को भी प्रस्तुत किया है कि कोई भी व्यक्ति किसी की सहायता एक दिन करता है तो दूसरे दिन वह भी मना कर देता है। इस सच्चाई को लेखिका ने खोलिवाला के परिवार के माध्यम से बड़े प्रभावशाली ढंग से दर्शाया है।

पाँचवी कब्र

'पाँचवी कब्र' कहानी के माध्यम से मेहरुन्निसा परवेज ने समाज के उस पहलू पर प्रहार किया है जिसे आमतौर पर लोग देखकर भी अनजान बन जाते हैं। यह कहानी मौत से खुशी मिलने की कहानी है। क्योंकि रहमान गाँव में कब्र खोदने का काम करता है उसी से उसके परिवार का भरण-पोषण होता है। रहमान के परिवार वाले भूख से तड़पते हैं। इन लोगों के घर में खुशी तब आती है जब गाँव में किसी की मृत्यु होती है। रहमान कहता है – "चलो, कोई तो मरा, दो महीने से गोشت खाने को नहीं मिला था"⁷¹ वह इस वाक्य में इतना कड़वा सच कहा जाता है। इस कहानी में मेहरुन्निसा परवेज जी ने गरीबी लोगों के घर का सजीव चित्रण किया है – "रात को घर में गोشت पकने की भीनी-भीनी खुशबू उड़ रही थी। बच्ची कफ़न की चादर के लिए लड़ रहे थे। एक कह रहा था, मैं पायजामा बनवाऊँगा। तभी नाजो उछली, चल रें, रहने दे, इसकी रजिया की शादी के लिए शलवार बनाएँगे।"⁷²

रहमान बेटी रजिया की शादी करना चाहता है। लेकिन पैसा न होने से वह सोचता है कि गाँव में कम से कम पाँच मौत हो तब रजिया की शादी हो सकती है। भगवान रहमान की सुन लेता है। अचानक गाँव में हैजे की बीमारी फैलती है। जिससे कई मौते हो जाती है। अब रहमान के घर खुशिया मनाई जाने लगी थी। और रोज-रोज गोشت भी बनने लगा था। अब पाँचवी मौत का इंतजार है।

रहमान की बड़ी बेटी जो मस्जिद के पीछे अंग्रेजी स्कूल के एक लड़के से प्रेम करती है। जिसके प्रेम में पड़कर उसे पूर्ण रूप से समर्पित कर देती है दोनों हमेशा कब्रिस्तान में मिलते थे एक दिन रजिया की माँ उसे ढूँढते ढूँढते वहाँ आ जाती है। लड़का वहाँ से भाग जाता है। माँ को उसके प्रेम के बारे में पता लग जाता है और उसके पैर भारी है, यह जानने के बाद उसकी शादी जल्द से जल्द करवाने की लाखों कोशिशें करती है और यह सब देखकर, रजिया जीना नहीं चाहती।

इस कहानी का नायक 'रहमान' तकियेदार इतना गरीब है कि घर का खर्च किसी की मृत्यु पर मिलने वाले पैसों से ही चलता है। इसी गरीबी में बेटी की शादी करना मुश्किल हो जाता है। इस स्थिति में बाप-बेटी खुद मृत्यु के मुख में जाना चाहते हैं। परंतु रहमान जो किसी और के लिए पाँचवी कब्र तैयार करता है। वह खुद ही उसी कब्र को चुन लेता है और बेटी असफल रह जाती है। इस कहानी के विषय में कमलेश्वर कहते हैं — "अपने समूचे अस्तित्व के लिए एक परिवार संघर्षशील है और दुनिया के सबसे बड़े दुःख मौत के लिए सहज ही विघटित होते मूल्यों की मजबूरी इस कहानी को भरपूर मानवीयता प्रदान करती है।"⁷³

लेखिका ने इस कहानी में प्रेम संबंधों के साथ ही गरीबी के घिनौना सच को दिखाया है। जहाँ मृत्यु पर लोगों के लिए सबसे दुःखद घटना होती है, उससे बढ़कर और कोई दुःखदायक घटना नहीं होती। मौत की इस भीषण भयावहता में भी लोगों का रोजगार जुड़ा होता है। कब्र खोदने वालों के लिए किसी भी मृत्यु त्यौहार जैसी लगती है।

बड़े लोग

यह निम्नवर्ग के गरीब मोहल्ले में रहनेवालों की त्रासदी को प्रस्तुत किया है। जो पटाखे व बारूद का काम करके जीविका चलाते हैं। सुखी आप, सुखी आप की माँ, अम्मा, यह निम्नवर्ग से संबंधित नारी पात्र हैं। सुखी आप की माँ ने एक अनाथ बेसहारा बच्चे बरकत का भी पालन-पोषण किया था। वह उनके साथ रहकर बारूद का सारा काम सीख जाता है। और बड़ा होकर उन लोगों से अलग हो जाता है। गाँव में कहीं भी आतिशबाजी होती है वह पहले जाकर ठेका ले लेता है। यह सब देखकर सुखी आप, अम्मा जल-भून जाती है जिसका पालन-पोषण किया वहीं आज उनके पेट पर लात मार रहा है। अम्मा कहती है "सच जानो अजमेरी के अब्बा, रिज्क का दर्द मुझे है, बासी-कूसी रोटी भी बचा-बचाकर बच्चों को खिला देती हूँ, वरना सब भूखे मरते।"⁷⁴

मोहल्ले के सामने छप्पन कमरे वाली कोठी है जिसके सेठ को उसकी कोठी के सामने झुग्गी-झोपड़ियाँ खटकती है। मोहल्ला शुरू से गरीबों का बसेरा था। उनकी कई पुश्ते वहा रह चुकी थी। कोठी बनने से जहां मोहल्ले की शान बढ़ गयी, वहीं झुग्गी-झोपड़ियाँ कोठी पर दाग लग रही थी। जहाँ जादातर टांगेवाले, बढ़ई, घासवाले और दर्जी रहते थे। कोठी के सेठ ने आस-पास के घर खरीदने शुरू कर दिये थे। किसी को काम में रख लिया, किसी को पैसे देकर मोहल्ले से बाहर कर दिया। मोहल्ला हटाने के लिए सेठ ने एड़ी चोटी का जोर लगा लिया था। गरीब लोग मजबूरीवश कुछ कर नहीं सकते। इसलिए सेठ और गरीब मोहल्लेवालों के बीच तनाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। घर की दर्दनाक परिस्थिति को देखकर अम्मा कहती है – "देखो अजमेरी के अब्बा, हम गरीबों का तो अल्लाह मालिक है। हम गरीबों का तो अल्लाह मालिक है। हम गरीबों का कोई वसीला नहीं, न ऊपर जबर है, न नीचे जेर है मेरी सुनो तो तुम सेठ से मिल लो और खुशामद करके आगे का काम ले लो। सुना है, चार भाइयों का खानदान है। चारों के मिलाकर बीस-बाईस बच्चे तो होंगे ही। ऐसे बड़े खानदानों में तो हर साल शादी;ब्याह का काम मिलता रहता है।"⁷⁵

यहाँ उनकी आर्थिक स्थिति बहुत ही दयनीय बनती हुई दिखाई देती है। आर्थिक सुरक्षा की चाह में अम्मा-अब्बा को अपनी पुश्तैनी घर छप्पन कोठीवाले सेठ को बेचना पड़ता है।

पसेरी भर जवानी

इस कहानी में लेखिका ने एक निम्नवर्गीय गरीब परिवार की आर्थिक समस्या को दिखाया है। कहानी की नायिका 'मोहनी' और उसके पति बॉस के टोकने, और सूप बनाने का काम करते हैं। हाट में अपने सूप और टोकने बेचने जाते हैं। दिन-भर धूप में खड़े रहकर सिर्फ दो ही टोकने बिक पाते हैं। उससे हफ्ते भर घर का खर्च भी नहीं चल सकता भूखे रहने की नौबत आ जाती है। मोहनी अपने दोनों बच्चों की छोटी-छोटी जरूरतों को भी पूरा नहीं कर पाती। इसलिए उसे बहुत अफसोस होता है। इस मशीनी युग में आज इन बसोड़ों की कितनी दुर्दशा हो गयी है, उनकी

व्यावसायिक और आर्थिक दशा और गरीबी का चित्रण लेखिका ने यहां किया है – "घर-घर बिनते टोकने, सूप, आंगन में चरती मुर्गियां छत पर कबूतर, गली में पले हुए सुअर और धूल में लोटते हुए नंगे बच्चे। ओसारे में टोकने के झूले में पड़े बच्चे और टोकना बिनती माथे तक घूंघट किए बुंदेलखंडी गीत गाती कोई औरत। घर-घर में झगड़े, वही समस्या, वही पीर। बच्चों का भूख से कुलराना-बिलखना, बारीश-टूटी छतों को जोड़ना।"⁷⁶

यहां लेखिका ने उनके घरों की दयनीय परिस्थिति तथा जीविकोपार्जन के काम-काज की चर्चा की है। वे बांस के सूप तथा टोकने बनाकर अपने आजीविका चलाते हैं। घर में सुखी रोटी ही मिल पाती है। रानों बगल की काकी से दाल मांगने गई तो वह कहती है – "मां कहती थी भिखमंगी है जब देखो कटोरा उठाए मांगने चली आती है। रोज-रोज मांगना ही है तो सड़क पर क्यों नहीं निकल जाती।"⁷⁷ और कहती है कि "रानों ने आँखें धरती पर गाड़ दी और पैर में पड़े पैजन को हाथ से कुरेदती बोली, "और... बोलती... रही... रस्सी जल गई पर ऐठ नहीं गई। टोकने हाट में नहीं बिकने पर तेरी मां... का जिस्म तो रुपया पसेर बिक जाएगा...उसे ही क्यों नहीं टोकने में सजाकर बेच लेते ...।"⁷⁸

कितने दुःख की बात है कि एक बेटी के सामने उसकी माँ को तिरस्कृत किया जाता है। काकी उसके सामने देह व्यापार जैसी गलत बात करती है। वह यह भी नहीं सोचती कि उसके कोमल मन पर कितना विपरीत प्रभाव पड़ सकता है। वह भी गलत रास्ते पर भटक सकती है और विरोध कर सकती है। किंतु रानो अपनी माँ मोहनी के बारे में काकी के मुँह से यह बात सुनकर अचंभित रह जाती है, और यह बात माँ को बताते समय उसकी जुबान लड़खड़ा जाती है। रानो छोटी सी उम्र में जीवन के सुख-दुःख और गरीबी सभी परिस्थिति को देख समझ रही थी।

एक समय था मोहनी का जीवन कितना खुशहाल था। अपने पति के साथ एक सुखी जीवन व्यतीत कर रही थी अचानक एक दिन गाँव में एक हत्या हुई थी। हत्यारे ने भागते समय छूरा मोहनी के घर छोड़ भागा था। निर्दोष पति पकड़ा गया उसे सजा तो नहीं मिली परंतु उसके

घर की सुख समृद्धि वैभव सब चला गया। इल्जाम झूठा था। तब भी लोग दबी आवाज में उसे दोषी मानते हैं। कोई भरोसा नहीं करता। दिन-ब-दिन घर की आर्थिक स्थिति बिगड़ती चली जाती है। मोहनी के घर की गरीबी को देखकर काकी कहती है। –

"कब तक गरीबी से लड़ती रहेगी री?"

"जब तक हाथ-पैर सलामत हैं।"

"पागल न बन, इस उमर में कोई मर्द औरत पर शक नहीं करता, क्योंकि बाल-बच्चे थोड़े बड़े हो जाते हैं न। अरी ऐसे में ही तो दुनिया देखी जाती है, मरने पर नरक भोगना है सही, तो अभी क्यों सुख नहीं लूट लेती? जरा रानों के बाबा को तो देख। क्या जवान था कि मोहल्ले पड़ोस की औरतें ठंडी आह भरती थी, और अब पूरा नामर्द लगता है।"

"काकी", उससे गुस्से से भड़कते हुए कहा।

"काहे आँखे दिखा रही है, बड़े-बड़ों की नस देखी हूँ, तेरी गरीब देखी नहीं जाती, वह पीली कोठी वाले साहेब कई बार तुम्हें याद करते रहे। हो आया कर। दो-चार रुपये हथेली पर आ जाएंगे?"⁷⁹

पसेरी भर जवानी में गरीबी की अमानवीय अवस्था वर्णित है। भोली-भाली मोहनी को आर्थिक अभावों के कारण ही कितनी विपरीत परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। वह बांस का टोकना व सूप बेचकर पैसे जोड़ती हैं। पर कमाई का यह जरिया उसके परिवार के लिए काफी नहीं होता। काकी जो शुरु से ही देह व्यापार करती है और दूसरों से भी करवाती है, मोहनी से मिलकर समझाती है कि गरीबी से उबरने का यह अच्छा रास्ता है कि पीली कोठी वालों के चहेरे से नकाब हटा दिया है। धनवान, व्यापारी और बड़े-बड़े अधिकारी जो इन गरीबी लाचार स्त्रियों को माध्यम बनाकर उनका शोषण करते हैं। निर्धनता के कारण गरीब ग्रामीण स्त्रियों को किस प्रकार बस्तु बनना पड़ता है। इसे लेखिका ने अपनी इस कहानी में दर्शाया है। जहाँ मोहनी एक

ऐसी स्त्री है जो पर पुरुष पर नज़र डालना भी अपराध समझती है। किंतु काकी द्वारा बताये गये रास्ते पर उसका मन भी डोल जाता है।

अपने हालातों से हार मानकर वह समझौते के लिए तैयार हो जाती है, रात में अचानक उठकर मोहनी पीली-कोठी की ओर जाने के लिए निकलती है। पति की आवाज से उसके पैर जम जाते हैं उसका पूरा शरीर कापने लगता है उसे अपनी भूल का अहसास हो जाता है। पति के पास आकर वह रो-रो कर कहती है, दिन-रात मोहनी मेहनत करने के बावजूद घर में खाने को कुछ नहीं रहता है। इस प्रकार यह कहानी गरीब लाचार कारीगरों के वास्तविक जीवन को प्रस्तुत करती है और उनके साथ होने वाले शोषण का भी परिचय कराती है।

जंगली हिरनी

जंगली हिंदी कहानी में लेखिका ने बस्तर के जंगलों में रहने वाले आदिवासी लोगों के जीवन में प्रेम को नए ढंग से चित्रित किया है साथ ही उनकी सहृदय, सहज, सौम्य स्वभाव को भी दिखाया है। इस कहानी में बुधू की पत्नी 'मेगन' और बेटी 'लच्छो' को प्रमुख रूप से उजागर किया है। कहानी में माँ और बेटी दोनों के जीवन में एक ही घटना की पुनरावृत्त हुई है।

मेगन जंगल में लकड़ियां बिनने जाती है। जिसे बेचकर घर का खर्च निकालती है। तभी उसे गोली की आवाज सुनाई दी उसकी आवाज से लकड़ियां हाथ से छूट जाती है। वहां से भागी, सामने एक गोरा आदमी खड़ा था, इतना गोरा आदमी उसने कभी नहीं देखा था, वह भागने की कोशिश करती उससे पहले उस गोरे आदमी ने उसे पकड़ लिया। उसे डरा-धमकाकर उसके बारे में पृच्छता है – "साहब उसे अजीब नजरों से देख रहा था। उसके भरे-भरे जिस्म पर उसकी नजरें फिसल रही थी।

"चाय पाएंगी?"

" हां, चाय ", और उसने कंधे पर लटकी चमड़े की शीशी से चाय डालकर उसे दी । वह डरते-डरते पी गई ।

" कैसी है। "

" अच्छी है। "

साहब उसे अंदर जंगल के मंदिर में ले गया और जब वह वापस आई तो...? उसके पैर कांप रहे थे, आंखें बोझिल थीं और जब नौ माह बाद लच्छो हुई तो बिल्कुल साहब की तरह गोरी। बुधू को शक ने घर दबोचा, "बात किसकी है ?"

" तोर तो आय ।" आसु टप-टप धरती पर गिराती हुई वह बोली थी।⁸⁰

बुधू गुस्से से कहता है – "माय लुटी , हरामजादी , छिनाल , ठगती है ?" और उसने एक लात उसकी छाती पर दे मारी । वह 'हाय' करके गिर गई पर उसने सहबवाली बात नहीं बताई और बुधू बडबडाता रहा, "न जाने कहां से आ मरते हैं खुले सांड की तरह हमारी इज्जत लूटने ! मैं देखता उसे तो टंगिया से एक बार में ही काट देता ।" उसने जोर से थूक दिया, जैसे साहब के मुंह पर थूक रहा हो ।⁸¹

इस कहानी में आदिवासियों के पिछड़ेपन को बड़े ही गंभीरता से व्यक्त किया है । गाँव की एक साधारण, भोली-भोली स्त्री जो चाय तक का मतलब नहीं जानती । गोरे साहब द्वारा चाय पूछे जाने पर उसकी आवाज में चाय के लिए अजीब-सा आश्चर्य, डर और कंपन थी जो साक्षात् दिखाई देता है और इसी भोले पन का फायदा गोरा साहब उठाता है । चाय के बहाने मन्दिर में ले जाकर उससे शारीरिक संबंध बना लेता है । नौ महीने बाद जब लच्छो का जन्म होता है, तो उसकी सुंदरता से दर्शाया है । नौ महीने बाद जब लच्छो का जन्म होता है, तो उसकी सुंदरता और गोरे रंग को देखकर बुधू को पता चल गया कि वह उसकी बेटी नहीं है । यहाँ लेखिका ने बुधू के माध्यम से उन अंग्रेजों पर करारा व्यंग्य किया है, जो आदिवासियों के सीधे-साधे सरल स्वभाव का फायदा

उठाकर उनके साथ जुल्म करते हैं। बुधू अंग्रेजों को खुले साँड़ के रूप में संबोधित करता है। उसका क्रोध शोषक के प्रति शोषित वर्ग का क्रोध है।

पहाड़ी के ऊपरवाली झोपड़ी में 'धनाय' का विवाह होने वाला है। लच्छो सोचती है। यहाँ के काले-काले लड़के मुझे रास नहीं आते, क्या मुझे मेरी पसंद का लड़का कभी मिलेगा भी? कि मैं कुंवारी ही रह जाऊँगी? धनाय के विवाह की पूरी तैयारी हो चुकी थी। विवाह में आये सभी लोग खा-पीकर लड़के और लड़कियाँ अलग-अलग टोली बनाकर नृत्य आरंभ करते हैं। टोली के बीच लच्छो घुस गई, और नृत्य गान शुरू कर दिया उसकी आवाज गूँज उठी माँ दूर बैठी बेटी को निहार रही थी। मेरी बेटी कितनी सुंदर नृत्य करती है। कितनी सुंदर है। लच्छो तो नाच-नाच कर देवी को खुश कर देना चाहती थी। जिससे उसका मन पसंद प्रियतम उसे मिल जाए और उसे ब्याह कर ले जाये। तभी उसकी नजर एक सुंदर शहरी युवक पर पड़ती है। वह पास बैठी धनाय से पूछती है कि वह कौन है "अरी वही बट झाड़ ऊपर बैठा है।" धनाय ने देखा और मुस्कुरा पड़ी, यह तो स्कूल खोलने यहां आया है। न जाने कौन सी भाषा सिखाएगा और धर्म बिगाड़ेगा।"⁸²

शहर से आया हुआ युवक समाज की सेवा के लिए आदिवासियों के बीच आता है। वह घर-घर जाकर बच्चों को पकड़कर लाकर इमली के पेड़ के नीचे पढ़ता है। लच्छो उसे छुप-छुप कर निहारती है। तभी शहरी की नजर उसपर पड़ती है वह उसके पास जाता है। लच्छो पूछती है तुम कौन हो? वह कहता है – "मैं दूर शहर से आया हूँ, स्कूल खोलने।" "पर परदेसी, इनका धर्म बिगाड़कर क्या करोगे?" "पगली, धर्म नहीं बिगाड़ता पढ़ने से, मैं इन्हें बड़ा आदमी बनना चाहता हूँ बिल्कुल तुम्हारे महाराज की तरह।" "हाय दइया, महाराज की तरह? नहीं परदेसी नहीं। यह पाप है।"⁸³

यह आदिवासियों का सरल हृदय ही है कि वह सोचते हैं कि शहरी पढ़ाई के बहाने उनका धर्म बिगाड़ना चाहता है। उनके बच्चों को धर्म के विरुद्ध पाठ पढ़ायेगा और गलत राह पर ले जायेगा। वह शिक्षा को धर्म विरुद्ध तथा पापपूर्ण आचरण समझते हैं क्योंकि वे सोचते हैं कि राजा

का स्थान प्रजा कभी नहीं ले सकती। इसी सरलता-सहजता के कारण ही उनका शोषण करना, और भी आसान हो जाता है। यहां लच्छो शहरी मास्टर के प्रेम में पड जाती है। शहरी उसे शहर के सपने दिखाता है। उससे ब्याह का वादा करता है। किंतु यहां के गाँव वाले अपने बच्चों को पढ़ने नहीं भेजते, उसका स्कूल नहीं चलता। इसलिए वह शहर वापस चला जाता है। लच्छो के सारे सपने धरे के धरे रह जाते हैं। उसके पास आँसुओं के शिवाय कुछ नहीं बचता वह अपनी माँ से कहती है – "माँ, मेरे मन में तो इतनी आग दहक रही है कि पीड़ा से मेरी आंखें आंसू बरसाने लगती हैं और फिर आग बुझ जाती है। फिर इतना धुआं उठता है माँ की मैं उसमें घुट जाती हूँ। वह रोती रही, फुंकती रही।"⁸⁴

इस कहानी में लेखिका ने आदिवासियों का शोषण करने वालों के रूप में उन पाठ पर्यटकों का भी चित्रण किया है। जो शिकार के लिए जंगलों में आते हैं, पर यहाँ आकर भोली-भाली ग्रामीण आदिवासियों के साथ दुर्व्यवहार व उनका शोषण करते हैं।

इस कहानी का कथ्य एकदम साधारण है किंतु लेखिका ने आदिवासी परिवेश में इतना सुंदर बना दिया है कि लच्छो का दुःख हमें भीतर तक झकझोर देता है 'जंगली हिरनी' आदिवासी लड़कियों के आचरण और प्रेम पर आधारित है। आदिवासी लोग प्रेम को पवित्र एवं सुंदर मानते हैं। किसी प्रकार का प्रतिबंध नहीं लगाते। जिस प्रकार जंगल की हिरनी मुक्त होकर घूमती फिरती है उसी प्रकार आदिवासी लड़कियां जंगल में चौकड़ा मारती घूमती है जो पीड़ा मेगन भुगतती है वही पीड़ा बेटी लच्छो के भी भाग्य में आ जाता है। जंगल की हिरनी जंगल के बाहर नहीं जा सकती उनका जीवन तो जंगल में ही व्यतीत होता है।

कानीबाट

'कानीबाट' इस कहानी में निम्नवर्गीय युवतियों के प्रेम, दर्द तथा कुप्रथाओं का चित्रण किया है। कहानी में दुलेसा, माँ, जलयारी यह सभी निम्नवर्गीय पात्र है। आदिवासी लोग अपनी

बेटियों का विवाह बचपन में ही अपनी मर्जी से तय कर देते हैं। परिस्थितियों के अनुसार आदिवासी यूनियों में भी परिवर्तन देखने को मिलता है। अपने विवाह के विषय में अपनी इच्छा-अनइच्छा को व्यक्त करने लगी है। नायिका 'दुलेसा' के मां-बापू एक युवक रामू को घर लाते हैं, घर जमाई बनाने के लिए। इस बात से दुलेसा धम से धरती पर गीर जाती है। मां उसे समझाती है तेरा बापू बुढ़ा हो रहा है, हमारा अपना बेटा नहीं है ऐसे में कोई सहारा तो चाहिए कौन सा तुझे अभी ब्याह रहे हैं। साल भर उसे जाने परखेंगे उसकी कमाई खाँएंगे, फिर ब्याह करेंगे। दुलेसा ने धमकी भरे शब्दों से कहा "तुझे और बाबा को उसे रखना है, तो रख पर उससे मेरा कोई लेना-देना नहीं।"⁸⁵ दुलेसा को गाँव के लड़के पसंद नहीं वह तो शहरी लड़के से ब्याह करना चाहती है और मन ही मन बड़बड़ाती है – "देख लेना मैं उसके साथ ही नहीं आऊँगी, देखूँगी माँ और बाबा कैसे उसे सौंपते हैं। भला वह इस रुप के लायक है ? देखूँगी पगडंडी को वह कितना पकड़ता है ? पगडंडी के साथ हरेक नहीं चल पाता....पगडंडी हमेशा धोखा देती है, जंगल में पेड़ों के घने झुरमुट में गुम हो जाती है, या पहाड़ी पर जाकर गुम हो जाती हैं, फिर उसे खोजना आसान नहीं होता।"⁸⁶

जलयारी का ब्याह उसके माता-पिता बचपन में ही अतकेर से तय कर देते हैं। अतकेर के पिता जल्द ही ब्याह करने को कह रहे हैं, दुलेसा पर मैं कह देती हूँ ब्याह नहीं करूँगी। मुझे अतकेर पसंद नहीं, मैं चाजेन से प्रेम करती हूँ, और मैं उसके साथ भाग जाऊँगी। मेरा ब्याह बचपन में ही तय कर दिया गया पर मैं इस रिश्ते को नहीं मानती, वह अभी से ही लंपट बूढ़ा दिखता है, बुढ़ापे में तो मेरा नाना लगेगा। दो दंड भोग चुकी हूँ, तीसरे को भी भोगूँगी, किन्तु अतकेर से ब्याह नहीं करूँगी फिर भले ही क्यों ना मुझे अपनी जान देनी पड़े। दुलेसा उसे समझाती है ऐसा मत करना, नही तो गाँववाले तेरा मजाक उड़ाएंगे, तुझे दुःख देंगे। क्या तुम कल दंड सह लोगी। जलयारी कुछ समझने को तैयार नहीं वह तो गुस्से से आग बबुला हो जाती है। आज तक तो दंड ही सहते आई हूँ आगे भी सह लूँगी किन्तु जिस लड़के के लिए मेरे मन में घृणा

ही घृणा है उसके साथ ब्याह कैसे कर सकती हूं। दुलेसा समझ चुकी थी की नदी बाढ़ पर है, अब उसे कुछ भी समझाना व्यर्थ है। सुबह गाँव में जलयारी के दंड की चर्चा ने मन की कई-कई परतों को हिला दिया था। "कई बार कहते हैं लड़कियां इतने कठिन दंड को सह नहीं पाती और बीच में ही हिम्मत हार जाती है। और फिर उसके सिर से प्रेम का भूत उतर जाता है। पहली बार गांववाले भागी हुई लड़की को पकड़कर लाते हैं और उसे खूब मारते हैं, बांध देते हैं। लड़की मौका पाकर फिर भाग जाती है, दूसरी बार उसे पकड़कर लाते हैं और आग से दागते हैं, मारते हैं। तीसरी बार यदि लड़की फिर भाग जाती है तो गांववाले उसे पड़कर लाते हैं और उसका एक पैर चक्के के बीच लाड़ देते हैं या बाँध देते हैं। उसके बाद उसे तेजी से घूमाते हैं। लड़की पीड़ा से चीखती है,— क्षमा मांग लेती है, पर कई लड़कियां इस कष्ट को भी सह जाती है और फिर मौका पाकर भाग जाती है इस बार गांववाले खुद उसे उसके प्रेमी के पास पहुंचा देते हैं।"⁸⁷ इतने कष्ट को सहने के बावजूद जलयारी हार नहीं मानती।

लेखिका ने निम्नवर्गीय आदिवासी लड़कियों के मन में आये परिवर्तन को दिखाया है। विवाह के प्रति उनकी मानसिकता में आए बदलाव को दुलेसा, जलयारी के माध्यम से स्पष्ट किया है। कहानी के माध्यम से स्पष्ट होता है कि परिवर्तन की दिशा में निम्नवर्गीय आदिवासी लड़कियाँ भी अपनी इच्छाओं को व्यक्त करने लगी है। मेहरुन्निसा परवेज जी भी यही चाहती हैं कि उनके जीवन में भी बदलाव आये। जिससे वह भी अपना जीवन खुशी से व्यतीत करें सामाजिक परिस्थितियों में आए परिवर्तन के कारण हर वर्ग में बदलाव आया है। आज निम्नवर्गीय आदिवासी लड़कियां भी सामाजिक कुप्रथाओं की बेटियां तोड़कर वह अपने लिए लड़ने लगी है। चाहे फिर वह ब्याह के लिए लड़के का चुनाव हो या और कुछ वह काफी हद तक सचेत दिखाई देती है।

गुरुमन्त्र

यह निम्नवर्गीय परिवार की कहानी है बेलती, मूँगा, सुकरी तीन बहने हैं। माँ की मृत्यु के पश्चात बेलती अपनी दोनों बहन को संभालती है। उसके बाबा रिक्शा चलाते हैं लेकिन माँ की मृत्यु के पश्चात उसके बाबा ने रात को घर पर आना ही छोड़ दिया था, तीनों बहनें भूख से तड़पती एक कोने में दुबकी बैठी रहती थी। जब उसके दादा दरवाजे पर आकर खाने को कुछ है पूछते हैं तो छोटी बहन मूँगा भूख से तड़प उठती है और जोर-जोर से रोने लगती है जब माँ जिंदा थी तो बाबा भी कुछ पैसे घर में देते थे, नहीं देता तो माँ बाहर से काम कर खाने को ले आती थी। एक दिन अचानक बाबा रात को घर आते हैं, पर वह अकेले नहीं थे साथ में सौतेली माँ को लेकर आते हैं। माँ के स्थान पर किसी और औरत को देखकर तीनों आश्चर्य में पड़ जाए गई थी। रात को बेलता अपनी दोनों बहनों को धमकाती है कि उसको माँ नहीं मौसी बोलना। तीनों उसे मौसी ही बुलाती है।

बाबा आर्थिक सहारा चाहता था। "इसी बात से बाबा शराब पीकर दुखी हो जाता। जब भी बाबा शराब पीता, उसे मरे हुए बेटे का दुख सताता। वह जलती-कोलती लेकर तीनों के पीछे दौड़ता, "चले जाओ मेरे घर से, मेरा धन खाने के लिए जन्मे हो।"⁸⁸ सौतेली माँ बीच में आकर बेटियों को बचाती है। सिर्फ आर्थिक विपन्नता के कारण यहां पिता और बेटियों के बीच के संबंधों में तनाव देखने को मिलता है। उसका बेटा जन्म होते ही मर जाता है। यदि बेटा जिंदा होता है तो कमाकर खिलाता आर्थिक रूप से मदद करता। ऐसा न होने के कारण वह हमेशा बेटियों को कोसता रहता है।

इस कहानी में आर्थिक तंगी के कारण ही पिता द्वारा उपेक्षित बेटियों का चित्रण देखने को मिलता है। निम्नवर्ग के लोग अपनी प्राथमिक जरूरत को पूर्ण करने में भी असफल रहते हैं। यहां तक की दो वक्त की रोटी भी नसीब नहीं होती, और ऐसी स्थिति में अगर घर का कमाने वाला ही

शराब के नशे में रहने लगे तो घर की स्थिति और बिगड़ने लगती है। उसका गुस्सा पिता अपनी बेटियों पर उतरता है।

यहां मौसी अपनी सौतेली बेटी मूँगा का ब्याह कोतवाल के लड़के से करना चाहती है। किंतु मूँगा कहती है वह लड़का मुझे पसंद नहीं है मैं भी अपनी दीदी की तरह किसी मजदूर के साथ भाग जाऊँगी। मौसी बोलती हैं – "क्यों, क्या हुआ री ? भली सूरत तो है। मर्द की सूरत नहीं देखते, कमाई देखते हैं। खेती बाड़ी वाले के घर जा रही है, और क्या चाहिए?"⁸⁹ मौसी फिर उसे दांपत्य रिश्तों के बारे में समझाते हुए कहती है – "मूँगा, अपने से अच्छे मरद से ब्याह नहीं करना चाहिए, अपनी बात नहीं रहती। अपने से कम अच्छे मदद से ब्याह करने से औरत राज करती है रात। जैसे चाहे मरदको नचा सकती है – समझी।"⁹⁰

मौसी एक निम्नवर्गीय भोली-भाली स्त्री होते हुए भी पुरुषों के गुण भली-भाँति समझती है। इसी वजह से एक ओर बिरादरी में अपनी शान बनाये रखने में कामयाब हो जाती है, दूसरी ओर मूँगा को भी बेहतर आर्थिक स्थिति वाले परिवार से संबंध जोड़ देता है। तीन लड़कियों का ब्याह करना आसान नहीं होता लेकिन तेज-तर्रार मौसी ने इसे अपने सूझ-बूझ से आसान बना दिया। मूँगा को दिया गुरुमंत्र केवल सुख और चैन से रहने का था। लड़का चाहे जैसा भी हो मगर वह घर से संपन्न हो। क्योंकि मौसी जानती है, कि निर्धन व्यक्ति को हमेशा ही समझौता करना पड़ता है।

अपनी जमीन

'अपनी जमीन' कहानी में निम्नवर्गीय स्त्री की आर्थिक कठिनाइयों तथा पुत्र शोक की समस्या का अंकन किया है। गोदावरी ने चार बेटियों के बाद पुत्र जनक को जन्म दिया था। उसके आगमन से ही घर में खुशियों ने दस्तक दी थी। जनक के जन्म के बाद ही गोदावरी को उसके घर में सम्मान मिला था, घर में खुशियाँ आई थी। उसके सारे दुःख समाप्त हो गये हैं, नहीं तो सास उठते-बैठते कोसती थी। "उसके बेटे का धन समाप्त करने, खून चूसने कुलच्छनी आई है। घोर

कष्टों से भरी काली रात के बाद सुख का सवेरा हुआ था। पूरे घर में इतनी खुशियां थी सास-ससुर वह खुद इतनी खुश थी कि आंसू रोके नहीं रुक रहे थे। जनक सात साल का हुआ तब उसे पीलिया हो गया। दवा, दारू, झाड़ू, फूँक सब करवाया, लेकिन बुखार नहीं उतरा, डॉक्टर ने हाथ खड़े कर दिये, जनक को ग्वालियर के बड़े अस्पताल ले जाने की सलाह दी। बेटे को बचाने के लिए वह लोग बस में बैठकर शहर के अस्पताल में ले गये, किंतु उसके बावजूद वह जनक को बचा नहीं पाये। बेटे की मृत्यु की खबर उसे पूरी तरह झकझोर जाती है, उसकी पीड़ा का कोई अंत नहीं था। तभी आकर पति ने हताश होकर उसे बताया "गोदावरी, क्या सोच रही है? अब क्या करें ? बच्चे का क्रिया-करम करना पड़ेगा। मैं सुबह से चक्कर काट आया, कोई भी टैक्सीवाला लाश ले जाने को तैयार नहीं है, और जो तैयार होता है, वह पूरे पाँच सौ माँगता है।"⁹¹ किंतु वह कहती है "नहीं, मेरे बेटे को गाँव ले चलो सबको उसका मुँह दिखा दो, यहाँ परदेश में किसके सहारे करेंगे मेरे बेटे को ? क्या परदेश की मिट्टी ही मेरे बेटे के नसीब में है?"⁹²

यहाँ लेखिका ने निम्नवर्गीय स्त्री की वेदना, बेबसी को प्रकट किया है। एक ओर बेटे की मृत्यु का दुःख, दूसरी ओर आर्थिक परेशानियों के कारण वह बेटे की लाश को गाँव ले जाने में असमर्थ है क्योंकि जिंदा व्यक्ति के लिए कम पैसे लगते हैं पर मृत व्यक्ति के अधिक, ऐसे में एक गरीब परिवार के लिए गाँव लाश ले जाना कठिन है। इसलिए वह अपने मृत बेटे की लाश को ले जाने के लिए दूसरा रास्ता अपनाते हैं, जो कठिन है अगर पकड़े गए तो जुर्माना भी भरना पड़ सकता है तभी गोदावरी का पति आकर कहता है – "एक काम हो सकता है, इसे बस में ले चलते हैं, पर तू उसे जीवित बच्चों की तरह गोद में समेटे रहना, रास्ते-भर रोना धोना नहीं और रास्ते भर आँचल ढाँककर उसे दूध पिलाती रहना, जरा भी शक न होने देना, क्योंकि बस में जिन्दा आदमी जाते हैं मरे हुए नहीं। थोड़ा भी शक हुआ, तो हम सब जेल की हवा खायेंगे।"⁹³ वह इस बात के लिए तैयार नहीं होती जिस बच्चे को छाती से लगा कर रखा अब उसकी लाश को कैसे लेकर अभिनय कर सकती थी। एक माँ के लिए कितनी विकट पस्थिति थी, पति समझता है – "शांत हो

जा गोदावरी, अकल से काम ले, इस तरह जनक को लेकर गाँव जा सकेंगे क्या ? सोच ले, बिना जनक के लौटना पड़ेगा, और ज्यों-ज्यों देर होगी, समस्या और विकट हो जाएगी। अभी ताजी-ताजी बात है, मेरी बात मान ले।"⁹⁴ अपने बेटे को अपनी जमीन देने के लिए वह पति की बात मानकर बस में जनक को लेकर बैठ जाती है। वह अपने आँसुओं को भीतर ही भीतर पी लेती है। एक यात्री ने हमदर्दी दिखायी। "अजी बच्चों का मुँह सूख रहा होगा, पानी-वानी तो पिला दो!" – "नहीं हुजूर, गरीब के बच्चे हैं, इन्हें भूख प्यास नहीं लगती।"⁹⁵

यात्रा इतनी कठिन होगी वह कभी सोच भी नहीं सकती है, गाँव पहुंचकर जैसे ही जनक को पति के हाथ सौंपती है उसे पहली बार अपनी गोद उजड़ने का एहसास होता है, उसकी सबर का बांध टूट जाता है और वह फूट-फूट कर रोने लगती है। किंतु बेटे को अपनी जमीन देने के सुख से वह निश्चित हो जाती है क्योंकि इसके लिए उन्हें कितनी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। आर्थिक अभावों के कारण ही वह सरकारी अस्पताल से ही इलाज करवा सकते थे इसलिए वह बेटे खो बैठते हैं।

पत्थर वाली गली

यह कहानी निम्नवर्गीय मुस्लिम परिवारों के पिछड़ेपन आर्थिक विपन्नता तथा सामाजिक समस्याओं को प्रस्तुत किया है। इस कहानी में जेबा, जेबा की खाला, माँ का शाईस्ता आदि पात्र निम्नवर्ग से संबंधित हैं, जिनकी रोजी-रोटी सिर्फ अपनी दुकानों पर ही निर्भर है।

जेबा की माँ चूड़ियाँ बेचकर अपना घर खर्च चलती है। जेब के पिता जुआरी-शराबी थे और अफीम, चावल आदि की तस्करी करते थे। एक रात वह घर अपने दोस्त को लेकर आते हैं और शराब के नशे में अपने दोस्त से बोले – "मेरी हर चीज में तुम्हारा हिस्सा है। यहाँ तक कि मेरी बीवी में भी... हम दिन बाँट लेंगे, जब मैं बाहर रहूँ तो तुम यहाँ रहो, जब तुम बाहर रहो तो मैं इसके साथ रहूँगा।"⁹⁶ पिता को तरस्करी के धंधे के कारण जेल जाना पड़ा था। उसी बीच अम्मा

पिता के दोस्त से गर्भवती हो जाती है, पिता जब जेल से जब लौटते हैं उसे बात का पता चलता है तो गुस्से में से आग बबूला होकर कहता है –"सुन री छिनाल और, तूने मेरे साथ धोखा किया, देख लेना इसका नतीजा जल्दी ही भूगत लेगी । तूने मेरी नस्ल खराब कर दी ।" औरत की जात साली मुर्गी की जात है, जिसके घर दो दिन बाँध दो, दाना दे दो, वह उसी का आँगन पहचानने लगती है ।"⁹⁷

व्यक्ति शराब के नशे में सारी हदे पारकर देता है क्या बोल रहा है ? क्या कर रहा है ? उसे खुद कुछ पता नहीं होता कभी-कभी उसकी इसी बेपरवाही के कारण घर-परिवार सब बिखर जाता है उसका सीधा प्रभाव पत्नी और बच्चों पर पड़ता है । पति का निंदनीय, अपेक्षापूर्ण व्यवहार पत्नी को अकुलाहट से भर देता है । पति के दुर्व्यवहार के कारण ही वह दूसरे पुरुष के समीप होने से हिचकती नहीं। यहां लेखिका ने पति की बेपरवाही, शराब की लत, और पति का तिरस्कार पत्नी की छटपटाहटपूर्ण जीवन को अंकित किया है। जेबा की माँ एक दिन, रात के अंधेरे में पति के दोस्त के साथ घर छोड़ कर चली जाती है।

जेबा आपनी खाला और दादा के साथ रहती है। माँ के बाद चूड़ियाँ बेचने का काम खाला ने संभाल लिया था और जेबा भी अब चूड़ियाँ पहनाने में खाला की सहायता करती है ।

जेब की सहेली शाईस्ता भी अपने पिता की दुकान संभालने लगी थी । दरगाह के सामने इलायची दाने और चढ़ावे की चादर की दुकान लगती है । सुबह अंधेरे में जब दरगाह खुलती तो वह चढ़ाये हुए चादर और इलायची दाने बीन लाती, फिर साफ सुथरा करके फिर उसे बेचती थी । शाईस्ता पाँच साल की छोटी सी उम्र में ही काम करने लगी थी । इतनी कम उम्र में वह काम में इतनी निपुण हो गई थी । कहते हैं ना गरीबी इन्सान को सब कुछ सिखा देती है । जिस उम्र में बच्चे पढ़ते -लिखते हैं उस उम्र में शाईस्ता घर की आर्थिक तंगी के कारण दुकान पर बैठने लगी थी ।

एक दिन जेबा मौलाना की बहू को चूड़ियाँ पहनाकर लौट रही थी, रास्ते में सुन-सान रास्ते से गुजर रही थी, अकेली होने के कारण वह घबरा जाती है और जल्दी-जल्दी चलने लगती है। सुन-सान रास्ते का फायदा उठाकर नुक्कड़ वाला दुकानदार पकड़ लेता है। वह भागने की कोशिश करती है किंतु असमर्थ होती है। दुकानदार जबरदस्ती उसका शोषण करता है, जेबा पत्थर वाली गली में पत्थर सी बन जाती है। घर पहुंचकर जेबा रो-रोकर इस हादसे के बारे में अपने दादा और खाला को बताती है। दादा इस सदमें को बर्दाश्त नहीं कर पाते और प्राण त्याग देते हैं। इतनी कम उम्र की गरीब लड़कियाँ समाज में व्याप्त इन जैसे भेड़ियों की शिकार होते रहेंगी और लोग-लाज के कारण वह मुंह से ऊफ तक नहीं कर पाती।

गरीब तथा मलिन बस्तियों में रहने वाले परिवारों में लड़कियों की स्थिति अधिक खराब है लड़कियों को अकेले घर को बाहर भेजने में डर लगा रहता है। घरों में भी उनका स्थान निम्नतम है सबसे अधिक चिंतावाली बात यह है की लड़कियों को अब समाज में बसे भेड़ियों से खतरा बढ़ता जा रहा है लड़कियों के साथ शोषण का समाचार अक्सर सुनने को मिल जाता है। लड़कियों के घरों या आस-पास बसने वाले नर पिशाचों से खतरा बढ़ता जा रहा है। ऐसे लोगों के विरुद्ध तात्कालिक कठोर कार्रवाही कर के उन्हें कठोर से कठोर दंड दिया जाना चाहिए। लेकिन विडंबना है कि ऐसे अपराधी कानून व्यवस्था का मजाक उड़ाते हुए घूम रहे हैं।

इस कहानी पर चर्चा करते हुए डॉ. सरिताकुमार लिखती है – "इसमें सेक्स के बलात्कारी स्वरूप को उजागर करने का यत्न किया गया है और इसके अतिरिक्त नारी के बारे में उस दृष्टिकोण को निरूपित किया है जिसके अनुसार वह केवल भोग की वस्तु है।"⁹⁸

मेहरुनिसा परवेज़ जी ने इस कहानी में नारी की असुरक्षा मूल सहानुभूति है इसी असुरक्षा के कारण समाज में नारी के साथ कुकर्म हो रहा है। जिसका प्रभाव पूरे नारी वर्ग पर पड़ता है।

ओढ़ना

कहानी 'रानी' का परिवार बाछड़ा जाति का है जिसके कारण यहां की लड़कियों को पैसों के लिए परंपरा के अनुसार धंधा (देह व्यापार) न चाहते हुए भी करना पड़ता है यहा आर्थिक दृष्टि से ये लोग परिपूर्ण नहीं है।

बाँछड़ा जाति में माता-पिता अपने किसी एक बेटी को अनिवार्य रूप से दलदल में ढकेल देते हैं उनकी कमाई से खुद बैठकर खाते हैं। दुःख-सुख की बात तो यह है कि जिस दिन लड़की पहली बार धंधे पर बैठती है उस दिन उसके माता-पिता भाई उत्सव मनाते हैं बिरादरी वालों को भोज करते हैं कहानी की नायिका रानी धंधे पर बैठना नहीं चाहती वह तो ब्याह कर अपना घर बसाना चाहती है। वह अपने परिवार से विद्रोह करती है – "बाबू' पैसे लौटा दे उसके, मैं किसी के लिए भी नहीं बैठूंगी।" एक बारगी जैसे बंदूक छूट गई हो, सबके चेहरों पर सन्नाटा-सा खिच गया, सबने सकते में भरकर उसे घूरकर देखा, जैसे कह रहे हों, 'छोरी में इतना दम ?' सब चाह रहे थे कि वह भीतर चली जाए पर वह भीतर नहीं गई, वही दरवाजे से टिककर खड़ी रही। उसकी ऐंठ से भीतर-बाहर जैसे हड़कंप-सा मच गया सबकी निगाहें उस पर टिक गई, जैसे सब तीर से भेज रहे हों। "जा भीतर चली जा, 'बाबू गुस्सा हुआ, "बड़ों का सामना करती है, मर्दों के बीच आती है ? 'बात मेरी चल रही है बोलना तो पड़ेगा ही, "वह रोष में बल-सा खाती हुई बोली।"⁹⁹

वह बगावत करती है मुझे यह सब पसंद नहीं है। किंतु अनारो बुआ उसे समझाती है – "अरी, रोती क्यों है ? डाल ले ओढ़ना। पहली बार और अन्तिम बार फिर तो राम कसम जिन्दगी भर का यह झंझट छूट जाएगा। तू, हम धंधेवाली की बिरादरी में आ जाएगी। घूँघट करना, सिर ढकना यह तो सब बहुओं का काम है आज से तो तू इस घर की मालकिन हो जायेगी, सबको पालने वाली मुखिया तू देवी माँ की तरह सबका कल्याण करेगी।"¹⁰⁰ जब वह धंधा करने से इनकार कर देती है तो उसे उसके मामा के हाथों पाँच हजार रुपयों में बेच दिया जाता है। वह कहती है – "मैं कोई भैंस हूँ, जो जब जहां मर्जी आए बेच दी, कभी चेतन से पैसा खा लिया, अब

मामा से पैसे ले रहे हैं और यही पांच के दस मामा मुझसे कमाएगा...." ¹⁰¹ मामा उसे लेने के लिए आ जाते हैं। दूसरे दिन वह रानी को लिवाकर मन्दसौर जाने वाले होते हैं। उसी रात रानी घर के पीछे की खिड़की से बहुत तेजी से भागती है क्योंकि उसे मालूम है पकड़ी गयी तो मार दी जाऊँगी। वह भागते-भागते भैरव के घर पहुंच जाती है। जैसे ही वह भैरव के दरवाजे की कुंडी खटखटाने के लिए हाथ बढ़ाती है, फिर ठहर जाती है, कुछ सोचकर जल्दी से सिर पर ओढ़ना ओढ़ लेती है, बिल्कुल सुहागानों की भाँती।

रूढ़ियों की बेडियो में जकड़ी नारी आज एक-एक करके उन्हें तोड़ने में कामयाब हो रही है। शिक्षा और पाश्चात्य-सभ्यता के प्रभाव ने नारी को अपनी स्थिति का पूर्ण परिचय करा दिया है। उसके बावजूद वह पूरी तरह से बंधनों से मुक्त नहीं हो पाई है। इसके लिए कई हद तक वह खुद जिम्मेदार है क्योंकि वह पुरुष के अधीन रहना चाहती है। कहानी में रानी का भाई अपनी पत्नी को सिर्फ इसलिए मारता है कि उसने घर के बाहर के आदमी से बात करती है। रानी अपने भाभी से कहती है कि अपनी नाराजगी जाहिर करने के लिए सात रातों तक वह भी अपने पति से बात ना करें। किन्तु भाभी में इतनी हिम्मत कहा। रानी रूढ़ियों में जकड़ी स्त्रियों के बारे में कहती है – ".... औरत की जात मार खाने के लिए ही होती है मरद कितना भी जुल्म करें, बदले में उसे रूठना भी नहीं आता पति मार-मार लकर प्राण ले लेगा और वह उनके लिए करवा चौथ का व्रत करेंगी...." ¹⁰²

बाँछड़ा समाज के रीति-रिवाज कैसे इतनी लड़कियों के सपने इच्छाओं का खून कर रहे हैं। इस समाज में लड़कियों के साथ कितना क्रूर व्यवहार होता है। मेहरुन्निसा परवेज ने बड़ी बारीकी से प्रश्न चिन्ह के रूप में हमारे समक्ष रखा है साथ ही रानी के माध्यम से लेखिका ने बछड़ा जाति के स्त्री विषयक परंपराओं का विरोध दिखाया है। जो अपनी इच्छा और सपनों को पहचानती हैं। वह समझ चुकी है कि यदि अपने ऊपर हो रहे अत्याचारों या कुकर्मों को रोकना है, तो सदियों से चले आ रहे परंपराओं, नियमों को फांदकर ऊपर उठना होगा, तभी समाज परिवार में खुलकर

साँस लेने की जगह मिलेगी अन्यथा जीवन पुरानी परंपराओं रूढ़ियों तथा नियमों से ही चलता रहेगा ।

जुगनू

कहानी में संपन्न वर्ग के पुरुष द्वारा निम्नवर्ग के स्त्रियों पर हो रहे अत्याचार का वर्णन किया गया है । गुलशन पीरू बावर्ची की बेटी है, जो थोड़ी पागल है । पीरू तारीक के घर का बावर्ची है । तारीक शहर में पढ़ता है जब भी वह छुट्टियों में गाँव आता है गुलशन को अपने कमरे में बुलवाता है । गुलशन दिमाग से कमजोर है, इसलिए पेट से है वह जान नहीं पाती । किंतु जब उसका पेट दिखने लगता है तो पीरू समझ जाता है पिता के लिए समस्या बन जाती है । इसलिए पीरू बेटी को कुएं से पानी लाने को कहता है और फिर पीछे से उसे धक्का मार देता है । सुबह अफवाह फैलादी जाती है कि गुलशन ने आत्महत्या कर ली है । एक मजबूर, गरीब पिता की वेदना को लेखिका ने पीरू बावर्ची के माध्यम से प्रस्तुत किया है – "मालिक, हम गरीब नौकर चाकर, दास-दासियों का जन्म ही मालिक के लिए होता है । पुराने समय से ही मालिक, हम लोग मालिक की खुशी पर निछावर होते रहे, हमारा तो वही देवता, वही खुदा है । माई-बाप बड़े लोगों की हम बदनसीबों पर बहुत-सी कृपा इनायत होती है, ऐसी ही ढेर सारी उनकी दी हुई बख्शीशों में से हमारी बहू-बेटियों की इज्जत लेना भी हम लोग अपनी खुशनसीबी और उनका करम मानते आए हैं । हम गरीबों के घर की बहू बेटियां पैदा हो मालिक को खुश करने, उनकी हवस के लिए ही जन्म लेती है ।"¹⁰³

उसका बयान जिसने सुना वह अपने आँसू रोक नहीं पाया । तारीक की फूफी ने उसे अपने खानदान, लोग लाज, रुतबे का हवाला देकर उसके सामने विनती कर बयान बदलवा दिया । वह अपनी बेटी के पागलपन से परेशान होकर उसे कुएं में धकेल देता है । इस हादसे से तारीक का नाम पूरी तरह से हटा लिया गया ।

मेहरुनिसा ने इस कहानी में निम्न वर्ग लोगों की बेबसी का चित्रण किया है। गरीब परिवार में जन्म लेना ही गुलशन के लिए अभिशाप बन जाता है। पिता के लिए गरीब होना उसका दुर्भाग्य बन जाता है। बेटी का कुँवारी माँ होना उसके लिए समस्या बन गई थी, इसलिए मालिक को बचाने के लिए वह स्वयं अपनी बेटी की बलि चढ़ा देता है। एक गरीब लड़की मालिक की हवस का शिकार तो हो सकती है लेकिन उनके बच्चों की माँ नहीं बन सकती।

देहरी के खातिर

इस कहानी में लेखिका ने नायिका 'पापा' नानी आया तथा काकी के चरित्रों द्वारा निम्नवर्ग का वर्णन किया है। कहानी में गरीबी का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है। "फूस की छत से ढंके घरों वाला मोहल्ला था उसका। घरों के सामने चरती मुर्गियाँ, मिट्टी के ताजे लिपे-पुते ओसारे, कोठार में बकरियों की हेड की हेड, ताजी माटी की गन्ध से भरे कमरे, नंगे बच्चों की सैलानी जमात, जिन्हें विरासत में माँ-बाप का पेशा और लिजलिजी गरीबी ढोनी थी।"¹⁰⁴ पापा, द्वारा लेखिका ने गरीब लोगों के जीवन की परिस्थिति का उल्लेख किया है। जब वह छोटी थी तो मोहल्ले की लड़कियों के साथ जंगल जाती थी। सागौन के पेड़ के नीचे की धरती में होता है बोड़ा। उसे गरीबों का मांस कहते हैं। क्योंकि यह मांस की तरह ही स्वादिष्ट होता है। "बरसात में जहाँ ढोल-डांगर के लिए पर्याप्त चारा हो जाता है, वहीं गरीबों के लिए साग भी पर्याप्त मात्रा में अपने आप हो जाता है। पूरी बरसात हर घर में साग रंधता है, वरना गर्मियों में तो पेंज नमक से चखकर खानी पड़ती है। चरौटे की भाजी, छाती, बोड़ा, मुनगे की नई भाजी, बांस का वासता, जहाँ जंगल अपने आप उगाकर देता है, वही हर छोटे-छोटे नाले में, खेतों में छोटी-छोटी मछलियाँ पैदा हो जाती थीं। जो बच्चे पहले सारा सारा दिन ऊधम, मस्ती में रहते थे। अब वही दिन-भर नाले और खेतों में पानी को बांधकर जाल लगाकर सारा-सारा दिन मछली पकड़ते रहते हैं। लड़कियों का झुंड का झुंड सारा-सारा दिन जंगल में बोड़ा, छाती, भाजी, वासता और जामुन के

लिए भटकता था। जंगल भी बरसात में जी भर कर गरीबों को दान करता था सही बात तो यह थी कि जंगल के रहमो-करम पर ही बदनसीब गरीबों की गुजर थी।"¹⁰⁵

नानी आया 'पापा' की सौतेली माँ थी। नानी आया अपने से दूगनी उम्र के व्यक्ति से ब्याह कर लेती है। पति रिक्शा चलता है और जितना कमाता है उतना शराब व जुए में उड़ा देता है। अतः घर की विपन्न आर्थिक परिस्थिति के सामने विवश होकर देह व्यापार का मार्ग अपना लेती है। अपनी सौतेली बेटी पापा को भी अपने नक्शे कदम पर चलाती है। बेटी अपने पिता से कुछ नहीं बताती। स्पष्ट है कि पेट पालने का सवाल सबसे बड़ा सवाल है। पापा, नानी आया के संगत में देह व्यापार करती है। लेकिन पापा गाँव के मास्टर से प्रेम कर बैठती है और उससे रोज मिलने जाने लगी। नानी आया, पापा को समझती है – "क्यों री तू उस मास्टर से रोज मिलने लगी है ! नानी आया ने उसे रंगे हाथों पकड़ा "कहीं प्यार तो नहीं कर बैठी ? जानती है वह प्यार में फंसा कर तेरी जिन्दगी बरबाद करेगा। तुझे घर नहीं बैठाएगा, इतनी हिम्मत शहर वालों में नहीं है। हंडी चाटेंगे, पर घर के पलंग पर बिरादरी की बराबर घराने की लड़की को ही बैठाएंगे।"¹⁰⁶ नानी आया से डरकर वह चुप रह जाती है, और डर के छुपकर मास्टर के कमरे पर चली जाती है। जब वह मास्टर से गर्भवती होती है, लेकिन मास्टर पेट में पल रहे बच्चे को अपना मानने से इनकार कर देता है।

पापा के गर्भवती होने की खबर जब उसके पिता को लगती है, तो उसे मारकर घर से निकाल देता है। आश्रयहीन पापा तलहटी में रहने वाली अपनी काकी के घर जाती है। काका-काकी की अपनी कोई संतान नहीं है। काकी को बुढ़ापे में किसी सहारे की जरूरत तो थी। काकी का शरीर थकने लगा था। काकी बाजार में चूड़ी बेचती थी। काक- काकी उसे अपने बच्चों की तरह ही दुलार करते हैं। बच्चे के जन्म के बाद से ही काका का स्वभाव उसके प्रति बदलने लगता है। काका की हरकतों से वह जान जाती है – "और मन ही मन हैरान थी, चकित थी कि लड़की का रिश्ता मानने वाले इस काका के मन में यह पाप कैसे उठा है ? कही काकी ने देख लिया तो ?

भरी दोपहरी में बच्चे के साथ घर से बाहर कर देगी, तब वह बच्चे को लेकर कहां जाएगी ? बाप ने तो घर से निकल ही दिया है।"¹⁰⁷ वह काका से कई दिनों से बचती आई है, पर एक दिन काका उसे अकेला पाकर आ घेरता है। किंतु काकी, काका को कुल्हाड़ी से मारकर उसकी हत्या कर देती है। काकी कहती है – "मैं कई दिनों से टोह ले रही थी, भला औरत की आंख के नीचे आदमी के करम छुपते हैं ? जिसे लड़की समझ कर रखा उसी के साथ पाप करना चाहता था?"¹⁰⁸ पति की बेशर्मी के सामने काकी अपने आप को भूल जाती है और बेटी की रक्षा करना ही अपना कर्तव्य समझती है। पिता समान काका के दुर्व्यवहार से बेटी की रक्षा करती है काका की अपने हरकतों के कारण हत्या हो जाती है। पापा बेटे के लिए छत व रोटी का सहारा हमेशा बना रहे इसके लिए पापा काका की हत्या का आरोप अपने ऊपर ले लेती है जेल में रहकर उसे ऐसा लगा मानो वह इतने वर्षों तक रहकर पवित्र हो चुकी है, और अब केवल माँ बनकर रह गयी है।

यहां लेखिका ने निम्नवर्गीय स्त्री को किस प्रकार वस्तु बनाना पड़ता है उसका वर्णन किया गया है, जो अपने तथा अपने परिवार के लिए मेहनत-मजदूरी तथा अन्य पुरुषों के साथ जिस्म का धंधा करती हुई दिखाई देती है। वे आर्थिक रूप से सक्षम नहीं, इसलिए उन्हें काम करने की विवशता है तथा वह पुरुष पर द्वारा भी प्रताड़ित होती रहती हैं। इसके कारण उन्हें अपने पैरों पर खड़ा होना ही पड़ता है।

घूरे का बिरवा

इसमें एक अपाहिज लड़के और गरीब माँ की कहानी है। किसानवा के हाथ-पैर नहीं हैं, उसकी माँ अपने अपाहिज बेटे और अपनी गरीबी के कारण हताश और दुःखी है। इसी झुँझलाहट में वह हमेशा किसानवा को चीखती-चिल्लाती और कोशती रहती है। भोपाल में जब गैस फैली थी, उस दुर्घटना में किसानवा के पिता की मृत्यु हो जाती है। वह बैंड बजाता था। पिता की मृत्यु के पश्चात ही घर की खुशी कहीं चली गयी, और दरिद्रता ने घर में पहेरा डाल रखा है। अब तो माँ पेट पालने के लिए गुलेल, पतंग, चकरी बनाकर घर चलती है। नायिका किसानवा की हालत

देखकर उसको सरकारी मदद की सलाह देती है। जिससे किसनवा का जीवन जीने की लालसा जन्मे। माँ कहती है – यह तो जन्म से ही ऐसा ठूँठ सा है। सबने कहा, मर जाएगा, पर यह नहीं मारा। लोगों ने कहा, कहीं धूरे पर फेंक दो, पर मेरी ममता ने फेंकने नहीं दिया।"¹⁰⁹

सरकारी मदद के नाम पर दस हजार रुपये की मदद मिलती है। माँ अब दुकान खरीद लेती है। माँ चौराहे की जगह दूकान में बैठकर चरखा-पतंग गुलेल खिलौने बनाती बेचती हैं। अब माँ किसनवा को कोसने, गाली-गलौच की जगह पर प्यार दुलार मिलने लगता है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद, देश की समृद्धि में उच्च वर्ग के लोग अधिक लाभ उठा पाये हैं। इससे निम्नवर्ग के लोग और गरीब होते जा रहे हैं। एक ओर उच्चवर्ग भोग-विलास, सुख-सुविधा के लिए पानी की तरह पैसे बहा रहा है। वहीं दूसरी ओर गरीब दाने-दाने के लिए मोहताज है।

आर्थिक विषमता की स्थिति और उसके परिणाम को मेहरुन्निसा परवेज ने अपनी कहानी में उजागर किया है। आर्थिक दबाव के कारण से आपसी संबंधों में बिखराव उत्पन्न हो रहे हैं। 'धूरे का बिरवा' कहानी में किसनवा जन्म से ही अपाहिज है। माँ उसे दिन-रात चढ़ती-चिल्लाती रहती है। यह उसके ममताहीन होने का इशारा नहीं है, बल्कि बेटे के अपाहिज जीवन एवं पेट की भूख ने उन्हें इतना चिड़चिड़ा बना दिया है। लेखिका लिखती है कि "किसनवा की अम्मा एक सगी माँ है, पर बेटे के अपाहिज जीवन ने, जिंदगी की कड़वाहट ने, जिंदगी की सच्चाइयों ने उसे चिड़चिड़ा-सा बना दिया है। पेट की भूख तो सबको लगती है; इस पेट की आग ही तो है जो इनसान को बड़े-बड़े गुनाह करने पर मजबूर करती है। यह मनुष्य का सत्य है, मानव की सच्चाई है। लाचार्य इनसान को क्या से क्या बना देती है। तो फिर इनसान का दुःख में चिड़चिड़ा और कर्कश बनना मामूली बात है।"¹¹⁰

जगार

कहानी की बुधिया, गोमती, कमला, लक्ष्मी, पार्वती और रयती आदि निम्नवर्ग से संबंधित पात्र है। सभी स्त्री पात्रों में आर्थिक अभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है, साथ ही सब गाँव के मुखिया चौधरी से शोषित भी है। समाज में निम्नवर्ग की कोई प्रतिष्ठा नहीं होती। वे अपने लिए नहीं बल्कि उच्च वर्ग के लिए बने होते हैं। उच्चवर्ग, निम्नवर्ग से काम लेता है। निम्नवर्ग के लोग उच्चवर्ग की सेवा, चाकरी करके ही अपनी रोजी-रोटी चलाते हैं। बुधिया जब ब्याह कर आई थी तब उसका पति गुटाई, कोठी के ढोंर-डांगर चराता था। "बुधिया अनाज फटकने चुनने-बिनने पीसने कोठी पर जाती थी। रोज छँटा अनाज, बची रोटियाँ और सेरभर अनाज ले आई थी।"¹¹¹ ऐसी ही गरीबी में ननकू ने जन्म लिया था। इतना ही नहीं गाँव की सारी बहुए ठाकुर की गौ शाला में गोबर थापने जाया करती थी। मजदूरी में उन्हें दस-दस उपले मिलते हैं।

गोमती, विधवा माँ की लौती संतान थी। विधवा माँ आर्थिक मजबूरी के कारण लँगड़े ननकू से गोमती का ब्याह कर देती है। जब वह ब्याह कर ननकू के साथ उसके घर आती है। तभी उसका बुलावा कोठी से आ जाता है। बड़े मालिक की तबीयत अचानक खराब होने की वजह से ननकू को शहर जाना पड़ता है। रात गोमती को हवेली पर बुलवाया जाता है। यह कहकर की मालकिन गोमती को देखना चाहती हैं। लेकिन मालकिन ने नहीं बल्कि छोटे मालिक ने गोमती को बुलवाया था, वह गोमती का शोषण आठ दिनों तक करता है। गोमती पहली बार जीवन की सच्चाई का सामना कर रही थी। व्यक्ति की लाचारी, बेबसी और पीड़ा समझ रही थी। मन में पति के प्रति जो गुस्सा पनप रहा था वह अब दया में परिवर्तित हो गया था। वह समझ गयी थी कि वह एक नौकर की पत्नी है। जिसकी अलग से अपनी कोई औकात नहीं थी। उसे पहली बार औरत होना समझ में आया था, कि बड़े-बड़े धोखे, छल, विश्वास घात कैसे छुपाए जाते हैं। उसकी मायूसी इतनी बढ़ जाती है कि कभी जब अकेले बैठती है तो कई-कई ख्याल उसके मन में प्रकट होते रहते हैं "औरत का मन तो गहरा ताल है। जाने उसके भीतर कितने कीट पतंगे, मगर

मच्छ, सांप-बिच्छू, कंकट-पत्थर, कीचड़ और भी न जाने कितनों के डंक-विष को अपने भीतर छिपाए दबाए रहती है। उजागर नहीं होने देती। अपना बाँध अपना किनारा नहीं तोड़ती, अपनी हदे नहीं छोड़ती, वैसी ही शीत बनी रहती है। नहीं तो बाढ़-प्रलय नहीं आ जाएगा कोई ऊपर से देखा तो लगे, कितनी शांत ठहरी हुई है। कोई तूफान नहीं। औरत जब अपने पेट के भीतर आदमी का पाप पाल लेती है तो क्या उसके गहने की तरह भेद अपने भीतर नहीं छुपा सकती? औरत क्या यो ही टूटती है, झुलसती है? औरत चुप रहती है। आकाश रोज अपना रौद्र रूप दिखाता है। वर्षा, बर्फ, ताप पर धरती चुप रहती है।"¹¹² गोमती के सारे सपने बिखर कर रह जाते हैं।

ननकू जब शहर से लौटता है, तब माँ सुहाग सेज सजाती है, यह देख गोमती दुःखी हो जाती है। उसको देखकर सास गोमती को समझती है – "बहू, हम छोटी औकात के लोग हैं। सारी उम्र मलिक का जूठा ही खाने को मिले। जूठे से ही हमारी जिंदगानी चले हैं। बड़े लोगों की यों ही मेहरबानी नहीं मिले हैं, आहुति देनी पड़ती है। देवी को प्रसन्न करने बेटा बालि देते हैं, तब देवी प्रसन्न होती है। मन में कोई सोच न कर। अरे, ऊँचे पेड़ की छाया तो हम पर पड़े ही है।"¹¹³

गाँव में सरपंच का चुनाव होता है। इस बार यह सीट हरिजन-महिला के लिए आरक्षित है। इसलिए छोटे मालिक गोमती को खड़ा करते हैं। गोमती को सरपंच बनाकर वह खुद अधिकार का जमाते हैं। गोमती गाँव की शिक्षित लड़की कमला की मदद से लिखना-पढ़ना सलीके से रहना सब सीख जाती है। वह कमला के साथ गाँव में महिला सरपंच प्रशिक्षित शिविर में जाती है। वह जाकर धीरे-धीरे अपने अधिकारों की समझ आने लगती है। पहले-पहले तो वही होता है जो छोटे मालिक कहते हैं, लेकिन जब लाखन लुहार की पत्नी रयती की मृत्यु हो जाती है। और छोटे मालिक के आदमी लाखन को आकर धमकाते हैं कि – "सुन रे भडुए, तेरी जोरू के संग हमने ही बलात्कार किया, फिर मारकर पेड़ पर टाँग दिया था। ज्यादा चूँ-चपड करेगा, बेटा, तो तुझे भी भुस भरकर टाँगना होगा। समझा ! बड़ा अच्छा लगेगा तुझे ! यह बात गाँव में किसी से कहीं तो गाँव में दूसरे दिन नहीं दिखेगा।"¹¹⁴ छोटे मालिक लाखन की जमीन हथियाने के लिए उसकी

पत्नी को मरवा देते हैं। लाखन पत्नी की मृत्यु के बाद हताश निराश होकर गोमती से कहता है अगर रयती के हत्यारों को सजा नहीं दिला पाऊँगा तो आत्महत्या कर लूँगा। गोमती समझाती है कि तुम सभा करो जनता को इकट्ठा करो जनता में बहुत हिम्मत होती है। जनता से दुनिया डरती है। उनका न्याय ही सबसे बड़ा न्याय होता है। गोमती कहती है – "लाखन भैया, तुम सभा तो करो, इस बार तो हम जरूर आएँगे। हमारे जी में भी कल नहीं पड़ा रहा है। न्याय तो होना होता ही है, आज रयती मरी, कल कोई और मारेगी।"¹¹⁵ गोमती, पति और सास के समझाने मना करने के बावजूद वह लाखन की शोक सभा में जाती है वह – "पहली बार समाज का सामना करने जा रही थी। अपना आत्म-परीक्षण और बल-परीक्षण का समय था। आज जैसे वह दासता, गुलामी का दानपत्र फाड़ कर फेंक देना चाहती थी। सही स्वतंत्रता का अर्थ समझ पाई थी।"¹¹⁶

वह परंपरागत रूढ़ियों को तोड़कर, निडरतापूर्वक सामने आती है और छोटे चौधरी के अन्यायों का विरोध करती है – "ले, जल्दी से अँगूठा कौन देगा।" ननकू गोमती के पास आकर बोला। "जो अँगूठा कौन एकलव्य का अँगूठा है, जो नहीं लगाने से तुम काट लोगे ! यह अँगूठा गोमती का अँगूठा है!" गोमती गुस्से में बोली। "मालिक, लाखन की मेहरारू के संग जो-जो गुंडा मुँह काला किए हैं, उन्हें जेल होगी, न्याय होगा, तभी यह अँगूठा कागज पर लगेगा।" "ननकू !" छोटे मालिक दहाड़े – "अपनी बहू को समझाय दे, अपनी हद में रहे। लोगन की सिखाई-पट्टी में न आए। आत्महत्या को मामले को बलात्कार का मामला बना रही है।" "मालिक हम सब जानते हैं। कहिए तो भरी सभा में एक-एक आदमी के नाम पुकार दे!" गोमती निडर बनी शेर से मुकाबला करती रही। "नागिन की केंचुली उतरना हम खूब जानते हैं।" छोटे मालिक भी भड़क उठे। नागिन के पास केंचुली कहाँ है, मालिक ! केंचुली तो अपने गाँव में आते ही उतार ली थी। अब तो बस घाव-ही घाव है।"¹¹⁷

सर्वहित के लिए कार्य करना ना केवल शहरी शिक्षित स्त्रियों की जिम्मेदारी है, बल्कि जरूरत पड़ने पर गाँव की अनपढ़ व भोली भाली स्त्रियाँ भी सब कुछ कर सकती हैं यह लेखिका ने

गोमती के माध्यम से प्रस्तुत किया है। मेहरुन्निसा परवेज ने अपनी कहानियों में सार्वजनिक जीवन में नगरीय व ग्रामीण दोनों प्रकार की स्त्रियों की भूमिका दर्शाई है। किंतु इस प्रकार के प्रसंग अपेक्षाकृत कम ही हैं।

खेलावड़ी

यह कहानी भी निम्नवर्ग से संबंधित है। कहानी में बाँछड़ा जाति के रीति-रिवाज जमींदारी व्यवस्था तथा अवैध संतान की समस्या को उजागर किया है। लालमणि के माता-पिता उसे सुहागिन बनाकर विदा करना चाहते थे। इसलिए पिता अपने दोस्त के बेटे शंकर से उसका ब्याह तय करता है। लेकिन दोस्त ही दुश्मन बन जाता है। उसे अफीम की तस्करी के जुल्म में जेल भिजवा देता है। उसके बावजूद लालमणि लोग-लाज मर्यादा को तोड़कर वह शंकर के पास जाती है, किंतु शंकर अपने पिता के विरुद्ध जाकर उससे ब्याह करने को मना कर देता है। पिता को छुड़ाने के लिए पैसों की जरूरत होती है घर की आर्थिक तंगी, परेशानी तथा पति को जेल से छुड़वाने के लिए लाचार होकर उसकी माँ अपने भाई को पैसे के बदले लालमणि को सौंप देती है। मामा ने उसे अपने बाँछड़ों की वंश-परंपरा चलाने के लिए ही गोद लिया था। अब उसका कर्तव्य है कि वह मृत्यु तक मामा-मामी का भरण-पोषण करेगी। अब से उसे खेलाड़ी का जीवन व्यतीत करना होगा जिसमें ब्याह की अनुमति नहीं होती। एक बूढ़ी खेलावड़ी उसे आशीर्वाद के रूप में हाथ रखकर जोर से घोषणा की "आज से लालमणि पिता सनकूरा, माँ फूलमती, गोत्र भारतावस को खेलावड़ी का अधिकार दिया जाता है। आज से उसका रूप देवी का होगा तथा उसे खेलावड़ी लालमणि कहकर पुकारा जाएगा। देवी के रूप में वह अपने वंश तथा कुल की रक्षा करेगी।"¹¹⁸ वहा उपस्थित सभी लोग खुशियां मनाने लगे। बच्चे, जवान, सयाने सभी को पता चल गया कि खेलावड़ी का जन्म हो गया। परंतु "उसे अपने खेलावड़ी के जन्म पर प्रसन्नता नहीं हो रही थी। वह तो भत्तावड़ी थी कैसे खेलावड़ी बन गई? माँ ने तो उसे जन्म से ही 'भत्तावड़ी' कहा था। भत्तावड़ी-यानी पतिवाली। खेलावड़ी-यानी धंधे वाली।"¹¹⁹

एक वरिष्ठ खेलावड़ी उसे समझती हुई बोली – "कज्जा (ग्राहक) का सबकुछ देखना, उसका मुख मत देखना। कज्जा का मुख याद रखना खेलावड़ी का काम नहीं है। वह हमारा कोई नहीं, वह तो बस कब्जा है। आदमी की प्रीत बुरी होती है। खेलावली का प्रीत और रीत से कोई लेना-देना नहीं समझी।"¹²⁰

लेखिका बातचीत के दौरान बतायीं की यह आज भी बंद नहीं हुआ है बस्तर के अतिरिक्त दूसरे क्षेत्र की आदिवासी जातियों में यह प्रचलन अभी भी जारी है। "गुजरात के बनास कांठा जिले का वाडिया गाँव यौनकर्मियों का गाँव के तौर पर बदनाम है। गुजरात का कोठा के नाम से पहचाने जाने वाले इस गाँव ने पिछले 60 बरस में विकास के नाम पर सेक्स, शोषण एवं सरकार के दोहरे चरित्र के अलावा कुछ नहीं देखा है। ... गाँव की ज्यादातर औरतों के लिए रोजमर्रा की जिन्दगी का मतलब खाना, सोना और अपने ग्राहकों की खातिरदारी करना होता है। 14-14 साल की लड़कियों का गर्भवती होना यहाँ सामान्य माना जाता है।"¹²¹ रामशरण जोशी कुरीतियों पर प्रश्न करते हुए लिखते हैं, "क्या यह सोचने की जरूरत नहीं है? क्यों आदिवासी युवतियों को चलताऊ, रखैल, बेगार, यौनकर्म के रूप में रखा जाता है?"¹²² बिल्कुल झकझोरने वाला प्रश्न है। हम सभी को इस पर विचार कर सकारात्मक पहल करनी चाहिए और सरकार का ध्यानाकर्षण कर शीघ्र-अतिशीघ्र कुरीति को दूर करना चाहिए।

राजा ठाकुर उमेर सिंह निस्संतान ठकुराइन अपने भाई के बेटे को गोद लेना चाहती थी। लेकिन ठाकुर इसके लिए राजी नहीं थे, वे अपना बच्चा चाहते थे करोड़ों की संपत्ति का कोई वारिस नहीं था। इसलिए दोनों में हमेशा अनबन रहती थी। एक दिन मेले में ठाकुर ने लालमणि को देखा, उसी दिन से लालमणि उसकी आँखों में छा गई थी। लालमणि को ठाकुर की बागवाली के लिये कोठी में बुलाया जाने लगा। वह ठाकुर से गर्भवती हो जाती है इस खबर से ठाकुर की खुशी का ठिकाना नहीं होता। लेकिन इस बात को ठाकुर साहब अपने बिरादरी से छुपाते हैं। क्योंकि वह जानते हैं कि कि ठकुराइन को पता चला तो लालमणि की हत्या करवा

देगी। लालमणि ठाकुर के बच्चे की माँ बनती है बीमारी के कारण ठाकुर की मृत्यु हो जाती है। ठाकुर साहब के अंतिम क्रिया के लिए ठाकुराइन अपने भाई के बेटे को विधि पूर्वक गोद लेने की तैयारी करती है। अब उसी के सहारे ठाकुराइन जाइजात सँभालेंगी। उसी समय लालमणि ठाकुर की हवेली पहुँचकर करती है – "यह बच्चा ठाकुर साहब का ही पुत्र है। ठाकुर साहब निस्संतान नहीं थे।"¹²³ कोई भी उसकी बात सुननेवाला नहीं था, बड़े ठाकुर के ससुर आते ही दहाड़े – "बंदूक लाओ और दन से गोली उसकी छाती में उतार दो। जरा देखो तो उसकी हिम्मत जाने किसका पाप यहाँ ठाकुर घराने पर मढ़ने चली आई है ! निकाल बाहर करो हरामजादी को ! कृतिया की जात और सती-सावित्री बनकर आ गई है।"¹²⁴ इतना ही नहीं वहाँ के सभी लोगो द्वारा अपमानित होना पड़ता है।

ठाकुर का अपना बच्चा होते हुए भी गोद लिए बच्चे से अंतिम संस्कार करवाया जाता है। लालमणि अपने बच्चे को ठाकुर के यहाँ लेकर आती है उसके हाथों ठाकुर साहब का अंतिम संस्कार कराना चाहती है, लेकिन उसे वहाँ अपमान के सिवा कुछ नहीं मिलता। हमारे सामाजिक व्यवस्था ही वैसी है कि अवैध संतान द्वारा सामाजिक पहचान मान-सम्मान नहीं मिलती। चाहे वह फिर किसी भी वर्ग काहे। बिना ब्याह के समाज स्वीकार नहीं करता।

सूकी बयड़ी

इस कहानी में निम्नवर्ग का मार्मिक चित्रण है। निमड़ा अपनी दोनों बेटियों का ब्याह करना चाहता है लेकिन आर्थिक अभावों के कारण चिंता में रहता है। वह एक मामूली मजदूर है, उसके पास खेती, जमीन कुछ भी नहीं है कि जिसे गिरवी रखकर वह पैसे पा सके। बेटियों का ब्याह करना तो अत्यंत जरूरी है इसलिए वह अपने बेटे टेसूआ को दस हजार रुपयों के बदले में सेठ दाँगीलाल के पास बंधक मजदूर के तौर पर रखता है। निमड़ा सेठ से कहता है – "गरीब आदमी की तो संतान ही जायदाद है। यही म्हारे धन-संपत्ति सब हैं।"¹²⁵ निमड़ा टेसूआ को विवश होकर सेठ के पास गिरवी रखना है। जिससे उसकी माँ, बहने, निमड़ा दुःखी हो जाते हैं।

सेठ दाँगीलाल समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति है लेकिन वह डाका, चोरी और कत्ल करवाकर दौलतमंद बनता है। टेसूआ पर भी दाँगीलाल के आदमी अत्याचार करते हैं। गरीबी ही टेसूआ के परिवार को इतना मजबूर बना देती है। ना चाहते हुए भी बेटे को परिवार से दूर भेजना पड़ता है। गरीबी इंसान को इतना बेबस कर देती है कि एक पल भी खुशी से जी नहीं पाता खुशियाँ मनाने के लिए अर्थ का होना बेहद जरूरी है।

थोरा रूप से काली थी इसलिए उसके ब्याह में कठिनाई आती उसकी छोटी बहन होरा सुंदर है। उसको देखने आये लोग बहन होरा को पसंद कर लेते हैं। नीमड़ा गरीब होने के कारण बेटी को दहेज नहीं दे सकता। इसलिए थोरा के साथ छोटी बेटी होरा का भी ब्याह तय कर देता है। थोरा जब पहली बार ससुराल जाती है। तब ससुराल के लोग थोरा से जादा होरा की प्रशंसा करते हैं। थोरा को समझ आ जाता है कि उसका होरा के कारण ही हुआ है। पति उसके सामने बैठकर व्यंग करता हुआ करता है – "तेरी बर्झन तो राणी रुपमती है। मेरा भाई बड़ा भाग्यवान है।"¹²⁶ पति की इन बातों से वह विचलित हो जाती है कि बहन की सुंदरता पति की आँखों में समा गयी है। उसकी मां भी कहती थी। "काली कोयल-सी ही मेरी थोड़ा है। भगवान ने सुर दिया, चित्रकारी में बढ़िया हाथ दिया, बस रुप में कमी कर दी।"¹²⁷ थोरा को मन ही मन यह डर लगा रहता है कि कहीं उसका जीवन भी कोयल-सा ना हो जाये। वैसे ही एक दिन उसका पति दूसरी औरत भगौरिया हाट से एक गोरी लड़की घर ले आता है। सिर्फ काली होने के कारण उसका पति हमेशा उसे भला-बुरा कहता और काले रंग को लेकर ताने मारता था, उसे चोट पहुँचाता था।

ससुराल के सभी लोग दूसरी औरत के स्वागत में लग जाते हैं। थोरा ठगी सी बैठी रही, पति हमेशा उसे ताने देता था कि भगौरिया हाट से दूसरी औरत लाऊँगा। पर वह सच हो जाएगा? वह नहीं जानती थी। होरा उसे संभालती है। थोरा कहती है — "भगवान ने ही जब मेरे भाग्य को सुकी बयडी बना दी, किससे कहूँ? बयड़ी का भाग्य जाणे नी, ऊँची रहे हैं, पर पानी नी ठहरे,

फसल नी उगे। जाके खेत माँ बयड़ी होए वह किसान तो माथा फोड़े नी। उसकी जमीन तो बेकार चली जाए।"¹²⁸ पति दूसरी औरत के लिए, थोरा से कोठारी खाली करने को कहता है, लेकिन थोरा अपने पत्नी होने के अधिकार को छोड़ने के लिए तैयार नहीं है। अपने पति का विरोध करती है – "जा, चले जा, कोठरी में खाली नी करूँ। म्हारे बापू ने ब्याह कराया है। फेरे लेकर लाया है। ब्याह वाली हूँ। म्हारी इज्जत है।"¹²⁹

पति या पत्नी में असुंदरता के कारण कहीं-कहीं दाम्पत्य जीवन में तनाव देखने को मिलता है। यह अक्सर उन विवाहों में होता है जो माता-पिता या परिवार द्वारा तय किया जाता है। जिसमें लड़के-लड़की की सहमति लेना जरूरी नहीं समझा जाता। इसी कारण दाम्पत्य जीवन में अलगाव देखने को मिलता है।

नारी अधिकार के लिये संघर्ष कर रही है प्रगति के पथ पर आगे बढ़ रही है, किंतु आज भी गाँव में ऐसी भोली-भाली औरतें हैं जो अपने गाँव, घर, आँगन को ही अपना संसार मानती है। पुरुष उसे घर-परिवार का मोह दिखाकर उसे बंधक बनाकर रखता है। लेकिन कुछ स्त्रियाँ अब अपने अधिकार के प्रति सचेत हो रही हैं पर अभी भी उनका दायरा कम है जब अधिक पैमाने में जब वह जागरूक हो जायेगी, उस दिन बहुत बड़ा आंदोलन शुरू हो जाएगा।

निष्कर्ष

मेहरुन्सिसा परवेज ने अपने कथा साहित्य में निम्नवर्गीय नारी के जीवन की दुःखती रगों को न केवल पकड़ा है। अपितु उसे वाणी भी दी है। निम्नवर्ग के शोषित नारी की व्यथा कथा को सच्चाई के साथ लोगों के सामने रखते हुए स्त्री विमर्श को नई हवा, नई दिशा दी है। नारी विषय की चर्चा करते हुए लेखिका की दृष्टि इस बात पर रही है, कि नारी का शोषण करना बड़ा अपराध है, क्रूरता है। इसे तुरंत समाप्त करने की जरूरत है। सामाजिक चेतना के न्याय से ही संभव हो सकता है। विश्व परिदृश्य में नारी में आए बदलाव को ध्यान में रखते हुए भारतीय नारी को शोषण

के दलदल से निकालकर मुक्त गगन में विचरण करने के लिए उसे पुरुषों की तरह आजादी देने की जरूरत है। तभी नारी का विकास संभव है हमारे चारों ओर नारी की दयनीय अवस्था देखने को मिल जाती है। वास्तव में हकीकत तो यह है कि भारतीय स्त्री से अधिक दयनीय प्राणी संसार में कठिनाई से मिलेगा।

मेहरनिसा जी आदिवासियों के बीच पली बड़ी है। जिसके कारण आदिवासी जीवन का उनपर गहरा प्रभाव रहा है। आदिवासियों के जीवन के समस्याओं पर उन्होंने न केवल लिखा ही बल्कि उनकी गरीबी, शोषण, अंधविश्वास, अज्ञानता और अशिक्षा दूर करने के लिए कई प्रयास भी किये हैं।

स्त्री का शोषण तो उनके जन्म से ही शुरू हो जाता है किंतु ब्याह के पश्चात स्त्री जैसे शोषण का पात्र ही बन जाती है। उसे मात्र, पुत्री, पत्नी तथा बहन किसी भी रूप में अधिकार नहीं मिलता है। उच्चवर्गीय लोगों ने निम्नवर्ग को खिलौने की तरह ही इस्तेमाल किया है। उसकी विवशता तथा दुर्बलता का फायदा उठाकर अपनी इच्छाओं की पूर्ति की है। जमींदारों, पूँजीपतियों के द्वारा कहीं-कहीं नारी का उपयोग सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक हथकण्डे बाजी तक के लिए भी करते हैं। लेखिका ने अपने कथा-साहित्य में उच्चवर्ग की शोषण तथा अत्याचार, उच्च वर्ग के लोग निम्नवर्ग के लोगों का शोषण करने के लिए, किस निचता तक जा सकते हैं अपने कथा-साहित्य में निम्नवर्गीय नारी शोषण को दिखाया गया है, और वही संपन्न वर्ग अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए धनी वर्ग के द्वारा किए जाने वाले पषड्यंत्र, छल-कपट को प्रस्तुत किया है।

आजादी के इतने समय बाद भी निम्नवर्ग की स्थिति में अधिक सुधार नहीं आया। क्या इसी को आजादी कहते हैं? उनकी दुर्दशा को देखकर ऐसा लगता है। मानों वे इंसान नहीं जानवर है अब तो जैसे उनकी आदत पड़ गई है उस घुटन भरे वातावरण में रहने की, निम्नवर्ग की स्त्री का जीवन जहां इंसान और प्राणियों में विशेष फरक नहीं है, उसी निम्नवर्गीय स्त्री के जीवन को खुली आँखों से दिखाने का लेखिका ने प्रयास किया है।

संदर्भ

1. मेहरुनिशा परवेज - उसका घर - नेशनल पब्लिकेशन हाउस 23, प्रकाशन दरियागंज दिल्ली प्रथम सं. 1972 - पृ. 55-56
2. वही - पृ. 56
3. वही - पृ. 57
4. वही - पृ. 102
5. वही - पृ. 10
6. वही - पृ. 11
7. वही - पृ. 84
8. वही - पृ. 84-85
9. वही - पृ. 83
10. डॉ. शशी जेकब - महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में वैचारिक -जवाहर पुस्तकालय, 1989 - पृ. 206
11. मेहरुनिशा परवेज - कोरजा - वाणी प्रकाशन दरियागंज नई दिल्ली सं. 2000 - पृ. 206
12. वही - पृ. 207
13. वही - पृ. 99
14. वही - पृ. 97
15. डॉ. नीहार गीते - स्वतंत्रोत्तर महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में यथार्थ के विभिन्न रूप – पंचशील प्रकाशन, जयपुर, सं. 1996 - पृ. 174
16. मेहरुनिशा परवेज - कोरजा - वाणी प्रकाशन दरियागंज नई दिल्ली, सं. 2000 - पृ. 39
17. वही - पृ. 101
18. वही - पृ. 107

19. वही - पृ. 104
20. रामशरण जोशी - यादों का लाल गलियारा दंतेवाड़ा – राजकमल प्रकाशन, प्रकाशित वर्ष- 2017 - पृ. 80
21. मेहरुनिशा परवेज - कोरजा - वाणी प्रकाशन दरियागंज नई दिल्ली, सं. 2000 - पृ. 106-107
22. वही - पृ. 107
23. वही - पृ. 107
24. वही - पृ. 108
25. विद्या सिंहा - आधुनिक परिदृश्य : आँचलिकता और हिन्दी उपन्यास - वाणी प्रकाशन दरियागंज नई दिल्ली, प्रथम सं. 2001 पृ. 91
26. डॉ. उत्तम भाई पटेल - आँचलिक उपन्यासों में ग्राम्य जीवन – क्वालिटी बुक्स पब्लिशर्स कानपुर प्रथम सं. 1999 - पृ. 42
27. मेहरुनिशा परवेज - अकेला पलाश - वाणी प्रकाशन दरियागंज नई दिल्ली, प्रथम सं. 2002 - पृ. 55
28. वही - पृ. 55
29. वही - पृ. 84
30. वही - पृ. 49
31. वही - पृ. 162
32. मेहरुनिशा परवेज - समरांगण - वाणी प्रकाशन दरियागंज नई दिल्ली, प्रथम सं. 2002 - पृ. 97-98
33. वही - पृ. 103
34. वही - पृ. 292

35. वही - पृ. 294
36. वही - पृ. 346
37. वही - पृ. 13
38. वही - पृ. 26
39. वही - पृ. 93-94
40. मेहरुनिशा परवेज - पासंग - वाणी प्रकाशन दरियागंज नई दिल्ली, प्रथम सं. 2004 - पृ. 9
41. वही - पृ. 142
42. वही - पृ. 139
43. वही - पृ. 143
44. वही - पृ. 31
45. वही - पृ. 32
46. वही - पृ. 153
47. मेहरुनिशा परवेज – त्योहार (संग्रह.- आदम और हव्वा) - नेशनल पब्लिकेशन हाउस 23, प्रकाशन दरियागंज दिल्ली सं. 1972 - पृ. 5
48. वही - पृ. 3
49. डॉ.कीर्ति केसर - स्वतंत्र्योत्तर हिन्दी कहनी का समाज सापेक्ष अध्ययन – नचिकेता प्रकाशन, पहाड़गंज, नई दिल्ली सं. 1987 - पृ. 160
50. मेहरुनिशा परवेज - सीढ़ियों का ठेका (संग्रह.- आदम और हव्वा) - नेशनल पब्लिकेशन हाउस 23, प्रकाशन दरियागंज दिल्ली सं. 1972 - पृ. 19
51. वही - पृ. 23

52. डॉ.कीर्ति केसर - स्वतंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी का समाज सापेक्ष अध्ययन - नचिकेता प्रकाशन, पहाड़गंज, नई दिल्ली सं. 1987 - पृ. 160
53. मेहरुनिशा परवेज - शनाख्त (संग्रह.- आदम और हव्वा) - नेशनल पब्लिकेशन हाउस 23, प्रकाशन दरियागंज दिल्ली सं. 1972 - पृ. 28
54. वही - पृ. 28
55. वही - पृ. 31
56. वही - पृ. 33
57. डॉ.कीर्ति केसर - स्वतंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी का समाज सापेक्ष अध्ययन - नचिकेता प्रकाशन, पहाड़गंज, नई दिल्ली सं. 1987 - पृ. 221
58. मेहरुनिशा परवेज - नया घर (संग्रह: टहनियो पर धूप) -वाणी प्रकाशन कमला नगर, प्रथम सं. 1977 - पृ. 28
59. वही - पृ. 31
60. वही - पृ. 27
61. वही - पृ. 27
62. वही - पृ. 37
63. मेहरुनिशा परवेज - आतंक भरा सुख (संग्रह: टहनियो पर धूप) -वाणी प्रकाशन कमला नगर, प्रथम सं. 1977 - पृ. 79
64. डॉ. विनय - समकालीन कहानी : समांतर कहानी -दि. मकमिलन कम्पनी आफ इंडिया लिमिटेड, नई दिल्ली- सं. 1970 - पृ. 81
65. मेहरुनिशा परवेज - पितृशोक (संग्रह: टहनियो पर धूप) -वाणी प्रकाशन कमला नगर, प्रथम सं. 1977 - पृ. 51

66. मेहरुन्निसा परवेज – टोना (संग्रह.- गलत पुरुष) - नेशनल पब्लिकेशन हाउस 23, प्रकाशन दरियागंज दिल्ली सं. 1978 - पृ. 3
67. वही - पृ. 8
68. वही - पृ. 12
69. मोहन नलावड़े - मेहरुन्निसा परवेज का कथा साहित्य, आदिवासी एवं मुस्लिम स्त्री - चंद्रलोक प्रकाशन, कांपुर प्रथम सं. 2008 पृ. 53
70. मेहरुन्निसा परवेज - दूसरी अर्थी (संग्रह.- गलत पुरुष) - नेशनल पब्लिकेशन हाउस 23, प्रकाशन दरियागंज दिल्ली सं. 1978 - पृ. 16
71. मेहरुन्निसा परवेज - पांचवीं कब्र (संग्रह.- गलत पुरुष) - नेशनल पब्लिकेशन हाउस 23, प्रकाशन दरियागंज दिल्ली सं. 1978 - पृ. 20
72. वही - पृ. 20
73. मोहन नलावड़े - मेहरुन्निसा परवेज का कथा साहित्य, आदिवासी एवं मुस्लिम स्त्री – चंद्रलोक प्रकाशन, कांपुर प्रथम सं. 2008 - पृ. 54
74. मेहरुन्निसा परवेज - बड़े लोग (संग्रह- लाल गुलाब) - प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली सं. 2011 - पृ. 59
75. वही - पृ.59
76. मेहरुन्निसा परवेज - पसेरी भर जवानी (संग्रह.- गलत पुरुष) - नेशनल पब्लिकेशन हाउस 23, प्रकाशन दरियागंज दिल्ली सं. 1978 - पृ. 89
77. वही - पृ. 86
78. वही - पृ. 87
79. वही - पृ. 91

80. मेहरुन्निसा परवेज - जंगली हिरनी (संग्रह.- गलत पुरुष) - नेशनल पब्लिकेशन हाउस 23, प्रकाशन दरियागंज दिल्ली सं. 1978 - पृ. 96
81. वही - पृ. 96
82. वही - पृ. 98
83. वही - पृ. 98
84. वही - पृ. 99
85. मेहरुन्निसा परवेज - कानीबाट (संग्रह- फाल्गुनी) - पराग प्रकाशन, दिल्ली, सं. 1978 - पृ. 68
86. वही - पृ. 69
87. वही - पृ. 83
88. मेहरुन्निसा परवेज - गुरुमन्त्र (संग्रह -अंतिम चढाई) - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम सं. 1982 - पृ. 52
89. वही - पृ. 53
90. वही - पृ. 53
91. मेहरुन्निसा परवेज - अपनी जमीन (संग्रह -अंतिम चढाई) - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम सं. 1982 - पृ. 57
92. वही - पृ. 57
93. वही - पृ. 58
94. वही - पृ. 58
95. वही - पृ. 59
96. मेहरुन्निसा परवेज - पत्थरवाली गली (संग्रह -अंतिम चढाई) - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम सं. 1982 - पृ. 70-71

97. वही - पृ. 71
98. डॉ. सरिता कुमार - महिला कथाकारों के कथा साहित्य में प्रेम का स्वरूप - राधाकृष्ण प्रकाशन अंसारी रोड दरियागंज, दिल्ली – 1983 - पृ. 81
99. मेहरुन्निसा परवेज - ओढ़ना (संग्रह- सोने का बेसर) -सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, सं 1991 - पृ. 87
100. वही - पृ. 10
101. वही - पृ. 90
102. वही - पृ. 92
103. मेहरुन्निसा परवेज - जूगनू (संग्रह- अयोध्या से वापसी) – पंचशील प्रकाशन, फिल्म कालोनी, जयपुर, प्रथम सं. 1991 - पृ. 153
104. मेहरुन्निसा परवेज - देहरी के खातिर (संग्रह- अयोध्या से वापसी) – पंचशील प्रकाशन, फिल्म कालोनी, जयपुर, प्रथम सं. 1991 - पृ. 22
105. वही - पृ. 31
106. वही - पृ. 27
107. वही - पृ. 34
108. वही - पृ. 41
109. मेहरुन्निसा परवेज - धूरे का बिरवा (संग्रह- अम्मा) – ज्ञान गंगा प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम सं 1997 - पृ. 56
110. वही - पृ. 59
111. मेहरुन्निसा परवेज - जगार (समर- ग्रंथ अकादमी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2018 - पृ. 28
112. वही - पृ. 26

113. वही - पृ. 26
114. वही - पृ. 40
115. वही - पृ. 43
116. वही - पृ. 56
117. वही - पृ. 47
118. मेहरुन्निसा परवेज - खेलावड़ी (समर- ग्रंथ अकादमी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2018-
पृ. 93
119. वही - पृ. 94
120. वही - पृ. 94
121. मोहन नलावड़े - मेहरुन्निसा परवेज का कथा साहित्य, आदिवासी एवं मुस्लिम स्त्री -
चंद्रलोक प्रकाशन, कांपुर प्रथम सं. 2008 - पृ.174
122. रामशरण जोशी - यादों का लाल गलियारा दंतेवाड़ा - राजकमल प्रकाशन, प्रकाशित वर्ष-
2017 - पृ. 80
123. मेहरुन्निसा परवेज - खेलावड़ी (समर- ग्रंथ अकादमी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2018-
पृ. 80
124. वही - पृ. 84
125. मेहरुन्निसा परवेज - सूकी बयडी (समर- ग्रंथ अकादमी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2018
- पृ. 120
126. वही - पृ. 136
127. वही - पृ. 137
128. वही - पृ. 143
129. वही - पृ. 144